मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
होली पर्व पर साबर मंत्र विशेषांक
मार्च १९९३
मूल्य १५/-

हिमालय का सिद्ध योगी
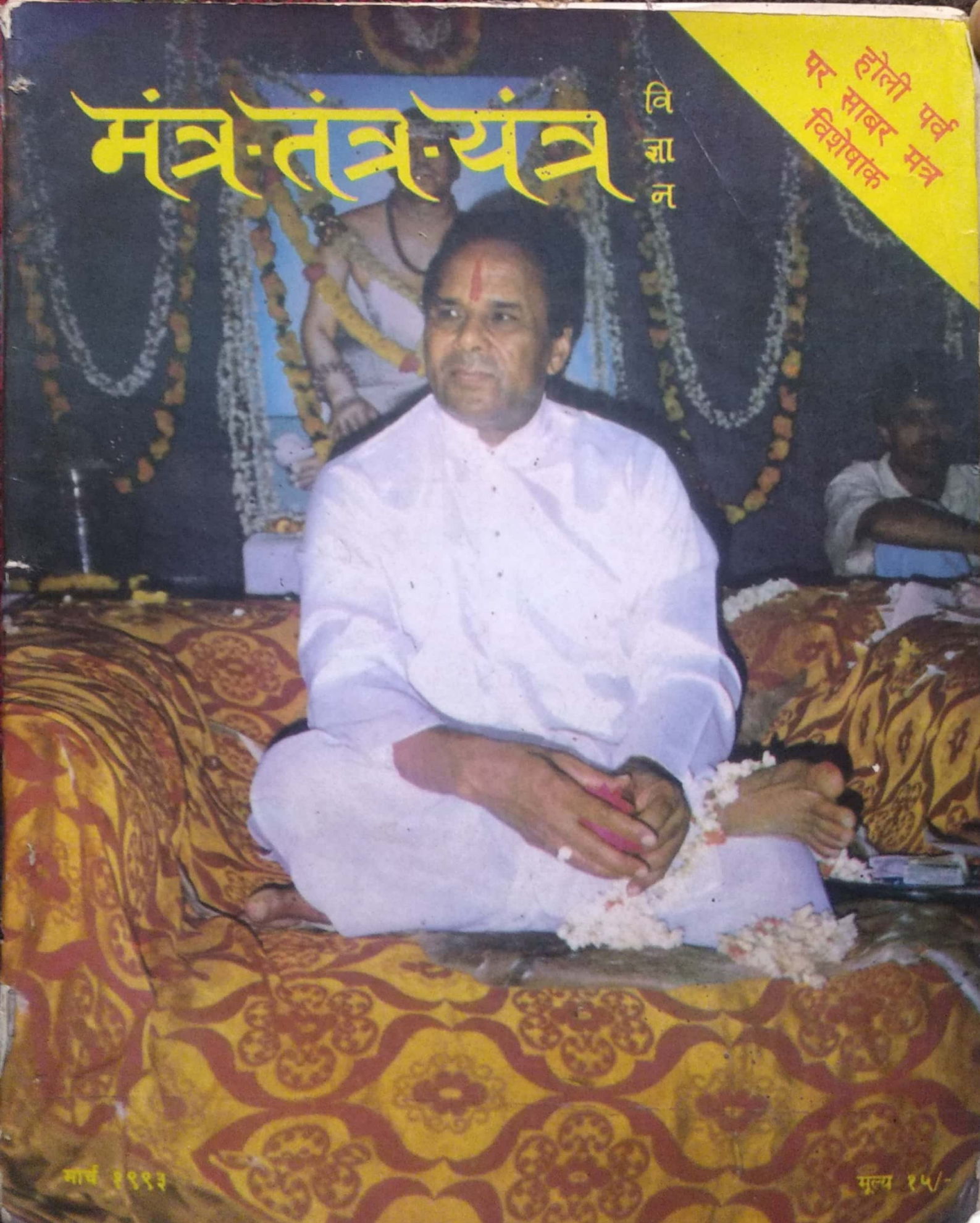
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

- यह मात्र एक पुस्तक नहीं है, अपितु सम्पूर्ण जीवन की धरोहर है।
- यह मात्र एक पुस्तक ही नहीं है अपितु आपके जीवन की धड़कनें है।
- यह मात्र एक पुस्तक ही नहीं है, अपितु जीवन-रस का स्रोत एवं आनंद का उफनता हुआ सागर है।
- यह मात्र एक पुस्तक ही नहीं है अपितु इसमें छोटे-छोटे विषयों पर भावानुभूतियां हैं जो सम्पूर्ण तन-मन एवं प्राणों को झंकृत करने में सहायक है।
- यह मात्र एक पुस्तक ही नहीं है अपितु इसकी प्रत्येक पंक्ति में पूज्य गुरुदेव के हृदय का स्पन्दन है, झंकार है, जीवन रस का आनंद है।

आपके जीवन को पूर्णता देने
एवं
साधना पथ पर अग्रसर करने में
यह ग्रंथ आपके लिए मार्गदर्शक की तरह है

हिमालय का सिद्ध योगी

पृष्ठ--१०४
मूल्य ३५/- रु.

सम्पर्क :
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर-३४२००१ (राज.)
टेलीफोन-०२९१-३२२०९

एजेंट बन्धु सम्पर्क करें।

अजय कुमार उत्तम सदस्यता क्रमांक 4396
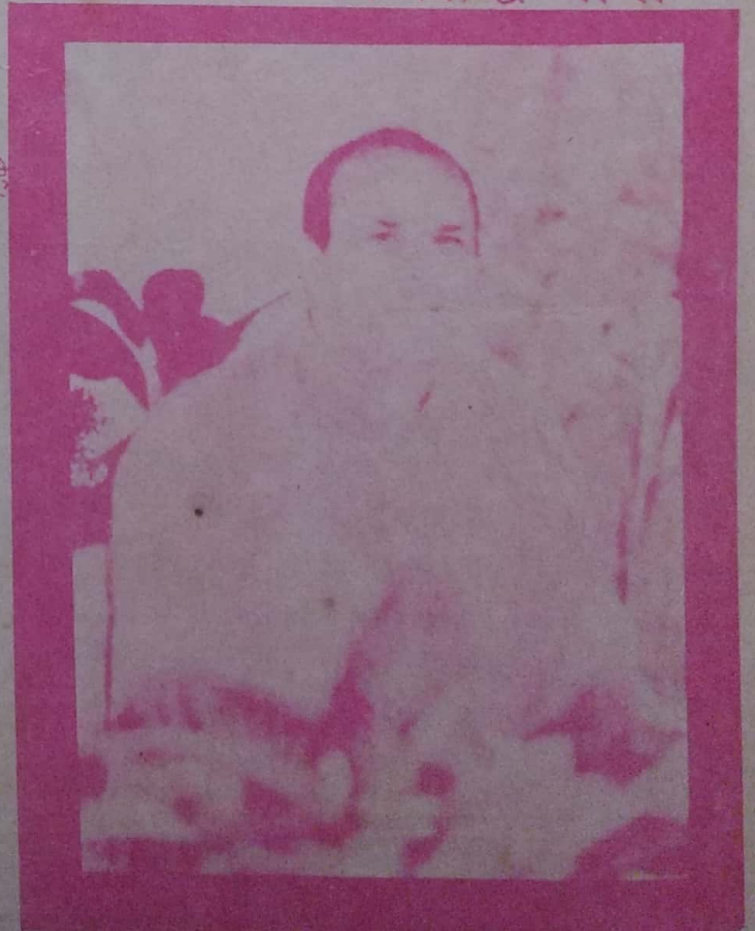
आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

इल इल चिलि चिलि फिल फिल।
दी, इलाई बिलीन बिलाकी।।

हे प्रभु! हम जीवन में साधनाओं के माध्यम से सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लें और जीवन को पूर्ण सुखी सफल एवं सम्पन्न बनाने में सफल हों।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है इस मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गलत समझे। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाये तो उसे संयोग समझे। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अत: उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका से मंगवायें और न सामग्री कें मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी। तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक सामाजिक एवं कॉनूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित सामग्री के संबंध में कभी भी किसी भी प्रकार की आलोचना या आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, संन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं।

आप भी चमत्कारिक पुरुष बन सकते हैं

और ऐसा होना ही चाहिए, यदि आपने जन्म लिया है तो कुछ ऐसा होना ही चाहिए कि पूरा भारतवर्ष आपको पहिचाने, और यह तभी संभव हो सकता है....

साबर वशीकरण मंत्र

जो गोली की तरह अपना असर दिखाते हैं

और गोली का निशाना तो फिर भी चूक सकता है, पर साबर मंत्रों का वार तो चूक ही नहीं सकता, ऐसा हो ही नहीं सकता, कि साबर प्रयोग करें, और कार्य सिद्ध न हो....आप स्वयं देख लीजिए न!

जैन साहित्य में साबर प्रयोग

योगियों, यतियों और साधकों ने साबर मंत्रों की उपयोगिता समझी है पर इससे भी बढ़कर जैन साधुओं ने भी इन मंत्रों का उपयोग किया है और इनके प्रभाव को देखकर दंग रह गये हैं, इन मंत्रों को आप देखना चाहेंगे न!

शाहों के शाह : साबर शाह

एक ऐसा व्यक्तित्व, जो अद्भुत साबर मंत्रों का सिद्धहस्त आचार्य। साबर मंत्रों के माध्यम से असंभव से असंभव कार्य चुटकियों में करके दिखाने वाला

उसका व्यक्तित्व और उसके कार्य इन पन्नों पर...

दो आत्माओं का मिलन

साबर मंत्रों के माध्यम से

सुखी और सफल गृहस्थी ही जीवन का आधार है, और यदि गृहस्थी के बसने में ही अड़चनें आ रही हों तो...

तो फिर यह लेख आपके लिये ही है....

वशीकरण

तो होता ही है साबर मंत्रों के माध्यम से

ऐसा हो ही नहीं सकता, कि साबर मंत्रों को प्रयोग करें और व्यक्ति वश में न हो... व्यक्ति तो क्या पत्थर भी इन मंत्रों के प्रभाव से पीछे बंधा-बंधा घूमता है।

बनजारिन की अनोखी सिद्धियां

एक ऐसी बनजारिन, जो रूप-सौन्दर्य में तो अनिन्द्य थी ही, साधनाओं में भी अद्वितीय, ऐसे-ऐसे मंत्र और उनके प्रभाव, कि दांतों तले उंगली दबाने को विवश होना पड़े...

सौन्दर्य प्राप्ति के प्रयोग
साबर मंत्रों के माध्यम से

चाहे वह लम्बी छरहरी काया का मामला हो और चाहे चेहरे के दाग मिटाने की क्रिया हो... साबर मंत्र तो शत् प्रतिशत् सहायक है ही... इन सबके लिये...
विश्वास नहीं होता, तो पढ़ लीजिये यह लेख...

भूतों की दुनियां

जिसे नौकरों की तरह वश में किया जा सकता है

और फिर ये नौकर, आम आदमियों से ज्यादा विश्वास पात्र होते हैं ज्यादा कर्तव्यशील होते हैं, ज्यादा सहायक होते हैं... आवश्यकता है इन्हें वश में करने की

और इन्हें वश में करने की विधि है, इसी पत्रिका के अन्दर के पन्नों पर...

इसके अलावा भी

- ✡ व्यापार लाभ प्रयोग
- ✡ रोग नाशक प्रयोग
- ✡ मनोकामना सिद्धि प्रयोग
- ✡ वशीकरण प्रयोग
- ✡ दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रयोग
- ✡ मनोवांछित पति प्राप्ति प्रयोग
- ✡ पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग
- ✡ विजय प्रयोग
- ✡ पुत्र प्रदायक प्रयोग
- ✡ अदृश्य हो जाने का हमजाद प्रयोग
- ✡ व्यवसाय वर्द्धक प्रयोग
- ✡ काले रंग को गोरे रंग में बदलने का प्रयोग
- ✡ कद बढ़ाने का प्रयोग
- ✡ गड़ा हुआ धन प्राप्त करने का प्रयोग
- ✡ साधनाओं में सिद्धियां प्राप्त करने का प्रयोग
- ✡ नवरात्रि-महोत्सव
- ✡ निखिलेश्वरानंद साधना शिविर

सम्पादकीय

'तंत्र विशेषांक' और 'शिव विशेषांक' के बाद आपके हाथों में यह साबर विशेषांक देते हुए अत्यंत प्रसन्नता अनुभव हो रही है, हमने मई ८६ में पत्रिका का साबर विशेषांक प्रस्तुत किया था, उसको भारतवर्ष के अधिकांश पाठकों और साधकों ने सराहा था और तभी से सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं अपितु भारत के बाहर के देशों से भी मांग आ रही थी, कि एक बार पुन: साबर विशेषांक प्रकाशित किया जाय, उस समय भी कई साधकों को वह साबर विशेषांक प्राप्त नहीं हो सका था, अत: होली के अवसर पर मई ८६ के विशेषांक की सामग्री और कुछ नई सामग्री संजोकर यह विशेषांक आपके हाथों में प्रस्तुत है।

गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ प्रभृति योगियों ने साबर मंत्रों को गति दी, सराहना की और स्वीकार किया कि इन मंत्रों में भी असीम सिद्धि और कार्य सम्पन्न करने में पूर्ण क्षमता है, तब से लगाकर आज तक कई साधकों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है, इसीलिये इस अंक के माध्यम से यह साबर मंत्रों को साधकों-पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है, हम इन मंत्रों की सिद्धि-असिद्धि के बारे में कोई दावे नहीं करते, हमने तो विभिन्न स्रोतों साधकों योगियों से प्राप्त साबर मंत्रों को इन पन्नों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, साधक पाठक अपनी योग्यता विश्वास और विवेक के आधार पर ही इन मंत्रों का प्रयोग-उपयोग करें, सफलता-असफलता स्वयं उनके विवेक एवं श्रद्धा पर संभव है।

फिर भी ये मंत्र सरल भाषा में हैं, साधारण पढ़ा लिखा, संस्कृत न जानने वाला व्यक्ति भी इन मंत्रों और साधनाओं का उपयोग बखूबी कर सकता है, इसमें ज्यादा विधि-विधान आदि की जरूरत नहीं, अत: आज के युग को देखते हुए ये मंत्र एवं साधनाएं ज्यादा उपयोगी हो सकती हैं।

और हमें गर्व है कि आज भारतीय प्राच्य साहित्य एवं साधनाओं को एक स्थान पर एकत्र कर पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करने में सफल हो सके हैं, और इससे भी ज्यादा गर्व इस बात का है कि पूरे भारतवर्ष के पाठकों ने इन अंकों को सराहा है, स्वीकार किया है, उपयोग किया है, और इसे जन-जन के हाथों में देने का सफल प्रयत्न किया है।

इससे भी ज्यादा गर्व हमें पत्रिका के उन सभी सदस्यों पर है, जिन्होंने इस कार्य को हाथों हाथ लिया, इसे अपनी ही पत्रिका समझी, उन्होंने भारत की प्राचीन थाती को जन-जन के हाथों में पहुंचाने का दृढ़ संकल्प लिया और एक प्रकार से इसे आन्दोलन का रूप दिया, भूख-प्यास नौकरी व्यापार आदि की बिना चिन्ता किये उन्होंने जो कार्य किया है वह सराहनीय है, प्रत्येक पत्रिका सदस्य की यही इच्छा रही कि वह जोधपुर केन्द्रीय कार्यालय से ज्यादा से ज्यादा पत्रिकाएं मंगाएं और छोटी से छोटी स्टाल पर भी इसको रखें, जिससे आम पाठक इससे जुड़ सकें, समझ सकें और लाभ उठा सकें, और इस कार्य में इन पाठकों को सफलता मिली भी।

पर यह तो रास्ते की शुरुआत है, अभी तो मंजिल काफी दूर है, और रास्ता लम्बा है साथ ही साथ हमारे पास समय कम है कम समय में काफी दूरी तय करनी है, और यह तभी हो सकता है जब हम ज्यादा से ज्यादा पत्रिका विभिन्न बुक स्टालों पर पहुंचावें, अपने स्थानीय पत्रों में इससे संबंधित विज्ञापन प्रकाशित करें, पेम्पलेट

छपवाकर वितरित करें, कहीं पर भी किसी से भी मिलते समय इस पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें जानकारी दें, यदि स्थानीय मेला लगता हो, तो हम दो सौ पांच सौ प्रतियां मंगवाकर स्टाल लगवावें छोटा सा ठेला लेकर मेले में खड़े हो जांय, दो चार सदस्य मिलकर दुकान-दुकान जांय, उन्हें पत्रिका दें, उनसे पत्रिका पढ़ने का आग्रह करें कहीं यात्रा पर भी जांय, तो आठ दस प्रतियां साथ में रखें और उनसे पत्रिका के बारे में आग्रह करें....और इस प्रकार 'जन-जागरण अभियान' चलाएं और यदि आप ऐसा करते हैं तो निश्चय ही आप उस पुण्य के भागी हो सकेंगे, जो अपने आप में अन्यतम है, पूर्वजों का आशीर्वाद है, और ऊंचाई तक पहुंचने का आधार है।

और फिर पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा, उनका आशीर्वाद, उनका संबल सदैव आपके साथ है, उनकी सूक्ष्म दृष्टि बराबर आपके कार्यों पर लगी हुई है, आपका छोटे से छोटा योगदान भी उनसे छिपा हुआ नहीं है...उनके आशीर्वाद की अमृतवर्षा सदैव आप पर है, और आपके साथ ही साथ हम सबको पूरा-पूरा भरोसा है, कि हम निश्चय ही अपने लक्ष्य में पूर्ण सफलता अर्जित कर सकेंगे।

और फिर असंभव तो कुछ भी नहीं है, पूज्य गुरुदेव स्वयं कहते हैं, कि ''असंभव'' शब्द तुम्हारे होठों पर शोभा नहीं देता, यह तो कायरों का शब्द है नपुंसकों का शब्द है बुजदिलों का शब्द है, और हम इस श्रेणी में अपनी गणना नहीं करवाना चाहते, और यदि ऐसा नहीं चाहते तो फिर आप सब लोगों को उठ खड़े होना है, कमर कस लेनी है, तूफान की गति से आगे बढ़ना है और इसे आन्दोलन का रूप देते हुए पत्रिका की प्रसार संख्या इक्कीस अप्रैल तक एक लाख पहुंचा देनी है...और तुम यह कर सकते हो, तुम में सामर्थ्य है, थोड़ी और संकल्प शक्ति की आवश्यकता है फिर कोई बाधा कोई अड़चन कोई रुकावट तुम्हारा रास्ता नहीं रोक सकती। चाहिए तो यह, कि फिलहाल केवल इक्कीस ''जीवनदानी'' आगे आवें और मात्र ''पाच हजार रुपये'' प्रत्येक जीवनदानी धरोहर धनराशि के रूप में पत्रिका कार्यालय में जमा करवा दें और इतने रुपयों की पत्रिका प्राप्त कर लें, उसकी बिक्री से धनराशि प्राप्त होगी ही, उससे फिर अगले महीने की पत्रिका प्राप्त कर लें।

और गुरुदेव देख रहे हैं कि वे कौन से सौभाग्यशाली शिष्य है जो जीवनदानी बनने को कृत संकल्प है और वे कौन से अहोभागी है जो पहले इक्कीस जीवनदानियों में अपना नाम लिखाने के लिये कृत संकल्प है अगले ''मंत्रशक्ति विशेषांक'' में ही इन जीवनदानियों के नाम प्रकाशित हो रहे हैं, और इस सूची में आपका नाम होना ही चाहिए।

२१ अप्रैल को हमारे पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस है और इस अवसर पर हम प्रकाशित कर रहे हैं ''मंत्रशक्ति विशेषांक'' अपने आप में अद्वितीय विशेषांक, गौरवशाली विशेषांक, पत्रिका के इतिहास में 'माइल स्टोन' की तरह का दुर्लभ विशेषांक....

आपका अपना ही

नन्दकिशोर श्रीमाली

प्र. सम्पादक

पाठकों के पत्र

मासिक पत्रिका "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' अपने आप में एक अलग प्रकार की पत्रिका लगती है। आप इस पत्रिका के माध्यम से भारत की इस प्राचीन विद्या को पुनर्जीवित कर रहे हैं, जिसके लिये आप सभी बधाई के पात्र हैं।

यदि आप हस्त रेखा तथा ज्योतिष पर भी वैसी ही मासिक पत्रिका प्रकाशित करें तो बड़ा उपकार होगा।

-सुनीतकुमार मिश्र, बिलासपुर(म.प्र.)

लुधियाना शहर के सभी गुरुभाइयों ने सिद्धाश्रम साधक परिवार की स्थापना कर दिनांक १०.१.९३ को पाहवा धर्मशाला में सभा का आयोजन किया, और प्रति रविवार एवं हर महीने की २१ तारीख को एक जगह एकत्रित होकर मंत्र जप, पूजन, आरती, इत्यादि करने का निश्चय किया गया है। अभी हमारी यह शाखा अपनी प्रारंभिक स्थिति में है, आने वाले समय में यह विशाल रूप धारण करेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। इस हेतु पूज्य गुरुदेव जी का आशीर्वाद हमें बराबर प्राप्त होगा।

-कमल कृष्ण राजपुरोहित, लुधियाना

मैं पहली बार आपकी पत्रिका के संपर्क में आया हूं, और बहुत ही प्रभावित हुआ हूं, क्या कैसेट द्वारा मंत्र, पूजा सुनकर विधिवत् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है? क्या साधना हेतु शिष्य के लिये गुरु दीक्षा लेना आवश्यक है?

-प्रद्योत कुमार राय, के.जी. आश्रम धनबाद (बिहार)

'मैं कई वर्षों से परेशानियों से घिरा हूं, इलाहाबाद, ऋषिकेश, हरिद्वार आश्रमों में गया, पुस्तकों का अध्ययन किया, परंतु कहीं भी परेशानी दूर नहीं हुई जब आपकी "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' पत्रिका पढ़ने को उपलब्ध हुई तो मुझे अपने भीतर पूर्ण विश्वास हुआ कि मेरी समस्त परेशानियां दूर हो सकती हैं। पत्रिका ने मुझे नया जीवन दर्शन दिया।

-वीरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रायबरेली (उ.प्र.)

जब से आपकी पत्रिका पढ़ी है तब से लगता है कि मैं जिन्दा रह सकूंगा, अन्यथा मेरे जीवन में केवल अंधेरा ही अंधेरा था। मेरी "दिव्यांगना स्वर्ण प्रभा यक्षिणी साधना'' करने की इच्छा है। इसका विधान क्या है?

-राजकुमार शर्मा, चक्रधरपुर (बिहार)

आपकी पत्रिका पढ़ने को मिली जो तन, मन, को स्पर्श करती हुई गंगा की तरह बहने लगी है, और मैं अत्यंत प्रसन्न हो गया हूं।

ये तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।।

-भागवतप्रसाद निषाद, बिलासपुर (म.प्र.)

अभी हाल में ही आपकी पत्रिका "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' देखने को मिली, लेकिन भाषा संबंधी समस्या के कारण मैं इसे पूरी तरह नहीं समझ सका, क्योंकि मेरी मातृभाषा "तेलगू'' है, क्या आप इसे तेलगू भाषा में प्रकाशित कर रहे हैं? तो हम अहिंदीभाषियों पर बड़ा उपकार होगा।

-वाई, पापाराव, विजयनगरम् (आंध्रप्रदेश)

दिसम्बर माह में प्रकाशित दीक्षा संबंधी जानकारी के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। इस दीक्षा क्रम में मैं विशिष्ट दीक्षा पूज्य गुरुदेव से प्राप्त करना चाहता हूं, क्योंकि दीक्षा द्वारा ही मेरे जीवन में परिवर्तन हो सकता है।

-नारायणनाथ योगी, पापगढ़, बिलासपुर (म.प्र.)

जनवरी पत्रिका का अध्ययन कर मुझे अपने जीवन के अंधकार में एक प्रकाश मिला है, मुझे विश्वास है कि ईमानदारी से चलकर भी व्यक्ति अपने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

-उमराव लाल शर्मा, हिण्डौन सिटी, स. माधौपुर

संपादक जी! मै राशिफल की कई पुस्तकों का अध्ययन करता हूं लेकिन एक परेशानी में पड़ गया हूं, अलग-अलग किताबों में एक ही राशि के लिये अलग-अलग नग (स्टोन) का वर्णन मिलता है, क्या इस संबंध में आप पाठकों की समस्या का समाधान करते हुए प्रत्येक राशिवाले व्यक्ति के लिये आवश्यक नग इत्यादि का वर्णन देंगे?

-राजेन्द्र नौटियाल, ग्वालियर (म.प्र.)

पूरे हिन्दी साहित्य में धार्मिक पत्रिकाएं तो भले ही छपती हों, आध्यात्मिक पत्रिका मार्केट में कोई थी ही नहीं, इस पत्रिका ने एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है, और फिर जब पत्रिका पर नारायण दत्त श्रीमाली जैसे व्यक्तित्व का संरक्षण है तो फिर इसकी प्रामाणिकता में संदेह ही क्या?

-हरीन्द्र वसु, कलकत्ता, भू. एम.पी.

मैंने पत्रिका के दो अंक देखे हैं साधना तो सबके कल्याण के लिये होती है चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, या रंग का हो, और यह पत्रिका इस दृष्टि से पूर्ण समन्वय कारक है

-सुरेन्द्र मोहन सिंह, पटना, भू.पू. मंत्री

मनुष्य अपने प्रयत्नों से पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता, यदि उसे दैविक सफलता नहीं मिले, और यह दैविक सफलता साधना के द्वारा ही संभव है।

-स्वामी जनमेजय, हरिद्वार,
अध्यक्ष-साधुसमाज

"तंत्र और मंत्र प्रामाणिक नहीं, पूरे प्रामाणिक सही एवं सिद्ध है, आवश्यकता है प्रामाणिक साधक की, यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

-जगन्नाथ शर्मा, उज्जैन
महन्त कालेश्वर

फरवरी माह में तांत्रोक्त प्रभाव के संबंध में हमें हजारों संख्या में पत्र प्राप्त हुए हैं, प्रत्येक ने अपने अनुभव अपनी समस्याओं को उदाहरण सहित दिया है, ज्यादातर पत्र बहुत ही व्यक्तिगत है इन पत्रों का कार्यालय द्वारापूर्ण विश्लेषण कर प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से उत्तर दिया जायेगा, इसमें कुछ विलम्ब हो सकता है, अतः पाठकों से निवेदन है कि वे धैर्य रखें, इतना विश्वास दिलाता हूं कि केन्द्र में प्रत्येक पत्र का विवेचन कर उत्तर अवश्य दिया जायेगा।

-सम्पादक

चलते-चलते एक पत्र यह भी-

मेरा पुत्र (अनिल) आपके यहां का सदस्य है, धन तेरस वाले दिन मेरे पुत्र ने आपके यहां से कुबेर यंत्र प्राप्त कर विधिविधान सहित स्थापित किया था हमारी छोटी सी दुकान है, दीवाली वाले दिन सेल ने हमारे पिछले १९ सालों का रिकार्ड तोड़ दिया, यह पूर्णतया सत्य है, ये सब कुबेर यंत्र का चमत्कार है, लेकिन मेरी एक समस्या है, कई व्यक्ति मेरे पास हार-जीत के नम्बर लगाते हैं जिसे "सट्टा" कहते हैं, और अब इसमें बराबर नुकसान हो रहा है, बस मुझे रोज के सट्टे का नम्बर बता दें।

-आपका-सरूरपुरकलां, मेरठ (उ.प्र.)

वर्ष १२ अंक ३ **सम्पादक मंडल** **मार्च १९९३**

पत्र व्यवहार-मंत्र तंत्र यंत्र कार्यालय, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

टेलीफोन-०२९१-३२२०९

दिल्ली कार्यालय-गुरुधाम-३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन-०११-७१८२२४८

हमजाद गोमती चक्र पर सिद्ध सफल प्रयोग

- यदि इस हमजाद गोमती चक्र को लाल सिन्दूर की डिब्बी में घर में रखे तो घर में सुख शांति बनी रहती है।
- यदि घर में भूत-प्रेतों का उपद्रव हो तो दो हमजाद लेकर घर के मुखिया के ऊपर घुमाकर आग में डाल दे तो घर से भूत-प्रेत का चक्कर समाप्त हो जाता है।
- यदि घर में बीमारी हो या किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो एक हमजाद लेकर उसे चांदी में पिरोकर रोगी के पलंग के पाये पर बांध दे, तो उसी दिन से रोगी का रोग समाप्त होने लगता है।
- व्यापार वृद्धि के लिये दो हमजाद गोमती चक्र लेकर उसे बांधकर ऊपर चौखट पर लटका दें, और ग्राहक उसके नीचे से निकले, तो निश्चय ही व्यापार में वृद्धि होती है।
- यदि प्रोमोशन नहीं हो रहा तो एक हमजाद लेकर शिव मंदिर में शिवलिंग पर चढ़ा दें तो निश्चय ही प्रोमोशन के रास्ते खुल जाते हैं।
- पति-पत्नी में मतभेद हो तो तीन हमजाद लेकर घर के दक्षिण में "ह्लूं बलजाद" कहकर फेंक दे तो मतभेद समाप्त हो जाते हैं।
- पुत्र प्राप्ति के लिये पांच हमजाद लेकर किसी नदी या तालाब में "हिलि हिलि मिलि मिलि चिलि चिलि हुल" पांच बार बोलकर विसर्जित कर दे तो पुत्र प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
- यदि बार-बार गर्भ गिर रहा हो तो दो हमजाद लाल कपड़े में बांधकर कमर में बांध दे तो गर्भ गिरना बंद हो जाता है।
- यदि शत्रु बढ़ गये हों तो तीन हमजाद लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर उन तीनों हमजादों को जमीन में गाड़ दे तो शत्रु परास्त रहते हैं।
- यदि कोई कचहरी जाते समय घर के बाहर हमजाद रखकर उस पर दाहिना पांव रखकर जावे तो उस दिन कोर्ट कचहरी में फतह होती है।
- भाग्योदय के लिये तीन हमजाद का चूर्ण बनाकर घर के बाहर बिखेर दे तो दुर्भाग्य समाप्त होता है।
- राज्य में सम्मान प्राप्ति के लिये दो हमजाद किसी ब्राह्मण को दान में दे दें तो राज्य में अटके हुए कार्य पूरे हो जाते हैं।
- *इसके अतिरिक्त भी हमजाद के कई प्रयोग हैं।*

साबर साधनाओं के महत्वपूर्ण तथ्य

यदि इन तथ्यों को ध्यान में रखकर साबर साधनाएं सम्पन्न करें, तो निश्चय ही सफलता की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

साबर साधनाओं का तात्पर्य ऐसी साधनाएं हैं, जो अपने आप में प्रामाणिक हैं, और शीघ्र सफलतादायक हैं, अनुभव में यह आया है कि अन्य साधनाओं की अपेक्षा इनमें शीघ्र और निश्चित सफलता प्राप्त होती है, फिर भी इन साधनाओं के बारे में कुछ ऐसे भी तथ्य हैं, जिनका पालन करना उचित माना गया है।

१. साबर साधनाओं को कोई भी जाति, वर्ण, रंग, आयु का पुरुष अथवा स्त्री सम्पन्न कर सकता है।

२. साबर साधनाओं के लिये कोई विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, जहां पर वार का समय दिया हुआ हो, तो उसका पालन करना चाहिए, मगर जहां पर ऐसा उल्लेख नहीं हो, वहां कोई भी साधना शुक्रवार से प्रारंभ की जा सकती है।

३. कुछ विशेष साधनाओं के लिये निश्चित रंग की धोती या आसन आदि का उल्लेख है, परन्तु जहां ऐसा उल्लेख नहीं है, वहां पीले रंग की धोती और पीला आसन मान लेना चाहिए, जहां दिशा आदि का संकेत नहीं हो, वहां साधक को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधना करनी चाहिए।

४. साबर साधनाओं में उपकरणों की विशेष अनिवार्यता मानी गई है, स्थान-स्थान पर ऐसे उपकरणों का उल्लेख भी है, उपकरणों के माध्यम से सफलता प्राप्त हो सकती है, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये उपकरण प्रामाणिक, सही, मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, बिना विश्वास के ये उपकरण प्राप्त नहीं करने चाहिए, वे नकली या अप्रामाणिक हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में सफलता प्राप्ति में सन्देह ही रहता है।

५. साधना में चाहे तो घी या तेल का दीपक लगाया जा सकता है, किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, जब तक साधना में मंत्र जप चले, तभी तक दीपक लगाये रखना उचित है, अगरबत्ती या धूप किसी भी प्रकार का प्रयुक्त हो सकता है, परन्तु साबर साधनाओं में लोबान की अगरबत्ती या धूप की विशेष महत्ता मानी गई है।

६. अलग-अलग मालाओं का विधान है, परंतु जहां माला का विधान या माला के बारे में संकेत नहीं है, वहां हकीक माला समझनी चाहिए, किसी भी माला में १०८ मनकों की अनिवार्यता नहीं है, लगभग १०० मनके एक माला में होने चाहिए, यदि माला, मंत्र जप के बीच में टूट जाय तो चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, उसे पुनः धागे में पिरोया जा सकता है।

७. साधनाकाल में कई प्रकार के संकेत मिल जाते हैं, परंतु साधना के बीच में विचलित होने की आवश्यकता नहीं है, जितनी संख्या दी गई है, उतनी संख्या में मंत्र जप अनिवार्य मानना चाहिए तभी साधना पूर्ण होती है।

८. यदि साधना काल में कोई भयानक दृश्य दिखाई दे, तो घबराने की या विचलित होने की जरूरत नहीं है, किसी भी प्रकार का अहित साधक के जीवन में नहीं हो सकता, अतः निश्चिंत होकर साधना सम्पन्न करें।

९. एक साधना सामग्री से एक बार ही साधना सम्पन्न होती है, अन्य साधनाओं या दूसरी साधना के लिये पुनः उपकरण या सामग्री प्राप्त करनी चाहिए, तभी सफलता मिलती है।

१०. साबर साधनाओं में गुरु की विशेष महत्ता मानी गई है, अतः साधना काल में गुरु का चित्र या मूर्ति स्थापित करनी चाहिए, और नित्य उनसे अनुमति लेकर साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

११. साबर साधनाओं में पूर्ण श्रद्धा होनी आवश्यक है, अधूरा विश्वास या मंत्रों अथवा यंत्रों पर अश्रद्धा होने पर सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

१२. साधना काल में यथासमय एक समय भोजन करे और ब्रह्मचर्य पालन करे, तो ज्यादा उचित रहता है, यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है।

१३. साबर साधनाएं दिन को या रात्रि को किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती है।

१४. साबर साधनाएं वर्तमान जीवन का वरदान हैं, यद्यपि ये साधनाएं अधिकतर गुप्त रही हैं, यदि ऐसी साधनाएं प्राप्त होती हैं, तो जीवन का सौभाग्य मानना चाहिए, यदि किसी कारण से एक बार में सफलता न मिले तो बार-बार प्रयत्न करना चाहिए, यद्यपि यह सही है, कि साबर साधनाओं में अन्य की अपेक्षा शीघ्र सफलता मिलती है।

साबर साधनाएं ही क्यों?

युग के अनुरूप अपने आपको ढालकर जो व्यक्ति कार्य करते हैं, उन्हें जीवन में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है वैदिक और पौराणिक काल में संस्कृत की महत्ता थी, उनके पास समय भी था, और लम्बी आयु होने की वजह से वे ऐसी साधनाएं कर सकते थे, जिनमें संस्कृत उच्चारण हो और लम्बे समय तक सम्पन्न होने वाली साधनाएं हों।

परन्तु निम्न बारह कारणों से आज के युग में साबर साधनाएं सबसे ज्यादा उपयोगी और महत्वपूर्ण मानी गई है।

१. वर्तमान में उच्चकोटि के योगी संन्यासी और सिद्धाश्रम के साधकों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है, कि आज के युग में साबर साधनाएं शीघ्र सफलतादायक और निश्चित परिणाम देने में समर्थ हैं।

२. इन साधनाओं में जटिल विधि विधान, क्रिया-कलाप, पवित्रता आदि की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी अन्य दैविक साधनाओं में होती है।

३. ये साधनाएं सरल भाषा में हैं, इसलिये संस्कृत न जानने वाले भी इन साधनाओं को और सम्बंधित मंत्रों को भली प्रकार से उच्चरित कर सकते हैं, तथा सफलता पा सकते हैं।

४. ये कम समय में पूर्णता के साथ सफलता देने में सहायक हैं।

५. इन साधनाओं में यदि त्रुटि रह भी जाय, तब भी किसी प्रकार ही हानि नहीं होती।

६. इन साधनाओं को पुरुष स्त्री या बालक तथा किसी भी वर्ण जाति रंग या नस्ल का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, तथा सफलता पा सकता है।

७. इसमें जटिल क्रिया कलाप नहीं है, और ये शीघ्र सफलता देने में समर्थ है।

८. अन्य साधनाओं में जहां सवा लाख या पांच लाख मंत्र जप करने होते हैं, वहीं इन साधनाओं में कम संख्या में मंत्र जप की आवश्यकता होती है।

९. वर्तमान युग की अनिवार्यताएं और आवश्यकताएं अलग प्रकार की हो गई हैं, और ये मंत्र तथा साधना विधियां उसी के अनुरूप हैं, अतः इनके माध्यम से हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की समस्याओं को भली प्रकार से सुलझा सकते हैं।

१०. यदि साधनाओं में प्रयुक्त उपकरण सही और प्रामाणिक हों तो साधना में सफलताएं निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है।

११. वर्तमान युग के सभी साधकों और योगियों ने स्वीकार किया है, कि कलियुग में साबर साधनाएं ज्यादा प्रामाणिक और शीघ्र सफलतादायक हैं।

१२. इनका प्रभाव अचूक, तुरन्त और पूर्णता के साथ होता है।

साबर साधनाओं के बारे में सावधानियां

१. साबर साधनाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यही है, कि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास होने पर ही साधनाओं में सफलता मिलती है।

२. इन साधनाओं में गुरु पूजन का विशेष महत्व होता है, अतः साधनाओं के प्रारंभ में गुरु पूजन अवश्य करना चाहिए।

३. मंत्र जप शुद्ध रूप से उच्चारण होना चाहिए।

४. साधना काल में कुछ विशेष दृश्य दिखाई दे सकते हैं, भूत साधना आदि में प्रत्यक्ष भूत उपस्थित हो सकते हैं। परन्तु वे न तो किसी प्रकार से हानि पहुंचाते और न दुख देते हैं, अतः इस संबंध में विचलित होने की आवश्यकता नहीं है।

५. साधना में पुरुष और स्त्री का कोई भेद नहीं है, अतः कोई भी इस प्रकार की साधना को कर सकता है, रजस्वला समय में ये साधनाएं सम्पन्न नहीं की जानी चाहिए।

६. साधनाकाल में हजामत बनवाना, अपना कार्य व्यापार या नौकरी करना, आदि सम्पन्न नहीं कर सकते।

७. ये साधनाएं घर के किसी एकान्त कक्ष में या मंदिर में धर्मशाला में नदी किनारे या जंगल में कर सकते हैं एकान्त कक्ष का अभाव हो तो रात्रि को परिवार के सभी सदस्यों के सो जाने के बाद साधना एवं मंत्र जप सम्पन्न किया जा सकता है।

८. साबर साधनाओं को सम्पन्न करने में या साधना अधूरी छूट जाने पर अथवा साधना में न्यूनता रहने पर किसी प्रकार की हानि नहीं होती और न कोई नुकसान होता है, इसीलिये इन साधनाओं की महत्ता वर्तमान युग में विशेष रूप से है।

९. साधना से सम्बंधित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन ०२९१-३२२०९ से पत्र व्यवहार कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

और यों सफलता प्राप्त करें

१. सर्व प्रथम प्रामाणिक यंत्र अथवा सामग्री लें, या प्राप्त कर लें।

२. फिर मन में निश्चय कर लें कि मुझे यह प्रयोग सम्पन्न करना ही है।

३. साधना में पवित्र होकर शुद्ध स्नान आदि कर बैठ जायं, गुरु चित्र की पूजा कर अनुमति लें, कि आपको सफलता मिले।

४. फिर हाथ में जल लेकर संकल्प भरें, कि मैं यह प्रयोग "अमुक सिद्धि के लिए" या अमुक इच्छा की पूर्ति के लिये कर रहा हूं, फिर जल जमीन पर छोड़ दें।

५. अपनी इच्छा और साधना को गोपनीय रखें।

६. साधना में सफलता मिलने पर भी संयत बने रहें।

> **उनकी याद, उनकी तमन्ना, उनकी इन्तजार।**
> **आजकल बहुत मशगूल हो गया हूं मैं।।**
> ***-रणजीत चौबे, बम्बई***

साबर उर्वशी मंत्र

ॐ नमो आदेश। गुरू आदेश। गुरूजी के मुंह में ब्रह्मा उनके मध्य में विष्णु और नीचे भगवान महेश्वर स्थापित हैं, उनके सारे शरीर में सर्व देव निवास करते हैं, उनको नमस्कार। गगनमंण्डल में घुंघरूओं की झंकार और पाताल में संगीत की लहर।

लहर में उर्वशी के चरण। चरण में थिरकन। थिरकन में सर्प। सर्प में कामवासना। कामवासना में कामदेव। कामदेव में भगवान शिव। भगवान शिव ने जमीन पर उर्वशी को उतारा। श्मशान में धूनी जमाई। उर्वशी ने नृत्य किया। सात दीप नवखण्ड में फूल खिले, डाली झूमी। पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण आकाश पाताल में सब मस्त भये।

मस्ती में एक ताल दो ताल तीन ताल। मन में हिलोर उठी, हिलोर में उमंग, उमंग में ओज, ओज में सुंदरता, सुंदरता में चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखी में शीतलता, शीतलता में सुगंध और सुगंध में मस्ती। यह मस्ती उर्वशी की मेरे मन भाई।

यह मस्ती मेरे सारे शरीर में अंग-अंग में लहराई उर्वशी इन्द्र की सभा छोड़ मेरे पास आवे। मेरी प्रिया बने, हरदम मेरे साथ रहे, जो कहूं सो पूरौ करे, सोचू तो हाजर रहे, यदि ऐसो न करे तो दस अवतार की दुहाई, ग्यारह रुद्र की सौगंध, बारह सूर्य को वज्र, तैंतीस कोटि देवी देवताओं की आण।

मेरो मन चढ़े, अप्सरा को मेरो जीवन उसके श्रृंगार को। मेरी आत्मा, उसके रूप को। और मैं उसको, वह मेरे साथ रहे। धन, यौवन सम्पत्ति, सुख दे। कहियो करे, हुकुम माने। रूप यौवन भार से लदी मेरे सामने रहे। जो ऐसा न करे, तो भगवान शिव को त्रिशूल और इन्द्र को वज्र उस पर पड़े।

> पीली हकीक माला से नित्य रात्रि को एक माला "उर्वशी साबर यंत्र" के सामने चौदह दिन प्रयोग करने पर यह सिद्धि मिलती ही है।

आप भी चमत्कारिक पुरुष बन सकते हैं।

निश्चय ही आपमें से प्रत्येक पुरुष या स्त्री युवक या युवती चमत्कारिक व्यक्तित्व से सम्पन्न हो सकते हैं और अपनी योग्यता, तीक्ष्णता एवं श्रेष्ठता से पूरे भारतवर्ष में छा सकते हैं, और वह भी मात्र पैंतीस दिनों में ही।

विश्वास न हो तो इस लेख को पढ़कर देख लीजिए न।

ऊपर मैंने इस लेख का शीर्षक देते समय ''चमत्कारी'' शब्द का प्रयोग किया है। यहां चमत्कार से मेरा तात्पर्य किसी प्रदर्शन अथवा इन्द्रजाल से नहीं है न किसी विशिष्ट असर या प्रभाव को उत्पन्न करने से है, कि स्त्री को पुरुष बना देना, हवा, में हाथ हिलाकर भभूत दे देना आदि, यहां मेरा तात्पर्य इस बात से है कि आप अपनी वर्तमान जीवन शैली में परिवर्तन कर एक सुखी व श्रेष्ठ जीवन जी सकें, समाज, देश व इससे भी आगे बढ़कर समस्त संसार के प्रति एक सहायक बन सकें, और यह तभी संभव है कि जब आपके पास जीवन ऊर्जा का अतिरिक्त प्रभाव हो अतिरिक्त वेग हो। आपके पास एक ऐसा चुम्बकीय व्यक्तित्व हो, ऐसी शीतलता हो, कि लोग आपसे दो क्षण मिलकर तृप्ति अनुभव कर सकें, अपनी समस्याओं को भुला सकें।

आपने भी अपने जीवन में ऐसे व्यक्तित्व देखें होंगे, जिनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व इतना आकर्षक होता है, इतना हंसमुख व मिलनसार होता है कि वे जिससे भी मिलते हैं, उसे या तो अपना बना लेते हैं या उसके बन जाते हैं। आप अवश्य अपने मन में उन्हें देखकर सोचते होंगे कि काश! मैं भी अपने जीवन को ऐसा ही उर्जावान, चैतन्य व आकर्षक बना सकता, मैं भी इसी तरह डाली पर झूमते पुष्प की तरह इठलाता ही रहता। शायद यह सब मात्र व्यक्ति के प्रयासों से संभव नहीं। क्योंकि वह तो सुंदर कपड़ों, अच्छे जूतों, अच्छे सेंट इन सभी से अपने को प्रभावशाली बनाना चाहते ही हैं, किन्तु कुछ कमी रह ही जाती है, आवश्यकता इस बात की है कि हम खुले मस्तिष्क से इस तथ्य पर विचार करें, क्योंकि सौन्दर्यवान बनना, प्रभावशाली बनना भी एक प्रकार की साधना ही तो है। सौन्दर्यवान बनने से जहां हमारे अंदर आत्मविश्वास और तृप्ति आती है, वहीं स्वच्छ निर्मल सौन्दर्य सभी को तृप्ति का हेतु भी होता है।

मैंने अपने जीवन के समस्त अनुभवों को एकत्र कर जो निष्कर्ष पाया है, उन्हें कुछ सूत्रो में बांधा है, और यह सूत्र व्यक्तित्व निर्माण हेतु सम्पूर्ण व्याख्या है। यह भी साधना का प्रकार है किन्तु शास्त्रीय नियमों उपनियमों से सर्वथा मुक्त। इस पद्धति में कोई भी जकड़न नहीं है-यह किन्हीं भी परंपराओं के किनारों से बंधी नहीं है, यदि आपने हिमालय से सीधे निकलकर आती हुई नदी का नर्तन देखा हो और उसके संगीत को समझा हो तभी मेरी इस साधना पद्धति को समझ सकेंगे, इसमें समस्त रूढ़िवादी किनारों को तोड़कर स्वच्छ प्रवाह गतिशील मिलेगा।

मेरी इस पद्धति में, मेरे इन सूत्रों में किसी भी आसन, दिशा, माला, यंत्र का कोई भी विधान नहीं है। मेरा तो प्रयास ही इस बात का रहा है कि समाज

में जकड़े-जकड़े जो दुर्गन्ध आ चुकी है, उसे एक स्वच्छ नदी का संगीत और पवित्रता दे सकूं। इस पद्धति में यह भी आवश्यक नहीं है कि आप संन्यासी हों या सिद्ध साधक हों आपका पद्मासन लगाना आता हो अथवा प्राणायाम ज्ञान की पूर्णता हो, आप चाहे नौकरी करते हों, चाहे व्यापारी हों, चाहे गृहस्थ, समान रूप से पात्र है कि कि आप एक चुम्बकीय व्यक्तित्व के स्वामी बने और समाज में यशस्वी बनें, अपने क्षेत्र में सफल हों।

इस हेतु प्रथम व आवश्यक तत्व हैं कि आपके हृदय में छटपटाहट हो और प्रयास पूर्वक जीवन के इन्हीं क्षणों में किन्हीं चैतन्य, जीवित व जाग्रत गुरू की प्राप्ति कर लें। यहां मैंने तीन शब्द गुरु के प्रति दिये हैं-जीवित, चैतन्य एवं जाग्रत। इसमें से प्रत्येक शब्द एक अर्थवत्ता से युक्त है। गुरु पद के अधिकारी व्यक्ति की पहचान हेतु शास्त्रों में कई लक्षण बताये गये हैं, किन्तु मैं आपको सीधा सा उपाय बताता हूं, जहां पहुंचकर आपको एक तृप्ति सी मिले, मन में एक विश्वास सा जगे कि यही मेरी समस्याओं का निदान दे सकेंगे, तो वहीं आपके गुरु हैं यद्यपि आज के परिवेश में जो गुरुओं की भीड़ व्याप्त है उसमें आपको सच्चा गुरु प्राप्त करने में कठिनाई तो हो सकती है, हो सकता है कि आप किसी भव्य आश्रम व गुरु की चकाचौंध में थोड़ी देर के लिये खो भी जायें, किन्तु आपके हृदय में यदि सच्ची लगन है तो आप सच्चे गुरु को, योग्य गुरु को देर सबेर खोज ही लेंगे, जब आपको सौभाग्य से ऐसे गुरु मिल जायें तो हृदय के समस्त बल से उनको तृप्त करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि गुरु का मात्र एक अनुग्रह पूर्ण वाक्य ही समस्त वैभव प्रदान करने वाला होता है। प्रयास होना चाहिए कि हम भावनाओं, चिंतन, सेवा के द्वारा उनके उस स्पर्श को प्राप्त कर सकें, जिसे शास्त्रों में लोहे की पारस से रगड़ की उपमा दी गई है, यह रगड़ प्राप्त करने की क्रिया दीक्षा है।

दीक्षा

दीक्षा वास्तव में व्यक्ति का आत्मसंस्कार है, इस माध्यम से गुरुदेव अपने शिष्य पर जो मल-आवरण पड़ा रहता है उसका क्षय अपनी विराट करुणा से करते हैं, जिससे व्यक्ति अपने शुद्ध स्वरूप का अनुभव कर पाता है एवं उसका व्यक्तित्व दैदीप्यमान बन पाने में सफल होता है। दीक्षा मनुष्य के पशुत्व का हनन करने की प्रक्रिया है। दीक्षाओं के एक सौ आठ प्रकार वर्णित हैं किन्तु क्रमबद्ध रूप में आठ दीक्षाओं का विधान है यथा-समय, दीक्षा, ज्ञान दीक्षा, साधक दीक्षा, शांभवी दीक्षा, निर्बीज दीक्षा, भूति दीक्षा, शिष्याभिषेक एवं आचार्याभिषेक।

मैं तुम्हें नया धर्म दे रहा हूं जहां बुद्ध का ध्यान है, राम का शील है, कृष्ण का प्रेम है, महावीर की अहिंसा है। इस 'गुरु धर्म' में मुस्कराहट है, खिलखिलाहट है, हंसी है और आनंद की हल्की-हल्की फुहार है। तुम मेरे पास आओ मैं तुम्हें 'गुरु धर्म' में दीक्षित करता हूं।

यह मात्र दस प्रकार के विधान ही नहीं, वरन् क्रमशः जीवन की एक-एक सीढ़ी चढ़ने की प्रक्रिया है और उस बिंदु पर पहुंचने की प्रक्रिया हैं जिसे 'पूर्णमदः पूर्ण मिदं' कहकर अभिनन्दित किया गया है। इससे व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से वरन् भौतिक दृष्टि से भी एक श्रेष्ठता प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है। सामान्य दीक्षा प्राप्त करने के बाद यह मान बैठना कि हम सब कुछ प्राप्त कर चुके हैं, साधक की भूल होती है। सौभाग्यशाली व्यक्ति ही जीवन में सद्गुरु की तलाश करते हैं और प्रयास कर उनसे क्रमशः एक-एक कर दसों दीक्षाएं प्राप्त करते हैं। इसके लिये कोई जटिल या कठिन प्रक्रिया नहीं है वरन् एक खालीपन लेकर गुरुदेव के पास जाना होता है और लबालब भर कर लौट आना होता है।

द्वितीय चरण में व्यक्ति या शिष्य के लिये आवश्यक होता है कि वह अपने गुरुदेव के बताये मार्ग से ध्यान की गहराइयों में प्रवेश करें। ध्यान तो एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को निरंतर चैतन्यता, मानसिक विश्राम और एक गति प्रदान करती है। ध्यान करना तो ठीक इसी प्रकार है मानों जल शांत हो और हम तलहटी तक झांक कर देख सकें, ध्यान अपने अंदर की समस्त उहापोह, बेचैनी, छटपटाहट, व्यग्रता और तनाव को समाप्त करने की प्रक्रिया है। ध्यान के लिये बलात् आंख मूंद कर एक कष्टप्रद अवस्था को धारण कर के नहीं बैठ जाना है, प्रारंभ में हो सकता है कि जब आप बैठें तो आपको घर की समस्याएं दिखाई दें, ऑफिस की उलझनें सामने आयें, विकार और कुंठाएं उभर कर पीड़ा दें किन्तु इससे घबराना व भागना नहीं है। शनैः-शनैः इसका अंत होता जायेगा और स्वतः ही मार्ग सूझने लग जायेगा। आपको जब मात्र एक बिम्ब और वह भी आपके गुरु का हो तो सर्वोत्तम, लेकर चुपचाप एक गहनता में खोजना है, चूंकि आपके गुरुदेव एक चैतन्य व प्रकट माध्यम हैं अतः किसी भी देवी-देवता से अधिक प्रामाणिक हैं। उनका अवलम्बन लेने के पश्चात् आपको अनुभव करना हैं कि आप अपने ही अंदर प्रविष्ट हो रहे हैं, यदि आप ऐसा करने में कठिनाई अनुभव करें तो चिन्तन करें कि आपके गुरुदेव आपको गहनता में और स्वयं आपके अंदर आपको ले जा रहे हैं, फिर नाभि तक अभ्यास पूर्वक जाना है। नाभि तक की यात्रा के पश्चात् भी अंत नहीं कर देना है वरन् और अंदर चिंतन पूर्वक लगभग दो अंगुल और नीचे जाना है। शरीर के इसी भाग में वह स्थान है जिसे योगियों की भाषा में मूलाधार कहा गया है। इसी मूलाधार में शक्ति सुप्त अवस्था में पड़ी रहती है एवं अधोगामी होकर संतानोत्पत्ति कर हम उसे व्यर्थ कर देते हैं। जब हम ध्यानपूर्वक वहां तक जाते हैं, उसे स्पर्श करते हैं तो उसमें चेतना व्याप्त होती है और वह उर्ध्वमुखी होती है। मूलाधार में अवस्थित शक्ति का उर्ध्वगामी होना ही आनंद की प्रतीति है, व्यक्तित्व का निखार है, तथा यही जब पूर्णता से जाकर सहस्त्रार में अवस्थित हो जाती है तो अखण्ड आनंद की, पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की दशा कहलाती है। पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की स्थिति में व्यक्ति का सौन्दर्य अपूर्व तेज, सुगंध एवं सम्मोहन से आप्लावित सा हो जाता है।

ध्यान तो गहराई तक जाने की क्रिया है, ऊपरी देह के नीचे मन और मन के नीचे प्राण तत्व है, इसी प्राण तत्व की यात्रा को ध्यान कहते हैं।

वस्तुतः ध्यान कोई जटिल प्रक्रिया है ही नहीं, यह तो विद्वता के प्रदर्शन में कतिपय विद्वानों ने जटिल घोषित कर दिया है। आवश्यकता इस बात की होती है कि व्यक्ति प्रयास पूर्वक एवं चिंतन पूर्वक संलग्न रहे। प्रारंभ की स्थितियों में जो भी संवेग आयें चाहे वह क्रोध के हों, काम के हों, उन्हें उभरने दें। वे स्वतः ही निकलते जाएंगे और चित्त में अपूर्व शांति का प्रादुर्भाव होगा।

निर्विचार मस्तिष्क

ध्यान की गहनता में जाने पर मस्तिष्क में शून्यता की स्थिति आने लग जाती है। शून्य अपने आप में शक्ति का उद्गम स्थल माना गया है। व्यक्ति का प्रयास होना चाहिए कि वह परिश्रम पूर्वक अपने मस्तिष्क में प्रति सेकेंड लगभग तीन लाख विचार टकराते हैं। प्रत्येक क्षण हम एक साथ चेतन अथवा अवचेतन मन से भविष्य की योजनाओं में, भूत की स्मृतियों में, शोक में, पछतावे और ऐसे ही अन्य संवेगों में एक साथ डूबे रहते हैं साथ ही वर्तमान की जटिलताएं तो व्यक्ति के साथ प्रति क्षण जुड़ी ही रहती हैं।

इसका प्रभाव यह होता है कि मस्तिष्क के कोमल तंतुओं पर इतना अधिक दबाव व बोझ पड़ता है कि व्यक्ति मानसिक रूप से पंगु सा हो जाता है। व्यक्तित्व

का विकास करना तो दूर वह सामान्य व्यक्तित्व का भी स्वामी नहीं बन पाता। वर्तमान परिप्रेक्ष्य का दोष कह लें या व्यक्ति की प्रवृत्ति में दोष कि वह हर बात को तर्क से तौलता है जिसका प्रभाव होता है कि उसका चेतन मन पूर्ण रूप से बुद्धि से प्रभावित हो जाता है जबकि अवचेतन मन उपेक्षित सा पड़ निर्बल हो जाता है। इसका विपरीत परिणाम यह होता है कि जीवन में कभी एकाएक कोई विपरीत परिस्थिति आ जाने पर उसका अवचेतन मन व्यक्ति का साथ नहीं देता, और नर्वस ब्रेक डाउन की स्थिति बन जाती है।

इन सब दु:खद स्थितियों से बचने के लिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति एक विचार शून्य मस्तिष्क का निर्माण करे। वह सतत आत्मनिरीक्षण करे कि उसे कौन से विचार चेतन रूप से, अवचेतन रूप से आक्रांत रखते हैं, और वह स्थिर चित्त होकर उनका उपाय सोच ले। व्यक्ति के अधिकांश विचारों के पीछे एक कल्पित भय होता है जो कि आज के तीव्र, शोरगुल एवं छल युक्त वातावरण की देन कही जा सकती है। भूतकाल को लेकर चिंतन करना व्यर्थ है। भविष्य के चिंतन में भी अपने वर्तमान के क्षणों को नष्ट करना और उसके द्वारा जाने-अनजाने में जो भी अनुचित कार्य हुआ है उसे प्रभु को समर्पित कर, क्षमा मांग तथा अगले दिन उसे न करने का निश्चय कर सुखपूर्वक, तनाव रहित जीवन व्यतीत करता है।

जैन धर्म की क्षमा भावना में एक ग्राह्य वस्तु है। हम बहुधा किसी के दोष को लेकर तनाव में रहते हैं जबकि यदि उसे हम सहज क्षमा कर दें तो अपने जीवन को अधिक से अधिक शांति, उदात्तता व नये आयाम दे सकते हैं। सर्वोपरि तो दीक्षित व्यक्ति को यह दृढ़ विश्वास होना ही चाहिए कि मेरे जीवन में अब एक सक्षम गुरु हैं जो मुझे सब बाधाओं से पार निकालेंगे ही। क्रमश: इन्हीं सूत्रों की परिपालना कर एक समय ऐसा आयेगा जब हम पूर्ण रूप से विचार शून्यता की स्थिति में, भले ही निरंतर नहीं तो किसी काल विशेष के लिये तो रह ही सकेंगे।

विचार शून्यता की स्थिति में व्यक्ति अपनी लघु देह व लघु परिवेश से कटकर समस्त ब्रह्माण्ड का एक अंग बनने की प्रक्रिया में होता है और तब उसे भावना रखनी चाहिए कि मैं असीम शक्ति के रूप में, एक पुंजीभूत रूप में, समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी व्याप्त है उसमें विस्तारित हो रहा हूं। यह मात्र कल्पना का ही विषय नहीं है वरन् इस समस्त ब्रह्माण्ड में ईश्वर तत्व का जो विस्तार है और जिसके द्वारा ही तरंगों का संचरण संभव हो पाता है उसके द्वारा व्यक्ति अपनी मानसिक तरंगों का भी विस्तार कर सकता है। एक स्थान पर बैठकर ही सैकड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति को आज्ञा दी जा सकती है। सूक्ष्म शरीर के माध्यम से सैकड़ों मील दूर जाया जा सकता है। दूरस्थ स्थानों का वार्तालाप सुना जा सकता है तथा इसी प्रकार के कार्य जो अचरज भरे प्रतीत होते हैं मानसिक क्षमता के विस्तार मात्र से संभव हैं।

जब तुम परेशान हो जाओगे अपने जीवन से, जब पत्नी पुत्र स्वार्थ का डरावना मुखौटा लगाये तुम्हें व्यथित कर रहे होंगे, तब मेरी बात तुम्हें सुननी ही पड़ेगी, मैं जो कुछ कह रहा हूं वह तुम्हें समझना ही पड़ेगा और जिस रास्ते की ओर संकेत कर रहा हूं उसे मानना ही पड़ेगा।

विराट सत्ता का एक अंग बनने पर साधक को कुछ घटनाएं या दृश्य भी दिख सकते हैं, जो उसके जीवन के लिये महत्वपूर्ण होते हैं। अथवा जिनका महत्व वह अपने अंदर जो शक्ति संचरण प्राप्त करता है उससे उसे आत्म विश्वास और प्रखरता निश्चित रूप से प्राप्त होती ही है। निर्बीज दीक्षा के बाद साधक सुगमता पूर्वक विचारशून्य मस्तिष्क के निर्माण की प्रक्रिया में स्वत: ही संलग्न हो जाता है।

उपरोक्त क्रमों का निरंतर अभ्यास करते हुए एवं अपने अंत: पक्ष को पुष्ट करते हुए व्यक्ति को बाह्य पक्ष को भी सफल बनाने का यत्न करना चाहिए जिससे लोग आपसे प्रथम भेंट में ही प्रभावित हो सकें। बाह्य रूप से भी आपका प्रभावशाली व्यक्तित्व हो, इसके लिये विशेष कद-काठी या रंग नितान्त आवश्यक नहीं, नितान्त आवश्यकता तो इस बात की है कि आपके चुम्बकीय नेत्र हों, चुम्बकीय नेत्रों के माध्यम से तो संसार में वह कार्य किये जा सकते हैं जो असंभव ही क्यों न प्रतीत होते हों। हिंसक से हिंसक पशु तक को नेत्रों के माध्यम से शांत किया जा सकता है। सम्मोहन प्रक्रिया अपने आप में एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने जीवन को संवार सकता है वरन् अनेक प्रकार से समाज उपयोगी कार्य भी सम्पादित कर सकता है इस विज्ञान के तो अत्यंत विशद क्षेत्र हैं और सम्भावनाएं हैं, वर्तमान में चिकित्सा विज्ञान के सहयोगी विज्ञान के रूप में इसे मान्यता प्राप्त हो ही चुकी हैं।

सम्मोहक व्यक्तित्व निर्माण

सम्मोहन ज्ञान की प्राप्ति, व्यक्तित्व निर्माण तथा चुम्बकीय नेत्रों की इच्छा रखने वाले साधक को नित्य बत्तीस मिनट का पूर्ण त्राटक अभ्यास शक्ति चक्र पर करना ही होगा। त्राटक का अर्थ होता है मार्ग के अवरोधों को नष्ट कर देना और इसके अभ्यास से हम ऐसे किसी भी अवरोध को नष्ट कर सकते हैं जो हमारे व्यक्तित्व के विकास में बाधक हो, या जो परिस्थिति विशेष में बाधक हो।

मैं प्रेम में आपूरित हूं तो श्रद्धा का सौन्दर्य हूं विराटता का आकार हूं तो सिद्धियों का अजस्र प्रवाह हूं मैं तुम्हारा जीवित जाग्रत चैतन्य गुरु हूं मेरे व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिये कोई नया शब्द ही गढ़ना पड़ेगा तुम्हें।

सम्मोहन के पूर्ण ज्ञान के बाद यह आवश्यक सा हो जाता है कि आपके पास यथार्थ में भी कोई विशेष विद्या या सिद्धि हो, उदाहरण स्वरूप आप जहां कर्ण पिशाचिनी सिद्ध कर किसी का भूतकाल उसके सामने स्पष्ट कर अनुगामी बना सकते हैं यह युग तो प्रदर्शन का है और सफलता तभी संभव है जब आप विशेष शक्तियों से युक्त हों, यदि आपके पास बगलामुखी सिद्ध हो तो ऊंचे से ऊंचा राजनेता आपके घर के चक्कर लगायेगा। अगर यदि धूमावती साधना जैसी भूतप्रेत नाश की विद्या आपने सिद्ध कर रखी है तो कितना अधिक समाज उपयोगी कार्य कर सकते हैं और लोकप्रिय हो सकते हैं। ये विशेष साधनाएं, सिद्धियां व्यक्ति के अपने प्रयासों से इतनी सहज या सुगम नहीं हैं जितनी कि गुरुदेव के आशीर्वाद एवं कृपा से, क्योंकि प्रत्येक साधना को सिद्ध करने का एक गुह्य सूत्र होता है जो गुरु परम्परा में ही मौखिक रूप से अथवा गुप्त रूप से आगे बढ़ता है, और वह मात्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं मिल सकता, यूं भी गुरु की तुष्टि ही साधना में पूर्णता का आधार होती है।

जो योग्य होते हैं, जिनकी सूक्ष्म बुद्धि होती हैं, वे शीघ्रता से अपना अहं त्याग कर, स्व को गुरुदेव में विसर्जित कर एवं व्यर्थ के द्वंद्वों व कुतर्कों से मुक्त हो, क्षणों को पकड़ते हुए तीव्रता से गुरु चरणों में अपने को लीन कर विभिन्न दीक्षाओं के माध्यम से इन समस्त आयामों को, स्थितियों को प्राप्त कर सकते हैं, यह प्राप्ति कोई वर्षों की बात नहीं है वरन् सत्यनिष्ठा पूर्वक पालन किये जाने पर मात्र पैंतीस दिनों में ही संभव है, मैं इस तथ्य का साक्षी भूत रहा हूं। ●

वही जमीन सांस लेती है गुरुदेव! जिस पर आप नाज से गुजरते हैं।

-अर्चना, बैंगलोर

कुछ चुने हुए

साबर वशीकरण मंत्र

जो गोली की तरह अपना असर दिखाते हैं

कलियुग में साबर मंत्र शीघ्र प्रभाव पूर्ण और तुरंत कार्य करने में समर्थ है, अन्य मंत्रों में जहां साधना विधियां, माला, यंत्र, पूजन, संस्कृत उच्चारण, विधि-विधान आदि कई जटिलताएं होती हैं, वहीं साबर विधान में ऐसा कोई प्रपंच नहीं होता, ये मंत्र सीधे सरल और शीघ्र प्रभावपूर्ण होते हैं, इनका असर भी तुरन्त और अचूक होता है, कभी-कभी तो इन मंत्रों के तुरंत प्रभाव को देखकर विश्वास नहीं होता कि इन मंत्रों में इतनी अधिक क्षमता और प्रभाव है।

प्राचीनकाल में राजा लोग साबर मंत्रों के माध्यम से अपने शत्रुओं को तो वश में करते ही थे, सुन्दर स्त्री या अन्य मन को भाने वाले पुरुषों को भी इन मंत्रों और क्रियाओं के माध्यम से वश में करने का प्रयत्न करते थे, इतिहास साक्षी है, कि उन्होंने अपने उद्देश्यों में सफलता पाई और कार्य सिद्ध किये।

ऐसे ही इतिहास से चुने हुए कुछ दृश्य और उसमें प्रयुक्त गोपनीय विधियों का पहली बार इस लेख में प्रकाशन किया जा रहा है, जिससे कि पाठक इन अमूल्य मणियों को सुरक्षित रख सके और इसका लाभ उठा सके।

जब समुद्रगुप्त ने संघमित्र का कीलन किया

समुद्रगुप्त अपने समय का प्रसिद्ध सम्राट और कुशल प्रशासक था, गुप्तकाल में इनका समय स्वर्णिम युग कहलाता है, समुद्रगुप्त ने अपने राज्य का विस्तार किया और चक्रवर्ती राजा कहलाया, परंतु प्रारंभिक दिनों में जब वे अपने राज्य का विस्तार कर रहे थे, तब उनके सामने समस्या संघमित्र को अपने अधीन बनाने की हुई क्योंकि उस समय संघमित्र भी अत्यधिक प्रभावशाली रणनीति विशारद, कुशल प्रबंधक और अद्वितीय सेनापति था, समुद्रगुप्त ने उसे अपना बनाने का आग्रह किया, धन दौलत से तोल देने का प्रस्ताव रखा, सुन्दर और कामुक स्त्रियों के द्वारा वश में करने का प्रयत्न किया परंतु संघमित्र दृढ़ निश्चय वाला और प्रभावशाली व्यक्तित्व था, उसने इन प्रस्तावों को एक ही झटके में ठुकरा दिया।

उन्हीं दिनों समुद्र गुप्त का परिचय एक प्रसिद्ध तांत्रिक से हुआ जो साबर विद्याओं का जानकार था, उसका नाम कृतवेणु था, समुद्रगुप्त ने सुदूर जंगल में उनकी कुटिया पर जाकर प्रार्थना की, कि मैं आपको अपना गुरु मानता हूं और मैं तब तक अपने जीवन में पूर्ण सफलता पा ही नहीं सक्ता, जब तक कि संघमित्र को अपना मित्र और सेनापति न बना लूं, परंतु वह किसी भी युक्ति से नियंत्रण में नहीं आ रहा है।

तब कृतवेणु ने **"वशीकरण साबर सिद्ध"** प्रयोग किया जो कि महत्वपूर्ण था और उसे सिद्ध कर कुछ पदार्थ समुद्रगुप्त को दिया, समुद्रगुप्त ने युक्ति से वह पदार्थ संघमित्र को खिला दिया और इतिहास के पन्ने सुरक्षित हैं कि उसी दिन शाम को संघमित्र स्वयं समुद्रगुप्त के घर पहुंचा और अपनी सेवाएं अर्पित की, उसके बाद वह जीवन भर समुद्रगुप्त का मित्र और विश्वासपात्र बना रहा, जिसके परिणाम स्वरूप समुद्रगुप्त इतनी ऊंचाइयों पर पहुंच सका।

वास्तव में ही **"वशीकरण साबर सिद्धि प्रयोग"** एक अत्यधिक गोपनीय और महत्वपूर्ण प्रयोग रहा है जो इने गिने लोगों को ही ज्ञात है, जिसका प्रभाव गोली की तरह असर करता है। कृतवेणु ने जिस प्रकार से प्रयोग किया वह निम्न प्रकार से है-

रविवार को प्रातः सूर्योदय के समय स्नान करके सफेद धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे काले कम्बल या काले ऊनी वस्त्र का आसन हो, सामने जमीन पर कुंकुम (रोली) से सात खड़ी लाईनें और सात आड़ी लाईनें खींच लें। इस प्रकार ३६ कोष्ठक बन जायेंगे, फिर प्रत्येक कोष्टक में कोई न कोई पदार्थ खाने योग्य रख दें, जैसे किसी में बादाम का एक टुकड़ा, किसी में काजू, अखरोट, दूध का प्रसाद, या कुछ भी, फिर उसके मध्य में मंत्र सिद्ध दुर्लभ "वशीकरण यंत्र" रख दें और उसके ऊपर सात लौंग तथा सात काली मिर्च के दाने रख दें, तत्पश्चात् वहीं बैठकर चारों ओर चार दिशाओं में तेल के दीपक लगा लें तथा हकीक माला से निम्न मंत्र की ग्यारह मालाएं फेरें।

मंत्र

सवा मलका भावना लोहे की जंजीर हाथी आवे झूमता, कमाल खां असवार, खड़े बोलो अर्ज करे गुर्ज पटके हौज हुई जाय अब की कवना मेरो करो, भंग का प्याला जाय पियो हिन्दू की राम कहे मुसलमान की कलमा मुहम्मद नाम पढ़े सत्तर काम तेरे, एक काम मेरा करके न बताये तो कसम है।

यह मंत्र दिखने में भले ही सीधा सादा हो पर इसका जितनी बार भी प्रयोग करेंगे उतनी ही बार आश्चर्यजनक परिणाम दिखायेगा, ग्यारह माला मंत्र जप करने के बाद वह यंत्र किसी चांदी या तांबे की डिब्बी में बंद करके अपनी जेब में रख ले, और उसके ऊपर जो सात काली मिर्च और लौंग रखे हुए थे, उसे चबाकर पानी के साथ निगल ले।

छत्तीस कोष्टकों में जो खाद्य सामग्री रखी हुई थी, वह किसी एक कटोरी में इकट्ठी कर ले और उसमें से थोड़ा सा प्रसाद किसी भी युक्ति से जिसे वश में करना हो, उसे खिला दे तो वह तुरंत वश में हो जाता है, तथा जीवन भर विश्वास पात्र बना रहता है, बाकी का खाद्य पदार्थ भी किसी डिब्बी में बंद करके रख देना चाहिए और जब-जब भी उसके व्यवहार में कुछ कमी अनुभव हो, तब-तब वह पदार्थ किसी युक्ति से उसे खिला दे तो वह पुनः नियंत्रण में बना रहता है।

यह प्रयोग पुरुष द्वारा किसी भी अन्य पुरुष या अधिकारी पर, शत्रु पर, या किसी भी मित्र पर किया जा सकता है, जिससे कि वह जीवन भर अनुकूल बना रह सके।

मंत्र जप के बाद कुंकुम या रोली से जो लकीरें खींची थीं, मिटा दे, और जमीन साफ कर लें।

जब मेहरुन्निसा ने अपने प्रेमी को जीवन भर के लिये वश में किया।

मुगल बादशाहों में मेहरुन्निसा सबसे अधिक सुन्दर और आकर्षक राजकुमारी थी, जब उसके शरीर में यौवन आया तो उसका अद्वितीय रूप निकल आया, जो भी देखता, देखता ही रह जाता, परंतु उस पर जरूरत से ज्यादा प्रतिबंध थे, बाहर जाने की तो सख्त मनाई थी ही, बिना बादशाह को पूछे उसे कोई मिल भी नहीं सकता था, स्त्री अंगरक्षकों के हाथों में नंगी तलवारें थीं, और उनका पहरा मेहरुसिन्ना के महल के चारों तरफ था।

परंतु मेहरुन्निसा एक युवक को अपना दिल दे बैठी थी, इतना सख्त पहरा होने के बावजूद भी उसने ऐसी युक्ति निकाल ली थी, कि दो तीन घण्टे अपने प्रेमी से मिल सकती थी, उसकी अभिन्न सहेली नूर इस मामले में अत्यधिक चतुर थी, उसने उस युवक को मेहरुन्निसा का सन्देश कई बार दिया, यद्यपि उस युवक को कोई भय नहीं था, वह बहादुर था, और अपनी बहादुरी का प्रमाण उसने कई बार दिया था, परंतु उसके मन को जीतना आसान नहीं था, नूर के द्वारा लाये हुए प्रस्ताव को उसने बेरहमी से ठुकरा दिया।

यह देखकर मेहरुन्निसा का दिल टूट गया, इसके बाद भी उसने कई प्रयत्न किये, कई संदेश भिजवाये, पर उस युवक का दिल पसीजा ही नहीं।

उन्हीं दिनों यास्मीन नाम की एक बुढ़िया मेहरुन्निसा के सम्पर्क में आई, तो नूर ने सारी बात यास्मीन को बताई, यास्मीन ने कहा, एक फकीर मेरी नजर में है, और वह इससे संबंधित फन का माहिर है, वह यदि **"वशीकरण प्रयोग"** कर दे तो पत्थर भी वश में हो जाता है, और आंचल से बंधा बंधा पीछे चला जाता है।

मेहरुन्निसा ने कहा यदि ऐसा हो जाय तो मैं तुझे मोतियों से तोल दूंगी, तू ऐसा ही कुछ उपाय कर।

यास्मीन उस समय के प्रसिद्ध फकीर नबीउल्लाह के पास गई और कहा कि मुझे ऐसा वशीकरण करवाना है, जो जीवन भर साथ बंधा रह सके, और जिसका प्रभाव तुरंत हो।

नबी ने वशीकरण काजल तैयार किया और यास्मीन को दे दिया, मेहरुसिन्ना ने अपनी आंखों में वह काजल लगाया और बताये हुए तरीके से काम किया, शाम को जब नूर सन्देशा लेकर उस युवक के पास गई तो युवक ने एक क्षण सोचा और उसके साथ चला आया, उसके बाद उस युवक ने प्रेम की जो मिसाल कायम की, वह इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखी गई इबारत है।

नबी ने जो प्रयोग किया था, वह गोपनीय रहा है, परंतु पत्रिका पाठकों को उस गोपनीय प्रयोग का उद्घाटन पहली बार इन पन्नों पर कर रहा हूं-

शुक्रवार के दिन काजल की डिबिया बाजार से मंगवा लें या घर में काजल बना लें, फिर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जायं, नीचे लाल आसन बिछा लें, और जो प्रयोग कर्ता हो वह लाल धोती पहन ले, यदि कोई स्त्री या प्रेमिका प्रयोग करना चाहे तो लाल साड़ी पहन कर बैठे फिर सामने एक थाली में उस काजल से "रहीम जोखन्त" लिख ले, यह थाली के मध्य में लिखे, फिर उसके ऊपर नूरानी यंत्र और वह काजल की डिबिया रख दे तथा हकीक माला से नीचे लिखे मंत्र की तीन मालाएं फेरे।

मंत्र

मां बादशाह सब बादशाहों के बादशाह सफेद घोड़ा सफेद पाखर जिस पर चढ़े जिन्नों के बादशाह बारह कोस अगाड़ी बारह कोस पिछाड़ी जो कुछ काम कहूं बजा लेवे, मेरी शक्ति गुरु की भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र की तीन माला मंत्र जप करे, मंत्र जप करने के बाद वह यंत्र किसी डिब्बी में बंद कर अपनी जेब में रख दे और प्रेमिका अपनी आंखों में वह काजल लगा ले, फिर वह खुद या उसकी सहेली या कोई अन्य व्यक्ति उसी काजल की एक अंगुली भर कर प्रेमी के शरीर पर या उसके पहने हुए कपड़े पर चुपके से लगा ले, ऐसा होते ही प्रेमी का मानस बदल जाता है, और उसे चौबीस घंटे वह प्रेमिका ही दिखाई देती है, जिसने अपनी आंखों में काजल लगाया है, और वह उसके वश में हो जाता है।

जब उस प्रेमी का मन कुछ समय बाद भटकने लगे, तब फिर वह काजल अपनी आंखों में लगावे और थोड़ा काजल उसके शरीर पर या कपड़े पर किसी युक्ति से लगा ले, इससे वह प्यार मजबूत से मजबूत बना रहता है।

मेहरुन्निसा ने ऐसा ही किया और जीवन भर के लिये उसने अपने प्रेमी को वश में कर लिया।

आज भी यह प्रयोग उतना ही महत्वपूर्ण और सिद्धिदायक है, इसे कई बार आजमाया है, और प्रत्येक बार सफल रहा है।

जब मोहम्मद ने प्रेमिका का दिल जीत लिया

मोहम्मद शाह इतिहास का चर्चित और मस्त स्वभाव का व्यक्तित्व था, जिसने अपने जीवन में जो चाहा वही प्राप्त किया, जब मोहम्मद शाह युवक था, तभी उसका आशिक मन एक बादशाह की बेटी हीना पर आ गया था, हीना उस युग की सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय सुन्दरी थी, बूटा सा कद चंचल हिरणी की तरह आंखें और उमड़ते समुद्र की तरह सीना, शराब से मादक उसकी जवानी और रति का दूसरा स्वरूप ही हीना थी, परंतु उसके पिता दमखम वाले और तलवार के धनी थे, हीना को भी सुन्दरता और जवानी का घमण्ड था, मोहम्मद शाह का प्रस्ताव उसने ठुकरा दिया, मोहम्मद शाह ने निश्चय कर लिया कि मैं हर हालत में इस हीना को पाकर रहूंगा, परंतु न ताकत के बल पर वह अपने उद्देश्य में सफलता पा सकता था, और न धन दौलत के लालच पर, जब उसके सारे प्रयत्न निष्फल हो गये तो उस समय के साबर विद्याओं के जानकार फकीर मकूक से मिलने उसके घर गये, और हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि यों तो मैं युवराज हूं, आने वाले समय का बादशाह हूं, परंतु मैं एक सुन्दरी को अपना दिल दे बैठा हूं, जब तक वह मुझे मिलेगी नहीं मुझे शकून प्राप्त नहीं होगा, सब ओर से थक हार कर आपकी शरण में आया हूं, और मुझे हर हालत में हीना को प्राप्त करना ही है, आप कुछ ऐसा मंत्र पढ़ें या कुछ उपाय करें जिससे कि पहली बार में ही मुझे हीना का दिल मिल जाय।

फकीर मकूक ने युवराज को आश्वस्त कर बिदा किया और वशीकरण प्रयोग कर खाने की वस्तु दी और पहली ही बार में मोहम्मद शाह ने हीना को अपना बना लिया।

मकूक उस जमाने का साबर विद्याओं का अद्वितीय जानकार था, उसके पास वशीकरण के ऐसे-ऐसे प्रयोग

थे, कि जो बन्दूक की गोली की तरह अपना प्रभाव दिखाते थे, उसने जो विधि की थी वह इस प्रकार है-

किसी शुक्रवार के दिन कांसे की या स्टील की थाली के बीचोबीच केशर से या कुंकुंम से "क्रीं क्रीं क्रीं" लिख लो फिर इसके मध्य में "क्रीं यंत्र" रख दे, और दोनों ओर एक-एक "क्रं" सिद्ध ताबीज रख दे, प्रत्येक सिद्ध ताबीज सात पर लौंग और सात इलायची रख दे, फिर सामने हकीक माला से मंत्र जप कोई भी व्यक्ति या खुद प्रेमी दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठकर लाल धोती पहन कर तीन माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ सकल कामिनी आठा अठा शूल मकाला पाजल अन्चाल ॐ ठं ठं ठं।

अपने पास ३३ गुलाब के पुष्प भी रखे और प्रत्येक माला पूरी होने पर ग्यारह गुलाब के पुष्प यंत्र पर चढ़ा दे, इस प्रकार तीन माला पूरी होने पर ३३ गुलाब के पुष्प यंत्र पर चढ़ा दे।

इस प्रकार जब पूरा मंत्र जप हो जाय, तब गुलाब के पुष्पों को तो बाहर जमीन में गाड़ दे और एक ताबीज पर रखी हुई इलायची या लौंग को किसी युक्ति से अपनी प्रेमिका को खिला दे, ऐसा करने पर वह प्रेमिका जिन्दगी भर के लिये वश में हो जाती है, और कभी-भी यह प्रयोग निष्फल नहीं जाता।

इसी प्रयोग से मोहम्मद शाह ने हीना को अपने वश में किया था, और वह हीना जीवन भर के लिये उसकी बनी रही।

वस्तुतः इतिहास इन प्रामाणिक घटनाओं से भरा पड़ा है, परंतु ये विधियां और मंत्र लुप्त हो गये हैं, इन प्रयोगों को साधकों प्रेमियों ने आजमाया है, और उन्हें हर बार सफलता मिली है, इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि प्रयोग में जो भी सामग्री प्रयुक्त की जाय वह असली प्रामाणिक और मंत्र बद्ध हो।

वस्तुतः साबर मंत्र एक महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली प्रयोग है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।

कुछ वशीकरण मंत्र

जब सब प्रयोग असफल हों तब यह करें।

यदि शुद्ध सात्विक भाव से कार्य साधन के लिये वशीकरण प्रयोग किया जाय तो उचित है, ऐसे ही कुछ रामबाण वशीकरण प्रयोग आप आजमा सकते हैं...

यदि कोई स्त्री या प्रेमिका वश में नहीं होती हो, तो यह रामबाण प्रयोग है, और इससे सफलता मिलती है।

'वशीकरण गुटिका' लेकर शुक्रवार के दिन उस पर चंदन, कुंकुम और सिंदूर बराबर मात्रा में लेकर लगा दें, फिर निम्न मंत्र की एक माला फेरे, इसमें **'वशीकरण माला'** का ही प्रयोग होता है, माला पूरी होने पर वशीकरण गुटिका पर लगाया हुआ सिन्दूर, चंदन कुंकुम को परस्पर मिलाकर अपने ललाट पर बिन्दी लगा ले और जेब में वशीकरण गुटिका रख दे।

इसके बाद वह सम्बंधित प्रेमिका के सामने जावे तो वह जीवन भर के लिये वश में हो जाती है, यदि यह संभव न हो तो उसका फोटो सामने रखकर उसे प्रेम से देखे तब भी वह स्त्री वश में हो जाती है।

मंत्र

ॐ कामदेवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तम्भय मोहय मोहय वशमानय स्वाहा।

इसमें 'अमुकस्य' के स्थान पर उस प्रेमिका का नाम उच्चारण करे जिसे वश में करना हो।

इससे तो पत्थर भी वश में हो जाता है

यदि कोई पुरुष या प्रेमी वश में नहीं होता, प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो तो यह प्रामाणिक प्रयोग है, और इससे सफलता मिलती है।

मंत्र सिद्ध वश्य गुटिका शुक्रवार के दिन अपने सामने रखे और उस पर सिन्दूर, कुंकुम तथा चंदन को बराबर मिलाकर पानी मिलाकर गाढ़ा सा लेप करके उस गुटिका पर लगा दे और फिर वश्य माला से १०८ बार निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं मम अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा।

इसमें अमुकं के स्थान पर प्रेमी के नाम का उच्चारण करना चाहिए, मंत्र जप के बाद माला गले में धारण कर ले और वश्य गुटिका पर लगे हुए लेप से अपने ललाट पर बिन्दी लगा ले और फिर वह प्रेमी से मिले तो निश्चय ही वह जीवन भर के लिये वश में हो जाता है यदि प्रेमी उपलब्ध नहीं हो तो उसके फोटो के सामने प्रेम से देखे तो भी वशीकरण प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, और वह वश में हो जाता है।

यह प्रयोग सिद्ध है, और कई बार आजमाया हुआ है।

पति वशीकरण प्रयोग:

यदि पति का मन भटक गया हो, किसी दूसरे स्त्री में आसक्त हो गया हो या उससे प्यार नहीं मिलता हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलतादायक है।

दो हकीक पत्थर लेकर उस पर गोरोचन से पति का नाम लिखकर सूर्योदय के समय पूर्व की ओर घर के बाहर फेंक दे तो पति का वशीकरण हो जाता है।

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

आजकल जैसी सामाजिक विवशताएं बन गई हैं, उससे पराये घर में लड़की भेजने में सौ-सौ आशंकाएं मन में व्याप्त होती हैं, कन्या को ससुराल में जाकर दुःख तो नहीं मिलेगा, कहीं पति पत्नी में जल्दी ही मतभेद तो नहीं हो जायेंगे, कहीं कन्या को मार तो नहीं देंगे ऐसी आशंकाएं मन में होनी स्वाभाविक है, ये आशंकाएं कन्या के पिता और स्वयं कन्या के मन में बनी रहती है।

मुझे एक उच्च कोटि के साबर मंत्रों के सिद्ध व्यक्ति से ऐसा महत्वपूर्ण प्रयोग हाथ लगा था, कि इस प्रयोग को करने पर ये सारी आशंकाएं निर्मूल हो जाती हैं, और लड़की को ससुराल भेजने के बाद भी किसी प्रकार की कोई अड़चन या बाधा नहीं आती, वह पूर्ण सुरक्षित रहती है, और उसका गृहस्थ जीवन सुखमय, आनन्दमय बना रहता है, और वह पति की प्यारी रहती है।

यह प्रयोग किसी भी दिन सुबह करना चाहिए, स्वयं कन्या या कन्या का कोई भी संबंधी स्नान कर बैठ जाय और 'पूर्ण गृहस्थ सुख' यंत्र' अपने सामने रख दे तथा उस पर केशर का तिलक कर दे, यह यंत्र ताबीज के आकार का होता है, तथा मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, फिर एक घंटे तक निम्न मंत्र का जप करे।

मंत्र

ॐ श्रीं अमुकं गृहस्थ सुख पूर्ण सुख सौभाग्यं देहि ह्रीं नमः।

यद्यपि यह मंत्र संस्कृत में दिखाई देता है, पर यह साबर प्रयोग है, एक घंटे के बाद उस यंत्र को कन्या के गले में धागे से बांध देना चाहिए, विवाह के बाद वह बालिका इस यंत्र को पहिने रह सकती है, अथवा अपने सन्दूक में कपड़ों के बीच रख सकती है, ऐसा करने पर निश्चय ही उसका पूरा गृहस्थ जीवन अत्यधिक सुखदायक और मधुर बना रहता है।

इस मंत्र में 'अमुकं' के स्थान पर उस कन्या का नाम कहना चाहिए।

मनोवांछित पति की प्राप्ति के लिये

यदि किसी लड़के से प्यार चल रहा हो, और उसके साथ विवाह होने में बाधा आ रही हो, लड़की वालों की तरफ से या लड़के के घर वालों की तरफ से अड़चनें डाली जा रहीं हों, तो यह प्रयोग आजमाना चाहिए, इससे बाधाएं और विरोध समाप्त हो जाता है, और उसी लड़के से विवाह होने के अवसर बढ़ जाते हैं, जिससे वह विवाह करने की इच्छुक है।

रविवार के दिन भोजपत्र पर कुंकुंम या केशर से निम्न यंत्र बनावे और यंत्र के ऊपर अपना नाम तथा यंत्र के नीचे उस लड़के का नाम लिखे जिससे वह विवाह करना चाहती है।

फिर उस यंत्र पर **'प्रिय आकर्षण गुटिका'** रखकर निम्न मंत्र की तीन मालाएं फेरें-

मंत्र

ॐ नमो नमो वीर वेताल लाल मोतियों का हार लंका सो कोट समुद्र सी खाई चलो चौकी राजा रामचन्द्र की आई मन चाहा वर मिले नहीं तो हनुमान का चक्र गिरे।

तीन माला मंत्र जप के बाद उसी भोजपत्र में वह गुटिका लपेट कर किसी सार्वजनिक स्थल या सड़क पर वह भोजपत्र और गुटिका चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और जिससे वह विवाह करना चाहती है, उसी के साथ विवाह हो जाता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चित ही सफलतादायक है।

मनोवांछित पत्नी की प्राप्ति के लिए

जिस लड़की से आपके प्रेम संबंध है, और सामाजिक बंधनों या कुछ विशेष कारणों से उसी लड़की से विवाह होने में अड़चन आ रही हो या परिवार में विरोध बढ़ रहा हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलता देने वाला है।

भोजपत्र पर केशर से यह यंत्र लड़का खुद शुक्रवार के दिन बनावे और ऊपर खुद का नाम तथा यंत्र के नीचे उस लड़की का नाम लिखे, फिर इस यंत्र के मध्य में 'प्रिया आकर्षण गुटिका' रखकर निम्न मंत्र की तीन मालाएं हकीक माला से फेरे।

मंत्र

ॐ नमो महींदर पीर आप बड़े गुणी गिरनार से उठे सब कुछ करे मेरी प्रिया मुझे मिलावे बाधा हटावे जो न करे तो गंगा जमना की धार उल्टी बहे।

तीन माला मंत्र जप के होने बाद उसी भोजपत्र में वह गुटिका लपेट कर उसी दिन किसी सार्वजनिक या सड़क पर चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और जिससे वह विवाह करना चाहता है, उसी के साथ शीघ्र ही विवाह करने के आसार बन जाते हैं, अर्थात् अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है।

यह प्रयोग उत्तम कोटि का पूर्ण सफलतादायक है।

इच्छानुसार 'हां' भरने के लिए

प्रेमी या प्रेमिका में से कोई एक शादी करने का इच्छुक हो परंतु प्रेमी की तरफ से या प्रेमिका की तरफ से स्वीकृति नहीं मिल रही हो अथवा इन दोनों में से किसी का मन बदल गया हो तो यह प्रयोग करने पर उसके विचार अनुकूल बन जाते हैं और जैसा चाहते हैं, वैसी स्वीकृति मिल जाती है।

यदि लड़की का मन बदल गया हो और विवाह के लिये 'हां' नहीं भर रही हो तो यह प्रयोग लड़के को करना चाहिए, इसी प्रकार लड़के का मन बदल गया हो और विवाह के लिये राजी नहीं हो तो यह प्रयोग लड़की को करना चाहिए।

शुक्रवार की रात अपने सामने 'हाजिरा पीर चौकी' रख दे यह चांदी के ताबीज के आकार की होती है, और विशेष साबर मंत्रों से सिद्ध होती है, फिर इसके सामने बैठकर हकीक माला से निम्न मंत्र की पांच माला फेरे।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को वज्र किवाड़ बांधे दसों द्वार को बांधे उलट वेद बही को उछाले पहली चौकी हनुमान की, दूसरी भैरव की कारज सिद्ध करे हां भरे कइयो करे जो न करे तो नृसिंह की आण।

इस प्रकार पांच माला पूरी होने के बाद वह चौकी अपनी जेब में रख दे, और दूसरे दिन किसी युक्ति से उस प्रेमी या प्रेमिका के शरीर से स्पर्श करा ले, ऐसा होने पर उसका मन बदल जाता है, और वह हां भर लेता है, यदि वह स्वयं उपस्थित न हो तो उसकी फोटो के साथ यह चौकी बांध दे, तब भी कुछ दिनों के भीतर-भीतर उसकी तरफ से 'हां' प्राप्त हो जाती है।

यह महत्वपूर्ण प्रयोग है, और इससे निश्चय ही कार्य सिद्ध होता है।

प्रेमी-प्रेमिका से प्रेम बढ़े

यदि प्रेमी-प्रेमिका के परस्पर संबंध रहे हों और किसी कारणवश प्रेमी का मन बदल रहा हो या प्रेमिका के मन में फर्क आ रहा हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, यदि प्रेमिका के स्वभाव या विचारों में अन्तर आया हो तो यह प्रयोग निश्चित रूप से प्रेमिका को करना चाहिए।

रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में 'आकर्षण मुद्रिका' रख दे और उसके सामने हकीक माला से निम्न मंत्र से तीन मालाएं फेरे इस प्रकार पांच दिन तक करे।

मंत्र

ॐ नमो अनंग नमो रानी रति नमो बावन पीर चौसठ भैरू नमो देव-दानव नमो अनंगपाल मेरो कारज सिद्धि करो अमुक को मेरे वश में करो जो मैं कहूं वो करे आज्ञा माने वश में करे।

इसमें 'अमुक' के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसे वश में करना हो।

पांचवे दिन प्रयोग समाप्त कर एक मुद्रिका किसी भी हाथ की किसी भी अंगुली में धारण कर ले और फिर वह प्रेमी या प्रेमिका के सामने जावे तो उस अंगूठी पर नजर पड़ते ही उसका मन वशीकरण युक्त हो जाता है, और जिस प्रकार से हम चाहें वह करने लग जाता है।

यह प्रयोग प्रामाणिक है, और आजमाया हुआ है, इसका वार कभी भी खाली नहीं जाता।

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

यदि प्रेमी-प्रेमिका परस्पर विवाह करने की इच्छुक हों और दोनों की रजामंदी हो परंतु किसी वजह से लड़की के घर वाले या लड़के के घर वाले अथवा दोनों के परिवार वाले रजामंद न हों तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और ऐसा प्रयोग करने पर घर वालों के मन बदल जाते हैं तथा वे विवाह के लिये हां भर लेते हैं।

यह प्रयोग प्रेमी या प्रेमिका में से किसी एक को करना चाहिए, शुक्रवार के दिन स्नान कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने दो मुट्ठी सरसों तथा दो गोमती चक्र रख दें फिर लोबान धूप लगा दें तथा हकीक माला से निम्न मंत्र की तीन मालाएं फेरें-

मंत्र

बिसमिल्ला मेहमंद पीर आवे घोड़े की असवारी पवन को वेग मन को संभाले अनुकूल बनावे हां भरे कहियो करे मेहमंद पीर की दुहाई सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा

तीन माला मंत्र जप के बाद दो पुड़ियां बनावे, एक पुड़िया में एक मुट्ठी सरसों तथा एक गोमती चक्र तथा दूसरी पुड़िया में भी रखे सरसों में से एक मुट्ठी सरसों तथा गोमती चक्र बांध दे और फिर एक पुड़िया और गोमती चक्र लड़की के घर में स्वयं लड़की किसी स्थान पर डाल दे इसी प्रकार दूसरी पुड़िया लड़का स्वयं अपने घर में किसी स्थान पर डाल दे तो दोनों परिवार वालों के मन अनुकूल हो जाते हैं और विवाह के लिये स्वीकृति दे देते हैं।

यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण और निश्चय ही सफलता देने वाला है।

◆◆◆

जैन साहित्य

में

साबर-प्रयोग

जैन ग्रंथों में सैकड़ों सिद्ध साबर प्रयोग हैं, जो उनके आजमाये हुए हैं उनमें से कुछ प्रयोग आगे के पन्नों पर प्रस्तुत हैं.....

साबर प्रयोग अपनी विविधता और अचूकता के लिये विख्यात है, इनका प्रभाव तुरंत और शीघ्र होता है, जैन साहित्य में भी साबर मंत्रों पर विशेष ध्यान दिया है और इस बात को स्वीकार किया है कि ये मंत्र दिखने में भले ही सीधे-सरल और सामान्य प्रतीत होते हों परंतु इनका अचूक प्रभाव होता है।

पूरे जैन साहित्य में सैकड़ों हजारों उदाहरण दिए गये हैं जिससे यह पता चलता है कि उच्च कोटि के योगियों, यतियों और मुनियों ने साबर मंत्रों के माध्यम से समाज का दु:ख दूर किया है और उनके कार्य सुधारे हैं, कई बार इन प्रयोगों को आजमाया है और प्रत्येक बार ये प्रयोग सफल सिद्ध हुए हैं।

नीचे मैं जैन साहित्य में से कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहा हूं जो कई बार आजमाये हुए हैं और जिनका असर प्रत्येक बार प्रामाणिकता के साथ सफल अनुभव हुआ है।

व्यापार लाभ प्रयोग

व्यापार वृद्धि, बिक्री बढ़ाने और निरन्तर लाभ होने के लिये इस प्रयोग को प्रामाणिक बताया है, बुधवार के दिन अपने सामने 'गुटिका' किसी पात्र में रख दे और उसके सामने विजय माला से २१ माला मंत्र जप करे। इस प्रकार केवल तीन दिन प्रयोग करे, मंत्र पढ़ते समय सफेद धोती पहने, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, अपना मुंह पूर्व दिशा में रखे।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्योयं अर्हं नम:।

जब तीन दिन प्रयोग समाप्त हो जाय तब वह विजय माला गले में धारण कर ले और वह सिद्ध की हुई 'गुटिका' दुकान में या गल्ले में अथवा जहां पर रुपये पैसे रखते हैं, वहां पर रखे तो व्यापार निरन्तर बढ़ता ही रहता है, लक्ष्मी समुद्र से उत्पन्न हुई थी, समुद्र फेन भी लक्ष्मी का ही प्रतीक माना गया है, अत: उस पर यह प्रयोग प्रामाणिक रहता है, विजय माला में एक मनका स्फटिक दूसरा रुद्राक्ष तीसरा मूंगा का होता है, इस प्रकार से पूरी माला गूंथी हुई होती है।

वस्तुत: प्रत्येक व्यापारी बंधु को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

रोग नाशक प्रयोग

घर में किसी को बुखार आ गया हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि घर में कोई न कोई रोगी बना रहता हो, रोग पर बराबर चर्चा होती रहती हो और रोग नियंत्रण में नहीं आ रहा हो या बीमारी से परेशान हो गया हो तो यह प्रयोग अचूक माना है।

किसी भी शुक्रवार को अपने सामने तीन मूंगे के टुकड़े रख दे, जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, फिर इस पर जल धार चढ़ावे और फिर

दूध से धोकर फिर जल चढ़ावे, जल चढ़ाते समय निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करे, इसके बाद मूंगे के टुकड़े निकाल कर अलग रख दे, और वह दुग्ध मिश्रित जल पूरे घर में छिड़क दे तथा एक चम्मच रोगी को पिला दे।

इस प्रकार मात्र तीन दिन प्रयोग करे तो घर से बीमारी हमेशा-हमेशा के लिये चली जाती है, और रोगी को तुरन्त आराम मिलता है।

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और महत्वपूर्ण है।

आत्म रक्षा प्रयोग

आजकल चारों तरफ शत्रु और विरोधी बढ़ गये हैं, न मालूम कब कौन हमला कर दे, अथवा कोई तांत्रिक प्रयोग कर दे तो जीवन बरबाद हो सकता है।

इसकी रक्षा के लिये आत्म रक्षा प्रयोग है, जिसका भी समाज में नाम है, या जिसके पास भी धन-दौलत है, उसको नित्य यह प्रयोग कर देना चाहिए, इसमें 'आत्म रक्षा गुटिका' अपने सामने रखकर मात्र ग्यारह बार मंत्र उच्चारण कर वह गुटिका पुनः अपने स्थान पर रख दे, तो रक्षा प्रयोग का प्रभाव चौबीस घंटे रहता है, यह गुटिका मंत्र सिद्ध होनी चाहिए, और इसे यात्रा के समय या बाहर जाते समय अपने साथ ले जा सकते हैं, इसमें केवल ग्यारह बार मंत्र जप ही पर्याप्त हैं।

मंत्र

पढम् हवई मंगलं व्रजमह शिलामस्तकोपरिणमो अरहंताण अंगुष्ठयोः णमा सिद्धाणं तर्जन्योः णमो आयरियाण मध्यमो णमोउवज्झायाणं अनामिकयो णमो लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः एसो पंच णमोकारो व्रजमइ प्राकारं, सव्वपावप्णासणे जलभृतरवातिका मंगलाण च सव्वेसिं खादिरांगार पूर्ण खातिका।

वस्तुतः इस मंत्र का एक दो बार उच्चारण करना भी सिद्धिदायक माना गया है।

मनोकामना सिद्धि

हमारे सामने नित्य कई समस्याएं और कार्य उपस्थित होते हैं, जिनके सम्पन्न होने से प्रसन्नता और अनुकूलता प्राप्त होती है, परंतु ऐसे कार्यों की सम्पन्नता में बाधाएं भी आती हैं, यदि घर से यह प्रयोग करके निकले तो निश्चय ही उसका सोचा हुआ कार्य सफल होता ही है।

प्रातः उठकर सफेद आक के बने हुए गणपति के सामने मात्र ग्यारह बार इस मंत्र का उच्चारण कर ले, और प्रार्थना करे कि यह कार्य आज मेरा सिद्ध हो जाय, गणपति के सामने गुड़ का भोग लगा दे, फिर कार्य के लिये घर से निकल जाय तो वह कार्य अवश्य ही सफल होता है, गुड़ का जो भोग लगाया हुआ है, वह घर में या बाहर बांट दें।

मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः।

वस्तुतः यह सिद्ध प्रयोग है, श्वेतार्क गणपति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते हैं, परंतु मंत्र सिद्ध गणपति प्राप्त हो जाय, तो जरूर घर में स्थापित कर लेने चाहिए क्योंकि यह प्रयोग कई-कई पीढ़ियों के लिये सहायक बने रहते हैं।

५-नवग्रह अरिष्ट निवारक प्रयोग

ग्रहों का प्रभाव होता ही है, मगर जैन साहित्य में एक ऐसा भी प्रयोग है, जिससे किसी भी प्रकार के ग्रह का दोष समाप्त हो जाता है, और उसका अशुभ फल मिटकर वह शुभ फल देने लग जाता है।

ताम्रपत्र पर अंकित नवग्रह यंत्र को अपने सामने रख दे और निम्न मंत्र की एक माला फेरे, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करने से छः महीने तक अशुभ ग्रहों का दोष व्याप्त नहीं होता, छः महीने के बाद ग्यारह दिन का पुनः प्रयोग किया जा सकता है।

यों यदि व्यक्ति चाहे तो नित्य ग्यारह बार इस मंत्र का उच्चारण कर दे, तब भी उसके जीवन में ग्रहों की अशुभ बाधा व्याप्त नहीं होती।

मंत्र

सूर्य मंगल-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं

चन्द्रमा शुक्र-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं

बुध बृहस्पति-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

शनि राहु-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

वस्तुतः यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और नवग्रह यंत्र के सामने यदि नित्य ग्यारह बार उच्चारण किया जाय, तो उसके सारे काम सफल होते रहते हैं, और किसी प्रकार की कोई अड़चन या बाधा नहीं आती।

६. फौजदारी दीवानी मुकदमा निवारण प्रयोग

नहीं चाहते हुए भी कई बार मुकदमों में उलझना पड़ता है, और ऐसी स्थिति में जीतना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है, यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, मुकदमें के दिन **"विजय यंत्र"** के सामने निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् १०८ बार उच्चारण करके जावे तो निश्चय की उसके हक में ही निर्णय होता है, उस दिन जो भी बहस होती है, वह भी उसके हक में ही होती है, इससे मुकदमें के जीतने के आसार बढ़ जाते हैं, शत्रु या विरोधी पक्ष परास्त हो जाता है, वह या तो समझौता कर लेता है या अपनी हार मान लेता है।

इस माह की विशेष दीक्षा

गुरुदेव का कार्यक्रम

- **इस माह गुरुदेव ११-३-९३ से २०-३-९३ तक दिल्ली-गुरुधाम में ही निवास करेंगे।**
- **इस अवधि में कोई भी साधक गुरुधाम आकर इस माह की विशेष दीक्षा "साबर-मंत्र पूर्णत्व दीक्षा"-प्राप्त कर साधनाओं में पूर्ण सिद्धि की ओर अग्रसर हो सकता है।**
- **इसके अलावा अन्य दीक्षा के इच्छुक साधक भी दिल्ली गुरुधाम-टेलीफोन-०११-७१८२२४८ पर सम्पर्क कर सकते है।**

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी कार्यसिद्ध विजयं देहि देहि स्वाहा।

यह प्रयोग पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

७. वशीकरण प्रयोग

पहले दो दिन उपवास करे और तीसरे दिन फूल पर १०८ बार मंत्र बोलकर वह फूल या पुष्प जिसको भी दे वह वश में हो जाता है।

मंत्र

ॐ नमो भगवउ अरहउ महाविद्या वशीकरण भगवउ ठ: ठ: ठ: स्वाहा।

वस्तुत: यह सरल और सुविधाजनक प्रयोग है और इसको आजमाया जा सकता है।

८. परीक्षा में पास होने का प्रयोग

'सरस्वती यंत्र' के सामने यदि नित्य एक माला मंत्र जप करे और फिर परीक्षा दे तो वह परीक्षा में पास होता है अथवा नित्य इस मंत्र की एक माला फेरे तो वह जो भी पढ़ता है उसे कंठस्थ हो जाता है और वह भूलता नहीं।

मंत्र

ॐ ह्रीं नम:

वस्तुत: यह मंत्र विद्यार्थियों के लिये और किसी भी प्रकार की प्रतियोगी या विभागीय परीक्षा देते समय विशेष रूप से उपयोगी है, यह आवश्यक है कि यह मंत्र जप ***सरस्वती यंत्र*** के सामने ही किया जाय जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

९. स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग

ऐसी कई समस्याएं या प्रश्न विचारणीय होते हैं जिनके बारे में तुरंत निर्णय लेना होता है।

इस प्रयोग में रात्रि को पलंग पर बैठकर अपना प्रश्न कागज पर लिखकर तकिये के नीचे रख दे और फिर पलंग पर बैठे-बैठे ही २१ बार इस मंत्र को पढ़कर सो जाय तो रात्रि को स्वप्न में उस प्रश्न का शुभाशुभ दिखाई दे जाता है, और उसके अनुसार कार्य करने पर सफलता मिलती है।

मंत्र

ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा

वस्तुत: यह जीवन में आजमाया हुआ प्रयोग है, और इससे जटिल प्रश्नों के उत्तर आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

१०. दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रयोग

मंगलवार को **'सर्व सौभाग्य यंत्र'** जो कि ताबीज के आकार का होता है, अपने सामने रखकर उस पर केशर लगाकर निम्न मंत्र की एक माला फेरे, इस प्रकार नौ दिन करे, दसवें दिन उस ताबीज को धागे में या चैन में पिरोकर गले में धारण कर ले तो दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है।

मंत्र

ऐं क्लीं ह् सौं कुण्डलिनी नम:

यह प्रयोग सैकड़ों लोगों ने आजमाया है, और प्रत्येक को सफलता मिली है, वस्तुत: यह प्रयोग शीघ्र सिद्धिप्रद है।

११. किसी भी प्रकार का जहर उतारने का प्रयोग

चाहे बिच्छू या सांप ने काटा हो और जहर चढ़ गया हो, तो उस काटे हुए स्थान पर हाथ फेरते हुए इक्कीस बार इस मंत्र को पढ़कर फूंक देने से जहर उतर जाता है।

मंत्र

ॐ चण्डे फु:

वस्तुत: इस प्रयोग को आजमाना चाहिए और समाज के उपयोग के लिये प्रयोग करना चाहिए।

गुरुधाम : दिल्ली

टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

कुण्डलिनी सिद्धि साधना

१-४-९३ सायं ४ से ६

जीवन में कुण्डलिनी का उत्थान पूर्णता: का सूचक है, इसबार इस साधना सत्र में ''मंत्रात्मक कुण्डलिनी साधना ''सम्पन्न होगी जो कि प्रत्येक साधक के लिए सौभाग्य दायक कही जा सकती है।

एक दुर्लभ एवं अद्वितीय साधना

१२. गर्भ पतन न होने का प्रयोग

जिन स्त्रियों के शीघ्र प्रसव हो जाता है, या कुछ महीनों में ही बच्चा उतर जाता है या गिर जाता है, तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **''गर्भ रक्षा यंत्र''** को मंगलवार के दिन लाल धागे में निम्न मंत्र बोलते हुए २१ गांठ लगावे, बीच में उस ताबीज को पिरो दे, फिर वह धागा कमर में बांध दे तो उसका गर्भ-पतन नहीं होगा, नौ मास पूरे होने पर सुखपूर्वक पुत्र उत्पन्न होने के बाद ही उस डोरे को खोलकर नदी या तालाब में विसर्जित करना चाहिए।

मंत्र

ॐ पद्म पादीव ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रां फट्।।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और पूर्ण प्रंभावयुक्त है।

१३. स्त्री वशीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और सरसों लेकर ६० बार मंत्र पढ़कर जिसके माथे पर डाले तो वह स्त्री निश्चय ही वश में होती है, यह प्रयोग आजमाया हुआ है।

मंत्र

ॐ जलि पाणि उंतालि फट् स्वाहा।

वस्तुत: यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

१४. पुरुष वशीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और पुरुष के पैर की धूल या कंकर हाथ में लेकर साठ बार मंत्र बोलकर वह गुटिका और धूल पुरुष पर डाले अथवा जमीन में गाड़ दे तो निश्चय ही वह पुरुष जीवन भर वश में रहता है।

मंत्र

ॐ नमो भगवते वशं करि स्वाहा।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चय ही इसमें सफलता प्राप्त होती है।

पूर्ण पुरुष प्रयोग

यदि पुरुषत्व में कमजोरी हो या काम कला में सक्षमता अनुभव न होती हो तो यह प्रयोग पूर्ण सिद्धिदायक है।

'शुक्र गुटिका' जो कि ताबीज के आकार की होती है, लेकर शुक्रवार के दिन काले धागे में पिरो लें और फिर नीचे दिया हुआ मंत्र सात बार पढ़कर सात गांठे लगा ले और धागा कमर पर बांध दे तो उसमें पुरुषत्व वृद्धि होती है, वीर्य स्तंभित होता है, और काम कला में पूर्ण सुख अनुभव करता है।

मंत्र

ॐ शुक्र कामाय स्वाहा।

यों तो जैन साहित्य में हजारों सिद्ध अनुभूत प्रयोग हैं, पाठकों के लिये कुछ प्रयोग इस लेख में दिये हैं, और ये सभी सिद्ध सफल एवं प्रभावपूर्ण है।

शाहों के शाह : साबर शाह
लेख अगले अंक में प्रकाशित कर रहे हैं

अनुकरणीय

सुशील कुमार गुप्ता, कानपुर

गुप्ता गुरुजी के प्रिय शिष्यों में से हैं, उन्होंने लिखा है-

"अगर मैंने अगले तीन अंकों में पांच हजार प्रतियां जन-जन के हाथों में न पहुंचा दी, तो मेरा जीना ही व्यर्थ हैं, गुरुसेवा ही ढकोसला है, पहली बार तो पूज्य गुरुदेव ने काम सौंपा, और वह भी पूरा न कर पाऊं तो किस मुंह से अपने आपको शिष्य कहूंगा।

-गुप्ता

वे कर्मठ जिन्होंने प्रसार को अपना ध्येय मान लिया है। उनके पत्रों के कुछ अंश

हरीराम चौधरी, फैजाबाद

एक समर्पित गुरु शिष्य, जिसने सही अर्थो में साधकत्व और साधना की पहिचान की है वे लिखते हैं-

"मैं अगले ही माह पांच हजार प्रतियों को प्रत्येक बुक स्टाल पर पहुंचाने का वायदा करता हूं, क्योंकि मेरे जीवन की गति-मति लक्ष्य ध्येय यही है कि जीवन की अंतिम सांस भी गुरु आज्ञा पालन करते हुए व्यतीत हो जाय।

-हरीराम चौधरी

राजेन्द्र सिंह भदौरिया, रायबरेली

भदौरिया जी अलमस्त साधक एवं कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में कई वर्षों से पूज्य गुरुदेव से जुड़े हैं, उन्होंने लिखा-

"अब मेरे जीवन का ध्येय लक्ष्य एवं गति पत्रिका का प्रसार ही है, मैं इस अंक से एक हजार पत्रिकाएं अपने दम पर फैलाने का संकल्प लेता हूं, और तब तक मैं एक समय भोजन नहीं करूंगा, जब तक पांच हजार प्रतियों का विस्तार अपने हाथों से न कर दूंगा।

-राजेन्द्र सिंह भदौरिया, रायबरेली

गोवर्धन अग्रवाल, बैंगलोर

गुरुदेव के चरणों में मेरा ही नहीं, मेरे पूरे परिवार का जीवन समर्पित है, मैंने निश्चय कर लिया है, कि दक्षिण में मैं पांच हजार प्रतियों का विस्तार तो अगले तीन महीनों में करूंगा ही, और मैं निश्चय ही अपने उद्देश्य में सफलता पाऊंगा।

-गोवर्धन अग्रवाल, बैंगलोर

- ● **कुछ शिष्य " गुरुदेव का शिष्य हूं" या गुरुदेव से शक्ति प्राप्त की है, ऐसा कहकर अनुष्ठान कार्य या यज्ञ सम्पन्न कराते हैं, ऐसे झूठे व्यक्तियों को दंड दिलाने की व्यवस्था आपके जिम्मे है।**
- ●● **अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, जोधपुर के तत्वावधान में जो भी कार्यक्रम, शिविर, सम्पन्न होता है या भविष्य में भी होगा तो उसकी सूचना इस पत्रिका में प्रकाशित कर दी जाती है इसके अतिरिक्त यदि सिद्धाश्रम साधक परिवार द्वारा कोई विशेष प्रकार के शिविर के आयोजन के प्रपत्र छपाकर कोई धनराशि वसूल की जाती है तो उसके लिये अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, जोधपुर एवं मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान उत्तरदायी नहीं है।**
- ●●● **केंद्रीय कार्यालय द्वारा सभी शाखाओं को केवल गुरुमंत्र जप, गुरुवार को सामूहिक पूजन एवं भजन कीर्तन की ही अनुमति है विशेष प्रकार की साधनाओं हेतु अनुमति लेकर ही कार्य करें, अन्यथा यह कार्य विश्वासघात होगा।**

निखिलेश्वरानंद-महोत्सव

२१ अप्रैल को पूज्यगुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद का जन्म दिवस हम सभी शिष्यगण अमृत महोत्सव के रूप में मनाते हैं। शिविर के तीन दिनों में हम थिरकते हुए, नाचते हुए, झूमते हुए गहराई के साथ ध्यान बिन्दु में जाते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से सभी शिष्यों को आमंत्रण है, और इस अद्वितीय अवसर पर सभी साधकों का पहुंचना अनिवार्य है।

फिर पतझड़ ने बसन्त को आवाज दी है, फिर वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूंदों ने पाती लिख भेजी है, फिर सागर ने अपनी दोनों बांहें फैलाकर नदियों को अपने आगोश में ले लेने का आमंत्रण दिया है।

और इसीलिये यह अमृत महोत्सव हौले से आवाज दे रहा है, प्राणों की झंकार का मधुर निमंत्रण भेज रहा है। गुलाब की कलियां झूम-झूम कर आमंत्रित कर रही हैं, मस्ती में डूबने के लिये, आनन्द में सराबोर होने के लिये, जीवन की गुत्थियों को सुलझाने के लिये, मन की गांठे खोलने के लिये और दग्ध हृदयों पर अमृत की फुहार करने के लिये।

हर पल, सिद्धाश्रम के दीवाने, इस अमृत महोत्सव की प्रतीक्षा करते हैं, कब यह क्षण आए और वे हुलस कर गुरुदेव के चरणों में जा पहुंचे, और हम भी इन दीवानों का इन्तजार करते ही रहते हैं, पलक पावड़ें बिछाकर, गले से मिलने के लिये, भुजाओं में समेटने के लिये।

क्या सोचने लग गए प्रिय! स्वप्नवत ही सही, परंतु यह है हकीकत। ऐसी हकीकत जो अपूर्व मादकता और मस्ती से सिक्त है, अब तो प्रतीक्षा की घड़ियां भी कठिन हो रही हैं। प्रभु का दिव्य संदेश रोम-रोम को पुलकित कर रहा है। चेतना की लहर पूरे शरीर को उत्तेजित कर रही है, मानों कह रही है, 'हे गुरुदेव! आपसे अलग रहने की कल्पना करना ही अब कठिन अनुभव हो रहा है। प्रभो! अब यह तड़प असहनीय हो गई है, अब तो एक ही इच्छा होती है कि हम पूरी तरह आपके विशाल हृदयसागर में डूब जाएं, आपके श्री चरणों में समर्पित हो जाएं, अपना अस्तित्व भुला दें, उस अद्वितीय ब्रह्मानंद में जो हमारे जीवन का लक्ष्य व ध्येय है।

और यह मिलन सामान्य मिलन नहीं है, यह तो कई-कई जन्मों का मिलन है, कई-कई जन्मों से आवाज दी है प्रभु ने, और हर जिन्दगी को पकड़ने की चेष्टा की है, क्योंकि वे तो फूल से भी नाजुक और नवनीत से भी अधिक कोमल हैं, उनका तो एक ही उद्देश्य है कि यह सुगंध बसन्त में पूरी तरह से मिल जाए, यह बूंद समुद्र में पूरी तरह से लीन हो जाए, यह बार-बार जन्म लेने की क्रिया एक बारगी ही समाप्त हो जाय।

इसे तो शिविर की संज्ञा देना उचित ही नहीं है, यह तो पूर्णिमा की चांदनी है, जो मन के

अंधियारे को मिटाने में समर्थ है। यह महोत्सव तो छलकते हुए जाम की तरह है जिसे पीने पर पूरा बदन पुलकित हो जाता है, हृदय मोहित हो उठता है, नयनों में सौ-सौ स्वप्न तैरने लगते हैं, चहुं ओर बासन्ती धूप खिल उठती है। यह जो जीवन की मुरलिया है जिसे बजने पर पूरा शरीर झनझना उठता है। जिसकी आवाज से पूरा आलम नशीला हो उठता है। कुदरत एक नया करिश्मा खिला देती है, और सारा जीवन रंगमय बन जाता है। यह पर्व तो अनूठे आनन्द का मानसरोवर है जिसमें हंसवत् क्रीड़ा करने को मन मचल उठता है, सब पर गुरुदेव का नशा चढ़ जाता है, और गीतों की मधुर फुहार से प्रत्येक साधक फूल की भांति खिल जाता है, और झड़ जाती हैं पंखुड़ियां, प्रत्येक पंखुड़ी रस से सराबोर, मधुरत्व से ओत-प्रोत।

और फिर बूंद की यात्रा प्रारंभ होती है, समुद्र की ओर बढ़ने की, और फिर किरणों का वर्तुल बनता है, सूर्य की ओर बढ़ने का, और पूज्य गुरुदेव की वाणी की फुहार, उनके प्रवचनों की दिव्यता खुमार भर देती है, प्राणों में, शरीर में, आत्मा में और जिन्दगी के पोर-पोर में।

जब तुम मेरे पास आते-जाते अपने हृदय का राग मेरे हृदय के राग से मिला दोगे, तुम्हारे भीतर का संगीत मेरे संगीत में मिल जायेगा, दोनों एक ही साथ कंपित होंगे, धड़कन एक होगी, तभी तुम समझ पाओगे वह प्रेम, लहर, वह गुंजन, वह गीत जो आनन्द है, परम आनंद है।

वास्तव में ही यह तीन दिन तो हमारे जीवन के तीन कल्प है, जब पूरे भारतवर्ष में गुरु-भाई-बहिन इस पर्व पर भावनाओं का, विचारों का और आनन्द का आदान-प्रदान कर सकेंगे, अजीब सी खुमारी और मस्ती में थिरक सकेंगे, इस गुलाबी माहौल में अपने आपको मस्त कर सकेंगे।

और भी बहुत कुछ होगा इस पर्व पर। अब शुभ मुहूर्त आ गया है कि शिष्य और गुरु के बीच की दूरी समाप्त हो जाय। सभी साधक शून्य समाधि में जाने की क्रिया को पूर्णता के साथ आत्मसात कर सकेंगे। कुण्डलिनी के सभी चक्रों को झंकृत कर सकेंगे, दसो महाविद्याओं को समाहित कर सकेंगे। समस्त सिद्धियों का समागम आपके शरीर में, हृदय में, प्राणों में होगा तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुरुपूजन तथा प्रत्येक साधक के प्राणों में गुरु प्रत्यक्ष स्थापन प्रयोग भी संपन्न किया जायेगा, इस प्रकार वे उन रहस्यों का साक्षात्कार कर सकेंगे जो हमारे लिये अनजान हैं।

और सिद्धाश्रम के दिव्य संगीत से भरा हुआ एक योगी अपनी मोहक मुस्कान के साथ सामने शोभायमान होगा, उनके प्रवचनों का दिव्य संदेश हमारे जीवन की पूंजी होगी, अपनी कृपा की वे उस चेतना को प्रवाहित करेंगे, जिससे हमारा शरीर पाप-ताप से रहित होकर पूर्ण चेतना युक्त बन सकेगा, और संध्या समय भक्ति के माहौल में, संगीत और आनन्द के माहौल में, हम रसमग्न हो सकेंगे, थिरक सकेंगे, नृत्य कर सकेंगे और जीवन के मधुर आनन्द से स्वयं को सराबोर कर सकेंगे।

सचमुच हम अभी बालक ही हैं, साधना की जटिलताएं तो हमारे लिये हैं ही नहीं, हमें तो केवल नृत्य करना है, मुस्कराना है, थिरकती हुई नदी की तरह बहते जाना है, और गुरुदेव की पहली ही आवाज सुनकर दौड़कर उनके चरणों में लिपट जाना है, अपने आंसुओं से उनके चरणों को भिगोकर निर्मल जल की तरह पवित्र और दिव्य बन जाना है।

कब तक हम बाधाओं और तनावों की बेड़ियों में स्वयं को जकड़ते रहेंगे? प्रभु तो स्वयं तैयार है, सारी चिन्ताएं अपने ऊपर लेने को। वे तो सदा हमें उस अमृत सरोवर तक पहुंचाने के लिये प्रयत्नशील है, अमृत्यु के स्वर्णिम द्वार तक ले जाने को कटिबद्ध हैं और अमृत की भीनी-भीनी वर्षा में सराबोर करने के लिये आमंत्रित कर रहे हैं। प्रत्येक पल उनकी यही चेष्टा है कि हमारा प्रत्येक क्षण उत्सवमय हो, प्रत्येक क्षण जीवन्त, जाग्रत और चैतन्य हो, हमारी आंखों में एक मस्ती हो, एक आनन्द का स्रोत हो, पूर्णता की जगमगाहट हो।

मैं हर क्षण तुम्हारे साथ हूं, तुम मेरे मन हो, मेरी आत्मा हो, मेरे प्राण हो, मेरी चैतन्यता हो और मैं तुम्हारा सर्वस्व हूं, तुम्हारी धड़कन हूं, तुम्हारे रोम-रोम से निःसृत आनंद का प्रवाह हूं तुम्हारा सद्गुरु हूं, तुम्हारे जीवन की पूर्णता और सजीवता, चैतन्यता और सप्राणता हूं, अब यदि इस बार भी पूरी तरह से नहीं मिल सके, समर्पित नहीं हो सकें तो तुम्हारा यह जीवन रेत के ढेर की तरह ढह जायेगा, इसलिये तुम्हें जागना ही है और मुझमें निमग्न हो जाना है।

अब तो हम इतने आगे बढ़ गये हैं कि लौटना संभव ही नहीं रहा। जब सरिता समुद्र के पास आ ही गयी हो तो अब उसे विसर्जित होना ही है, अपने आपको समुद्र में पूरी तरह आत्मसात करना ही है।

और फिर रुकना किस लिये? जिस सागर की हम तलाश में हैं, वह तो सामने ही है। फिर ठिठकने से क्या फायदा? फिर रुकने का क्या प्रयोजन? बुद्धि के भ्रम जाल में पड़ने का क्या फायदा?

अब तो हमें उनकी आवाज प्राणों में उतारनी ही है, उनका हाथ कस कर थाम लेना है। उनकी श्वासों से जीवन को संवारना है, उनकी धड़कनों से जीवन का श्रृंगार करना है, और उसमें लीन होकर जीवन के सौन्दर्य और सत्य से साक्षात्कार करना है, तभी तो हम शिष्य कहला सकेंगे, सही अर्थों में समर्पण कर सकेंगे, सही रूप में पूर्णत्व प्राप्त कर सकेंगे।

बस एक वेग और एक प्रवाह और, थोड़ी सी तड़फ और, फिर हम स्वयं को अथाह सागर की बाहों में ही अनुभव करेंगे।

उठो! और उमड़ कर चारों ओर घटा की तरह छा जाओ, प्रेम साधना की दीवानगी से पूरी दुनियां को मस्त कर दो और इस बार कुछ ऐसा कर दो कि इन तीन दिनों के पर्व का प्रत्येक क्षण उत्सव बन जाए, और यह उत्सव ही पूरी पृथ्वी को जीवन रस से सिंचित कर सकेगा, यह प्रेम रस ही पृथ्वी को एक आनन्द महोत्सव से भर देगा और सारा जीवन सभी दृष्टियों से सुगंधित व अनोखा हो सकेगा। इसीलिये तो पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस पर हम सभी बाहें फैलाएं सभी साधक दीवानों का इन्तजार करेंगे, और उनको आना ही पड़ेगा, मिलना ही पड़ेगा क्योंकि एक बार जिसकी आंखे पूज्य गुरुदेव से टकरा गयीं, वह अलग रह ही नही सकता, उसके हृदय में तो बसन्त खिलेगा ही, उसको तो वह मिलेगा ही, जो उसके जीवन का लक्ष्य है, सौन्दर्य है, पूर्णता है।

□□□

इस माह की अद्वितीय केसेट

एक से एक बढ़कर, उत्तम क्वालिटी की युग पुरुष गुरुदेव की आवाज से झंकृत केसेट.....जो आपके घर को गुरुदेव की आवाज से झंकृत कर देगी ऐसा प्रतीत होगा, जैसे पूज्य गुरुदेव आपके घर में ही विजराजमान हों और आपके कानों के माध्यम से आपके हृदय में अमृत उड़ेल रहे हों।

- ♦ प्रेम धार तलवार की
- ♦ पिव बिन बुझे न प्यास
- ♦ घूंघट के पट खोल री
- ♦ गुरु हमारो गौत्र है
- ♦ ध्यान धारणा और समाधि

नोट–धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है, आप हमें सूचना दे दें। हम केसेट का मूल्य-४२/- तथा ६/- डाक व्यय जोड़कर वी.पी. से आपको संबंधित केसेट भेज देंगे।

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

का

अप्रैल अंक

मंत्र शक्ति-विशेषांक

के रूप में प्रकाशित हो रहा है

नयनाभिराम साज सज्जा, दुर्लभ गोपनीय मंत्र एवं अनेक रहस्यों से सम्पूरित एक दुर्लभ विशेषांक, जो प्रकाशित होकर आपके हाथों में आने को मचल रहा है

✡✡✡

बनजारन की अनोखी साबर सिद्धियां

बनजारन जहां रूप-सौन्दर्य में अद्वितीय थी, वही साबर सिद्धियों की स्वामिनी भी, जब पहली बार मैंने उनकी सिद्धियों को देखा, तो हतप्रभ रह गया, और आप भी यह लेख पढ़कर दांतों तले उंगली दबाने को विवश हो जायेंगे, आप स्वयं देख लीजिए

मुझे प्रारंभ से ही साबर मंत्रों और साधनाओं में रुचि रही है, क्योंकि इन मंत्रों का प्रभाव अचूक देखा है, साथ ही साथ इन मंत्रों के विधान और सिद्धियों में कोई जटिलताएं नहीं हैं, सीधे सादे मंत्र और सरल साधना विधियां हैं, जिसकी वजह से मैं इन मंत्रों की ओर प्रारंभ से ही आकर्षित रहा हूं।

उन्हीं दिनों एक बनजारिन से मेरी मुलाकात हो गई, बनजारे एक घुमक्कड़ जाति के होते हैं, और बैलों पर सामान लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं, सांप पालना और सांपों से संबंधित उनके पास अलौकिक जड़ी बूटियां होती हैं, ऐसा ही एक बनजारों का डेरा मेरे लगभग पांच सौ कदम दूरी पर नर्मदा के किनारे लगा था, मैं अपने स्थान पर बैठा-बैठा उस डेरे को भली प्रकार से देख सकता था।

दूसरे या तीसरे दिन की बात होगी पूर्णिमा की रात्रि थी, चन्द्रमा की चांदनी पूरी तरह से छिटकी हुई थी, और उस रोशनी में सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा था, मैंने देखा कि एक बाईस तेईस साल की जवान एक सुन्दर बनजारिन डेरे से बाहर निकल कर मेरी तरफ एक सुनसान स्थान पर घेरा खींचकर बैठ गई, उसने कुछ समय मंत्र पढ़कर कोई चीज शायद काली मिर्च के दाने या सरसों हवा में उछाले तो देखा कि सैकड़ों भूत-प्रेत उसके चारों तरफ बैठे हुए हैं, और वह राजकुमारी की तरह सिंहासन पर बैठी हुई है, वे सभी उसकी सेवा में लगे हुए हैं, यह लगभग चार पांच घंटे तक चलता रहा और बाद में उसने पानी का छींटा पढ़कर फेंका तो सब कुछ शांत था, वह बनजारिन उठकर अपने डेरे की ओर चली गई।

मेरे लिये यह कौतूहल पूर्ण था जो कुछ देखा था मैंने अपनी आंखों से देखा था इससे मेरी उत्सुकता उस बनजारिन के प्रति बढ़ गई, दूसरे दिन रात्रि को वह बनजारिन उसी स्थान पर आकर बैठी और लगभग आधे घंटे तक शान्त बैठी रही, फिर उसने एक मंत्र आधे घंटे तक बुदबुदाया तो मैंने देखा कि उसके सारे शरीर में आग लग गई है और आग की लपटों के साथ वह ऊपर आकाश में जाकर लोप हो गई है, मैं अपने स्थान से उठा और उस जगह पहुंचा जहां बनजारिन बैठी हुई थी वहीं एक पानी का लोटा और कुछ सरसों के दाने तो अवश्य बिखरे हुए थे परंतु बनजारिन का कोई अस्तित्व नहीं था, मैं उसी स्थान पर बैठ गया।

लगभग एक घंटे बाद ऊपर आकाश में जोरों का प्रकाश सा दिखाई दिया और मैंने देखा कि कोई आग का बहुत बड़ा शोला आकाश से नीचे उतर रहा है, दूसरे ही क्षण वह बनजारिन उसी स्थान पर आकर रुक गई और कुछ क्षण रुककर अपने डेरे की ओर चली गई।

इन दोनों घटनाओं ने मेरे हृदय पर गहरा असर डाला, हो न हो यह चमत्कारिक बनजारिन है, और जरूर इसके पास उच्चकोटि की साधनाएं हैं।

इसके बाद मेरे प्रयत्नों से वह धीरे-धीरे मेरी ओर आकर्षित हुई और अपना दिल मुझे दे बैठी, यद्यपि मैं संन्यासी था और यह सब मेरे लिये अशोभनीय था परंतु विद्या प्राप्ति के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार था, बनजारों की वह टोली लगभग छः महीने वहीं रही और इस अवधि में उस बनजारिन से जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ वह अपने आप में अलौकिक है अद्वितीय है, संसार में ऐसी साधनाएं अन्य के पास होना संभव नहीं हैं।

यह बनजारिन रूप में तो अद्वितीय थी ही, यौवन की आभा से भी दीप्त थी, उसके पास साबर सिद्धियों का खजाना था, इस छोटी सी उम्र में उसने कहां से इतनी महत्वपूर्ण साधनाएं सिद्ध कर ली थी यह आज भी मेरे लिये रहस्यमय बना हुआ है परंतु उन छः महीनों की अवधि में मैंने उसके द्वारा सम्पन्न जो भी साधनाएं देखी वे अपने आप में दांतों तले उंगली दबाने में पर्याप्त हैं, प्रेम के वशीभूत होकर उसने मुझे सिखाने में कोई कसर नहीं रखी इसके लिये मैं आज भी उसका कृतज्ञ हूं, बहुत वर्षों बाद मैंने उसे कामाक्षा मंदिर में पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी के चरणों में बैठे हुए देखा था, और वह साबर क्षेत्र में ही कुछ सीखने के लिए उनके पास कुछ महीने रही थी, इसके बाद फिर उससे मुलाकात नहीं हुई।

उसने जो साधनाएं मुझे सिखाई पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से मैं कुछ प्रयोग पत्रिका पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूं-

१. जब परी नित्य द्रव्य लाकर देती है।

मैंने इस साधना को सम्पन्न किया है और देखा है कि इस गोपनीय साधना से परी वश में हो जाती है अद्वितीय रूप और सौन्दर्य से परिपूर्ण यौवन की आभा से दीप्त आपके पास प्रेमिका के रूप में बनी रहती है, देह सुख तो देती ही है, साथ की साथ नित्य द्रव्य भी रात्रि को प्रदान करती है, यही नहीं अपितु उसके द्वारा जीवन भर वस्त्र, मिठाइयां, पुष्प, फल, सौन्दर्य-सामग्री और जो भी कहा जाता है वह करती है।

यद्यपि यह साधना गोपनीय रही है और सामान्यतः ऐसी महत्वपूर्ण साधनाएं बताई नहीं जातीं पर आगे के पृष्ठों में मैं बनजारिन के द्वारा बताया हुआ प्रयोग ज्यों का त्यों स्पष्ट कर रहा हूं जिसे मैंने खुद ने सिद्ध किया है और जीवन भर सुख भोगा है।

विधि

यह चालीस दिन का प्रयोग है, घर के किसी कमरे में यह प्रयोग करना चाहिए परंतु इतना ध्यान रहे कि चालीस दिन में उस कमरे में और कोई न जावे, दिन को ताला लगाये रखे और रात को साधना करे।

किसी भी महीने के शुक्लपक्ष के पहले शुक्रवार से यह प्रारंभ होती है, शुक्रवार को उपवास रखे और शाम को केवल खीर खावे, फिर रात को खाली कमरे में चारों ओर गुलाब के फूल बिखेर दे, खुद के कान में इत्र का फुआ लगावे, चमेली के तेल का दीया जलावे।

सामने पुष्पों को चुन-चुन कर एक गोल घेरा बनावे और उसके अन्दर एक **'परी सिद्ध यंत्र'**, आठ गोमतीचक्र, आठ सुपारी, आठ इलायची, आठ लौंग, आठ बताशे, और थोड़े से काले तिल रखे, फिर सफेद धोती पहिन कर सफेद आसन पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर **प्रियंकु माला** से मंत्र जाप करे, नित्य एक सौ एक माला मंत्र जाप आवश्यक है, मंत्र जप पूरा होने पर, वहीं सो जाय।

दिन को अपना कुछ भी अन्य काम करे पर उपवास रखे और रात को खीर से उपवास तोड़े, इस प्रकार चालीस दिन करे, यदि बीच में किसी रात्रि को परी आ जाय, मजाक करे, पर ४० वें दिन वह पूरी तरह से वश में होकर गोदी में बैठ जाय तब मंत्र जप पूरा समझे और उससे वचन ले ले कि वह प्रेमिका के रूप में रहेगी और धन, स्वर्ण आभूषण, मौज शौक जिन्दगी भर देती रहेगी, तो वह अवश्य ही 'हां' भरती है तब साधना सम्पन्न समझें और इसके बारे में किसी से कुछ न कहे।

साधना की अवधि में रात को कमरे का दरवाजा थोड़ा सा खुला रखे।

मंत्र

अरहीना अरीना सरीना सफरीना अकीपा अकविपा सदा सदूनी कामिनी पदभवी वश्यं कुरु कुरु नमः।

मैंने अपने जीवन में कुछ शिष्यों को यह प्रयोग सम्पन्न करवाया है और प्रत्येक को उसमें सफलता मिली है, यह प्रयोग पूरे जीवन को संवार देता है और मौज मस्ती आनन्द से भर देता है।

अदृश्य हो जाने का हमजाद प्रयोग

साबर साधनाओं का यह सिरमौर प्रयोग है, इसको सिद्ध करने पर व्यक्ति देखते ही देखते हवा में अदृश्य हो जाता है, वह तो सबको देखता रहता है, परंतु उसे कोई नहीं देख पाता, अदृश्य होने पर किसी के घर में घुसे और किसी को मिले तब भी वह किसी को दिखाई नहीं देता, जब वह वापिस चाहे तो प्रत्यक्ष हो सकता है, तभी लोग उसको देख पाने में समर्थ हो पाते हैं, इस साधना से वह घंटों अदृश्य रह सकता है, यह प्रयोग मेरा सिद्ध किया हुआ है, और शत प्रतिशत प्रामाणिक और सही है।

विधि

किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारंभ होता है, और इक्कीस दिन का प्रयोग है, घर के किसी एकान्त में इस प्रयोग को करना चाहिए, पूरे साधनाकाल में उस कमरे में अन्य कोई नहीं जावे, इस बात का ध्यान रखना चाहिए और रात में खुद बैठकर साधना करे।

शुक्रवार को दिन भर उपवास रखे और शाम को दूध की मिठाई खावे, फिर रात को लाल आसन बिछाकर लाल धोती पहिन कर पश्चिम की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने गुलाब के तेल का दीपक लगावे और लोबान धूप या लोबान की अगरबत्ती लगावे।

इसके बाद अपने सामने गंधक का चूरा बनाकर उसका एक गोल घेरा बनावे और उसमें **'हमजाद यंत्र रख'** दे, उसके सामने सात गुलाब के फूल सात लौंग, सात इलायची तथा सात काले मुंह की चिरमी रख दे, साथ में **'अदृश्य गुटिका'** भी रख दे।

इसके बाद निम्न मंत्र, हकीक माला से इक्कीस माला मंत्र जप करे।

मंत्र

अन्तर कुशी सत्य खुदाय सोने का कटोरा लोहे का कोट वज्र का ताला अल्लाह नबी बैठे रखवाला हाथ की पांव की उरिया धुरिया समेटे हवा में गुम हो तैतीस कोस जात रहे वीर मुहम्मद तेरी आण।

इक्कीसवें दिन साधक को लगेगा कि वह बहुत हल्का हो गया है, और हवा में उड़ने लगा है, जब घेरे में रखे हुए गुलाब के फूल अदृश्य हो जाय तो समझना चाहिए कि साधना में सिद्धि मिल गई है, साधना में गंधक के घेरे में बाकी चीजें तो ज्यों की त्यों रहेगी पर गुलाब के फूल नित्य ताजे लाकर रखने चाहिए।

बाईसवें दिन जब प्रयोग करना हो तो **अदृश्य गुटिका** को अपने मुंह में रख ले तो वह अदृश्य हो जायेगा, वह तो अन्य लोगों को देख सकेगा परंतु उसे कोई नहीं देख पायेगा जब वापिस प्रत्यक्ष होना हो तो उस **अदृश्य गुटिका** को कपड़े में ले लेने पर वह सबको दिखाई देने लग जाता है।

बनजारिन का यह प्रयोग इतना चमत्कारिक और प्रामाणिक है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी आज भी यह प्रयोग ज्यों का ज्यों मैं उपयोग करता हूं, और मुझे सफलता मिलती है।

हजारों मील की यात्रा सैकण्डों में

यह सिद्धि भी मुझे उस बनजारिन से मिली थी, इसमें साधना सिद्ध होने पर व्यक्ति हवा की तरह हल्का और अदृश्य हो जाता है, और कुछ ही सैकेण्डों में हजारों मील दूर जहां भी वह चाहे पहुंच सकता है, तथा वापिस आ सकता है, इस प्रयोग से शरीर को कोई नुकसान नहीं होता और सारा शरीर हवा की तरह हल्का होकर उड़ने लग जाता है।

विधि

यह प्रयोग शुक्रवार की रात से शुरु होता है, घर के कमरे में पश्चिम की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे मृगचर्म बिछा हो और एक मृग चर्म वह खुद लपेट ले, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, फिर सामने गुलाब के तेल का दीपक लगा ले और लोबान धूप या लोबान की अगरबत्ती जलावे, यह न मिले तो चन्दन की अगरबत्ती भी लगा सकते हैं।

फिर काली मिर्च का पाउडर बनाकर उससे अपने सामने जमीन पर एक गोल घेरा बनावे और उसमें **शून्य गुटिका, सुलेमान यंत्र,** आठ गुलाब के फूल, आठ काली मिर्च के दाने, आठ लौंग, आठ हकीक तथा आठ लघु नारियल रख दे।

फिर सामने बैठकर विद्युत् माला से इक्कीस माला मंत्र जप करे, यह प्रयोग इक्कीस दिन करे तब तक उस कमरे में साधक के अलावा और कोई न जावे दिन को ताला लगाये रखे और रात को मंत्र जप करते समय दरवाजा थोड़ा सा खुला रखे।

मंत्र

बिसमिल्लाहिर्रहीम लाइल्लालिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्ला मुसलमानी अवादानी मरी न खाय परी न छोड़े वे बहिश्त को जाय। चौकी पै चौकी चली अम्बर हुआ तरवर तारा मीना सा मर्द गढ़ तोड़ा आकाश तोड़ा नदी बांध समुद्र पाताल तोड़ा मनचिन्ते जगे पे जाय बिस्मिलाह कारजे करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा छू मन्तर।

इक्कीस दिन के बाद जब सामने के घेरे में गुलाब के फूल गायब हो जाय तो समझ लेना चाहिए

कि सिद्धि प्राप्त हो गई है, इसके बाद जब भी शून्य गुटिका मुंह में रखेगा तो उसका शरीर हवा की तरह हल्का हो जायेगा और उड़ने लग जायेगा फिर धीरे-धीरे जहां चाहे वहीं नीचे उतर जाय और शून्य गुटिका को मुंह से बाहर निकाल ले तो जैसा शरीर है, वैसा हो जायेगा, मगर हजारों मील की यात्रा कुछ की सैकेण्डों में हो जायेगी।

इस प्रयोग में घेरे में नित्य ताजे गुलाब के फूल रखने चाहिए और सिद्धि प्राप्त होने पर इसकी चर्चा किसी से नहीं करनी चाहिए।

वस्तुतः यों तो बनजारिन ने सैकड़ों प्रयोग मुझे बताये थे, जो कि एक से एक बढ़कर है, परंतु मैंने कुछ प्रयोग पाठकों के सामने रखे हैं, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण और सिद्ध हैं।

सुन्दर स्त्रियों का चारों तरफ जमघट लगा रहे।

यह तिलस्मी यंत्र कहलाता है, इस यंत्र को पूर्णमासी के दिन सवेरे चार बजे शुद्ध शरीर होकर एक सौ कागजों पर अनार के रस से सरकण्डे की कलम से लिखे, पीछे नित्य सुबह छः बजे से उस कागज को पानी में ग्यारह बार घुमाकर यंत्र फेंक दे और पानी पी ले परंतु यह पानी किसी के सामने नहीं पिये और न किसी को बतावे कि मैं ऐसा प्रयोग कर रहा हूं, इस प्रकार इक्कीस दिन करे।

मंत्र

यह सूर्य चन्द्रमा का प्रतापी यंत्र है. और यंत्र सिद्ध करने के बाद जीवन भर उसके आगे पीछे सुन्दर सुसज्जित कामी स्त्रियों का मेला लगा रहता है।

स्त्री वशीकरण मंत्र

यह यंत्र रमल के अनुसार एक गुप्त भेद चक्र है, इसको अनार के रस के साथ डुबो कर कोरे सफेद कपड़े पर लिखो, फिर उसकी बत्ती बनाकर घी के दिये में जलाओ, दीये का मुंह स्त्री के घर की ओर हो, चालीस दिन प्रतिदिन ढाई घंटे दिया जलाओ तो वह स्त्री वश में होती है और जीवन भर दासी बनी रहती है।

यह यंत्र महत्वपूर्ण है और इसका असर निश्चित रूप से होता है।

शत्रु पर भूत चढ़ाने का प्रयोग

इस प्रयोग से शत्रु पर भूत चढ़ाया जा सकता है, जिससे वह परेशान रहता है, घर में जितना भी पकाया जाता है, वह खा जाता है, घर की चीजें या तो लुटा देता है, या तोड़ फोड़ कर देता है, इससे वह शत्रु और उसके घर वाले परेशान हो जाते हैं।

मंगलवार की रात्रि को अपने सामने भैरव यंत्र रखकर निम्न मंत्र की ५१ मालाएं फेरें, यह एक रात का प्रयोग है, दूसरे दिन वह भैरव यंत्र शत्रु के घर में डाल दे तो निश्चय ही वह पागल हो जाता है, और उस पर भूत चढ़ जाता है।

मंत्र

बिस्मिल्लाह रहमान बीर तुम सानके बादशाह एक भूत अमुक के शरीर में चढ़ावे सुलेमान की दुहाई।

ऐसा करने पर शत्रु जिन्दगी भर दुखी और परेशान रहता है।

मैं चेलैंज देता हूं

कि

कोई इन प्रयोगों को गलत सिद्ध कर दे

सौन्दर्य तो जीवन का वरदान है प्रकृति की तरफ से प्रभु का आशीर्वाद है, आवश्यकता है, भली प्रकार से इन मंत्रों और प्रयोगों को समझने की, और तदनुरूप प्रयोग सम्पन्न करने की . . .

सौन्दर्य प्राप्ति के छः अनुपम प्रयोग

जीवन में सौन्दर्य एक आवश्यक और अनिवार्य वरदान है, स्त्रियों का तो पूरा आधार ही सौन्दर्य माना गया है, जो लड़की सुन्दर नहीं होती उसके मन में कुंठा असन्तोष और हीन भावना बन जाती है, वह सबसे कटी कटी सी रहती है हर क्षण उसको ऐसा लगता है, कि जैसे वह सबसे उपेक्षित और तिरस्कृत है।

स्त्री के सौन्दर्य में छः तत्व प्रधान हैं-१. वह लम्बी पतली, छरहरी तथा आकर्षक हो, २. उसका रंग गोरा और चन्द्रमा के समान हो, ३. उसका चेहरा अण्डाकार आंखें लम्बी और पैनी, तथा होंठ रसयुक्त हों, ४. चेहरे पर या हाथों-पावों पर व्यर्थ के बाल न हों तथा वक्ष स्थल उभरा हुआ, सुन्दर और कामोत्तेजक हो, ५. उसकी कमर पतली और नितम्ब भारी हों, ६. उसके चेहरे पर भोलापन आंखों में मस्ती और चाल में अल्हड़पन हो। जिसके पास ये छः गुण होते हैं वह युवती पूरे संसार को विजय कर सकती है।

नीचे मैं अत्यधिक गोपनीय और दुर्लभ सौन्दर्य प्रयोग दे रहा हूं जिसका लाभ पत्रिका पाठक उठा सकते हैं, यह प्रयोग कोई भी बालिका, युवती और वृद्धा कर सकती है, इसतें किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

लम्बी, पतली और छरहरी होने का सर्वोत्तम प्रयोग

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारंभ होता है, प्रातः स्नान कर बाल धोकर फैला दे और फिर सामने भोज पत्र पर बराबर मात्रा में, हल्दी और मजीठ-इन वस्तुओं को एकत्र कर पीस कर स्याही बना ले, इसमें अपने बायें हाथ की उंगली से एक बूंद रक्त निकाल कर मिला ले फिर भोजपत्र पर स्वास्तिक बनावे।

फिर इस यंत्र का कुंकुम केशर से पूजन करे फिर यंत्र के मध्य केशर लगाकर उस केशर से अपने ललाट पर बिन्दी लगावे, तत्पश्चात् सामने संसार की श्रेष्ठ सौन्दर्यवती रति से संबंधित 'रतिराज गुटिका' स्थापित करे, और उस पर कुंकुम केशर लगाकर गुटके पर ही केशर से अपना नाम लिखें, और

फिर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सफेद साड़ी पहनकर बैठ जाय और स्फटिक माला से निम्न मंत्र का ५ माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ रति रति महारति कामदेव की दुहाई संसार की सुन्दरी भुवन मोहिनी अनंगप्रिया मेरे शरीर में आवे अंग अंग सुधारे जो न सुधारे तो कामदेव पर वज्र पड़े।

इस प्रकार २१ दिन करे, एक समय भोजन करे और भोजन में भी अल्प आहार ले, दूध चावल आलू का परहेज करे, २१ दिन पूरे होने पर वह "रतिराज" गुटिका बांह पर बांध ले या किसी में जड़वाकर गले में धारण कर ले तो निश्चय ही वह पतली व आकर्षक सुन्दर तथा छरहरी बन जाती है, मोटापा दूर हो जाता है, और उसके शरीर पर रूप और यौवन निखरने लग जाता है।

रतिराज गुटिका असली मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होना चाहिए।

२. काले रंग को गोरे रंग में बदलने का श्रेष्ठ प्रयोग

इस प्रयोग को मैंने कई जगह आजमाया है, और हर बार मुझे सफलता मिली है, शरीर की चमड़ी का रंग चाहे काला हो या सांवला, गन्दमी हो या गेहुआं, इस प्रयोग से सारे शरीर की चमड़ी का रंग गोरा और आकर्षक हो जाता है, तथा उसके चेहरे पर एक अजीब आकर्षण और चन्द्रमा की शीतलता व्याप्त हो जाती है, जो भी पुरुष उसे देखता है, देखकर ठक् सा रह जाता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और मुझे हिमालय के एक उच्च कोटि के योगी से प्राप्त हुआ था उसने उस प्रदेश में सैकड़ों हजारों काली कलूटी स्त्रियों को यही प्रयोग देकर गोरा बना दिया था, इसी लिये उनका नाम ही "गोरा बाबा" पड़ गया था, आज भी वे जीवित हैं और सौन्दर्य से संबंधित साबर साधनाओं में अग्रणी हैं।

यह प्रयोग रविवार से प्रारंभ किया जाता है, प्रातः लड़की खुद स्नान कर बाल धोकर सफेद आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने भोजपत्र पर गोरोचन, कुंकुम तथा लाल चन्दन को बराबर मात्रा में मिलाकर उसकी स्याही बनाकर स्वास्तिक बना ले।

यह यंत्र उपरोक्त बनी हुई स्याही से चांदी की सलाका से बनाकर पूजन करे और सामने सात गुलाब के फूल रख दे, फिर इनके सामने सात हकीक पत्थर तथा सात 'सौन्दर्य बिहुटी गुटिकाएं'' रख दें, फिर शांत चित्त से मन में यह भावना देती हुई कि मेरा रंग गौरा हो रहा है स्फटिक माला से निम्न मंत्र की ग्यारह माला रोज करे।

मंत्र

ॐ ॐ कामदेव रति धती सातों परियां सातों देव सातों गंधर्व आवे और मेरे शरीर में लेप करे, शरीर को गोरा करे रति बनावे कामदेव की दुलारी सजावे जो न करे तो रति का सुहाग खंडित हो मेरी शक्ति गुरु की भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इसके बाद सामने नारियल का तेल तथा हल्दी का पाउडर मिलाकर रख दे, वह भोजपत्र उठाकर यंत्र सहित उस गिलास में पानी के घोल दे, भोजपत्र फेंक दे, और पानी पी ले, इसके बाद पूरे शरीर पर उस हल्दी के घोल का लेप करे, और फिर स्नान कर ले, इस प्रकार २१ दिन करे।

२१ दिन के बाद हकीक पत्थर तथा 'सौन्दर्य बिहुटी गुटिकाएं' कपड़े में बांधकर उत्तर दिशा की ओर फेंक दें, ऐसा करने पर निश्चय ही उसका काला रंग पूर्ण गोरा सुन्दर व आकर्षक बन जाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग एक गोपनीय और महत्वपूर्ण है प्रत्येक युवती को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, यदि तेलिया चेहरा हो या हथेली में तथा शरीर से ज्यादा पसीना आता हो तब भी यह प्रयोग पूर्णतः उपयोगी है।

३. मरदों को पागल बना देने वाला चेहरा प्राप्ति के लिये कमल संज्ञक प्रयोग

जैसा मैंने पीछे बताया है कि यदि रंग गोरा और वह बालिका लम्बी छरहरी हो, फिर भी यदि चेहरे पर आकर्षण नहीं हो या छोटी-छोटी असुन्दर आंखें हों, होंठ खिंचे हुए रसहीन सूखे निर्जीव से हों तो सारा सौन्दर्य धरा का धरा रह जाता है, सारे शरीर का प्रधान भाग चेहरा ही होता है, और चेहरे में भी आंखों का महत्व सबसे ज्यादा है, क्योंकि व्यक्ति की पहली नजर उसकी आंखों पर ही पड़ती है, इसलिये सौन्दर्य विशेषज्ञों ने कहा है, कि 'बोलती हुई आंखें' हों, होंठ मदभरे और निमंत्रण देने वाले से प्रतीत होते हों, यह प्रयोग ऐसा ही है।

इस प्रयोग को किसी शुक्रवार से प्रारंभ किया जा सकता है, प्रातः स्नान कर गुलाबी साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे गुलाबी आसन हो, सामने एक पात्र में या प्लेट में केशर से स्वस्तिक बनावे, 'खुद के नाम' के स्थान पर स्वयं का नाम लिखे।

फिर इस यंत्र के सामने 'मदकुंभ यंत्र' रख दे और केशर से उसका पूजन करे, तथा स्फटिक माला से नित्य ११ माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ नमो कामदेव की दुलारी संसार की प्यारी सुन्दरता की रानी तेरे होंठ रसीले आंखें कटीली चेहरे पर देवता मोहित हों मेरा भी कारज ऐसी ही करे जो न करे तो कामदेव पर शिव को त्रिशूल पड़े।

ग्यारह माला मंत्र जप के बाद थोड़ा सा पानी उस सामने वाले पात्र पर डाल दे और 'मदकुंभ यंत्र' उठाकर उस केशर से अंकित यंत्र को पानी में घोल दे और वह पानी पी ले, इस प्रकार ग्यारह दिन करे, ग्यारह दिन के बाद वह मदकुंभ यंत्र गले में धागे में पिरोकर पहन ले तो उसका प्रयोग सफल होता है, और उसका चेहरा भोलापन लिये हुए अत्यधिक आकर्षक और सुन्दर बन जाता है।

४. सागर की तरह उमड़ता हुआ वक्ष स्थल प्राप्ति के लिये सागर प्रयोग

युवती के शरीर का सबसे ज्यादा प्रभाव यौवन दीप्त कामोत्तेजक वक्ष स्थल का ही पड़ता है, यदि शरीर में बाकी सौन्दर्य के सभी गुण हों परंतु पुष्ट और आकर्षक वक्ष स्थल नहीं हो तो सारा सौन्दर्य धरा का धरा रह जाता है, इसके लिये अन्य उपकरण लगा देने से स्वाभाविकता नहीं आती।

एक योगी से मुझे इस संबंध में अद्वितीय प्रयोग हाथ लगा था, जिसको सैकड़ों जगह आजमाया है, और हर बार यह प्रयोग कसौटी पर खरा उतरा है, इस प्रयोग से जहां छोटे और दुर्लभ वक्ष स्थल पुष्ट और आकर्षक बन जाते हैं, वहीं यदि वक्ष पर जरूरत से ज्यादा मांस हो तो वह दूर हो जाता है, यदि उनमें ढीलापन अथवा अनाकर्षकता आ गई हो तो वह भी दूर होकर सुन्दर सुडौल आकर्षक बन जाते हैं, वास्तव में ही इस प्रयोग की जितनी तारीफ की जाय उतनी कम है।

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारंभ किया जाना चाहिए,

सुबह स्नान कर बालों को धोकर फैला दे और फिर गुलाबी रंग के आसन पर गुलाबी साड़ी पहन कर बैठ जाय सामने भोजपत्र पर केशर से स्वस्तिक यंत्र' बनावे।

फिर इस यंत्र को किसी पात्र में रख दे, और सामने 'कामोदीप्त गुटिका' स्थापित कर दे, उस गुटिका पर भी काफी केशर लगावे और फिर "सौन्दर्य माला" से निम्न मंत्र की पांच मालां मंत्र जप करे, सौन्दर्य माला में प्रत्येक मनका विशेष मंत्र से सिद्ध होता है, दिन भर वह माला गले में पहने रहे, यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, और ऐसा नित्य किया जाना चाहिए।

मंत्र जप समाप्ति के बाद पात्र में भोजपत्र पर पानी डालकर उस भोजपत्र को धो ले और वह पानी पी ले तथा कामोदीप्त गुटिका पर जो केशर लगाई हुई है उसे भिगोकर दोनों हाथों से दोनो स्तनों पर मल ले।

साधनाकाल में दूध का सेवन ज्यादा करे, यदि ऐसा प्रयोग किया जाय तो निश्चय ही उसे अद्वितीय सफलता प्राप्त होती है, ऐसा प्रयोग हर तीसरे वर्ष करना चाहिए, ग्यारह दिन का प्रयोग समाप्त होने पर वह कामोदीप्त गुटिका जड़वाकर गले में पहन लेनी चाहिए।

वस्तुत: यह प्रयोग अद्वितीय और निश्चित प्रभावयुक्त है।

मंत्र

ॐ नमो नमो आदेश को गुरु रति को उर्वशी को रम्भा को, मेनका को सातों सुन्दरता को सातों यौवन को मेरे शरीर में अनंग बैठ गजकुंभ करें जो न करे तो प्राण प्यारी रति को मरी देखे।

५. पतली कमर और भारी नितम्ब के लिये

पुष्ट और भारी नितम्ब हमेशा से पुरुषों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं, पर साथ ही साथ कमर पतली और मुट्ठी में आने लायक हो।

इसके लिये शुक्रवार से निम्न प्रयोग सम्पन्न करे, सामने किसी बर्तन में स्वस्तिक यंत्र रखें।

दिव्ययंत्र

फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र का तीन माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ परी परी आकाश में उड़े धरती की खबर रखे कामदेव को मोहित करे ऐसा ही रूप मुझे दे जो न दे तो रुद्र का कोप पड़े अनंग की आण रति की सौगंध।

फिर उस पात्र में पानी डालकर यंत्र मिटा दे और पानी पी ले, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे तो निश्चय ही उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है।

६. पूरा शरीर सांचे में ढला हुआ सा होने का रति राज प्रयोग

यह प्रयोग सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और करने योग्य है, इससे पूरा शरीर एक अजीब से आकर्षण से युक्त हो जाता है, पूरा शरीर एक आनुपातिक सांचे में ढल जाता है, वक्ष स्थल का सौन्दर्य बढ़ जाता है, उसकी चाल में अल्हड़पन और आंखों में सरूर पैदा हो जाता है, उसको देखकर कठोर से कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी पानी पानी हो जाता है।

यह प्रयोग मैंने सैकड़ों बार आजमाया है, और इसको मैंने प्रामाणिकता के साथ सफल होते देखा है, इससे बाल लम्बे, काले और घने हो जाते हैं।

शुक्रवार को प्रातः स्नान कर गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर गुलाबी आसन पर बैठ जाय और सामने भोज पत्र पर केशर से स्वस्तिक को अंकित कर ले, यह अंकन चांदी की सलाका से होना चाहिए।

फिर यंत्र के सामने दो 'रति गुटिकाएं' तथा दो 'कामदेव गुटिका' रख दे, उनका पूजन करे, केशर लगावे तथा 'सौन्दर्य माला' से निम्न माला मंत्र जप करे।

मंत्र

नमो नमो अनंग को रति को बावन परियों को चौसठ गंधर्वों को सुलेपाल शाह को कह्यो करे मेरे पिण्ड में वास करे और ऐसो रूप यौवन दे कि दुनियां पागल बने जो न करे तो शिव को त्रिशूल हनुमान की गदा इंद्र को वज्र निरधार पड़े।

यह २१ दिन का प्रयोग है, एक समय भोजन करे, और कानों में इत्र लगावे, प्रयोग पूरा होने पर थाली में रखे दोनों रतिराज गुटिकाएं तथा कामदेव गुटिकाएं कमर पर बांध दे तो उसका सौन्दर्य हजार गुना बढ़ जाता है उसकी गणना श्रेष्ठतम सुन्दरियों में होने लगा जाती हैं, ये गुटिकाएं मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

वस्तुतः साबर मंत्र और प्रयोग अद्वितीय हैं और ये सारे प्रयोग आज तक गोपनीय रहे हैं, पूज्य गुरुदेव का मैं शिष्य हूं और इस बात का मुझे फक्र है, उनके आदेश से ही मैंने इन गुप्त प्रयोगों को पाठकों के लिये प्रस्तुत किया हैं।

चेहरे और सारे शरीर के दाग दूर करने का प्रयोग

शरीर सुन्दर हो, चेहरा आकर्षक हो पर यदि किसी प्रकार के घाव का निशान, मस्सा, दाग, दाद, और अन्य कोई चिन्ह हो तो उससे चेहरे की सुन्दरता मारी जाती है, इसके लिये साबर में एक विशेष प्रयोग दिया हुआ है जो कि अपने आप में अद्भुत है।

यह प्रयोग सोमवार से प्रारंभ करना चाहिए और तीस दिनों का प्रयोग है प्रातः उठकर सिर के बाल धो ले और स्नान कर आसन पर बैठ जाय, सामने पारद का विशेष मंत्र सिद्ध शिवलिंग किसी पात्र में स्थापित कर दे और उस पर धीरे-धीरे जल चढ़ाते समय निम्न मंत्र बराबर उच्चारण करे।

ॐ नमो शिवाय गौरी पति कामरूप दायक मेरे शरीर को भी रति समान करे, फालतू दाग दूर करे गौरी के समान सुन्दर बने जो न करे तो सती गौरी की दुहाई।

मंत्र पढ़ते समय शिवलिंग पर पानी की धार पतली-पतली चढ़ती रहे, लगभग पन्द्रह मिनट तक ऐसा करे, और फिर शिवलिंग को बाहर निकाल कर उस पर चढ़ाये हुए जल में से कुछ जल उन दागों पर लगा ले और बाकी जल पी ले।

इस प्रकार तीस दिन करे तो व्यर्थ के दाग आदि अशोभनीय चिन्ह समाप्त हो जाते हैं।

लम्बे काले और घने आकर्षक बालों की प्राप्ति का शर्तिया प्रयोग

यह प्रयोग मुझे साबर मंत्रों के ज्ञाता एक बनजारिन ने बताया था, उसके बाल अत्यधिक घने काले और ऐड़ियों को छूते हुए थे, इस प्रयोग से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है, साथ ही साथ यदि बालों में सफेदी आ रही हो तो वह दूर हो जाती है, वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मंत्र

ॐ गौरी अगनी भैरवी योगनी सहारे वपु सहारे मेरे केस सुन्दर करे, लम्बे करे घने और दिप् दिप् करे जो न करे तो राजा रामचन्द्र की दुहाई। रुद्र को त्रिशूल खावे योगिनी की दुहाई।

शिवलिंग पर चढाये हुए जल से अपने बालों को धो ले इस प्रकार २१ दिन करे तो बालों का झड़ना बन्द हो जाता है तथा उसके बाल अत्यधिक चमकीले आकर्षक, घने और झरने के समान पीठ पर लहराते हुए से होने लगते हैं।

कद बढ़ाने का विश्वसनीय प्रयोग

यदि आप सुन्दर और आकर्षक हैं पर यदि आपका कद छोटा है तो सारी सुन्दरता व्यर्थ हो जाती है। छरहरा शरीर लम्बा कद पुरुषों को पागल बना देने के लिये पर्याप्त है, इस प्रयोग से कद लम्बा होता है, मुझे यह प्रयोग एक श्रेष्ठ योगिनी से प्राप्त हुआ था और इसे मैंने कई बार आजमाया है।

किसी शुक्रवार के दिन स्नान कर गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर गुलाबी आसन पर बैठ जाय सामने किसी पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह कुंकुम से बनाकर उस पर २१ लघु नारियल रख दे और इन सब पर कुंकुम का तिलक करे तथा स्फटिक माला से मंत्र का जप करे।

मंत्र

या ख्वाजा खिजर मेहर मेहर लाजवाल तू लाजवाल

नित्य ११ माला जप होना चाहिए। इस प्रकार चालीस दिन तक करे। पहले दिन ग्यारहवें दिन इक्कीस दिन तथा इकतीस दिन लघु नारियल बदल ले अर्थात् पहले दिन जो लघु नारियल रखे थे, उनकी दस दिन पूजा हो और ग्यारहवें दिन वे नारियल अन्य पात्र में रख दे और नये नारियल स्थापित करे दे। इस प्रकार चार बार नारियल बदलता रहे। फिर सब नारियल प्रयोग पूरा होने के बाद पीसकर पाउडर बना दें और उसकी अस्सी पुड़िया बना दे। एक पुड़िया सुबह तथा एक पुड़िया शाम पानी के साथ शरीर पर छिडके तो वे पुड़ियाएं समाप्त होते होते मनोवांछित कद बढ़ जाता है और उसके रूप में अद्वितीय निखार आ जाता है।

ये लघु नारियल अंगूठे के आकार के मंत्र सिद्ध होते हैं।

शरीर की फालतू चरबी हटाने का प्रयोग

शरीर में जहां पर भी फालतू चरबी या थुलथुलापन होगा, वह बेडौल और अशोभनीय ही होगा, ऐसा थुलथुलापन होठों में, गालों में, चेहरे में वक्ष स्थल पर कूल्हों में हाथ पैरों में पेट में या कमर में कहीं पर भी हो सकता है, इससे सारा सौन्दर्य मारा जाता है और धीरे-धीरे शरीर बेडौल हो जाता है।

इसके लिये एक अत्यधिक उत्तम प्रयोग साबर साधनाओं में है जिसे मैं पहली बार स्पष्ट कर रहा हूं।

शुक्रवार के दिन गुलाबी रंग की साड़ी पहिन कर गुलाबी आसन पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने किसी पात्र में 'नागमुष्टिका यंत्र' स्थापित कर दे और उस पर केशर लगावे फिर 'सौन्दर्य माला' से निम्न मंत्र का जप करे, सौन्दर्य माला विशेष मंत्रों से सिद्ध होती है।

मंत्र

ॐ ॐ ॐ अनन्त मुखी स्वाहा।

यह प्रयोग २१ दिन का है, इसके लिये भोजन

का भी विशेष विधान है, पहले दिन केवल एक कौर भोजन करे, दूसरे दिन दो, और इसी प्रकार ग्यारहवें दिन ग्यारह कौर भोजन करे फिर बारहवें दिन घटते हुए दस कौर भोजन कर २१ वें दिन निराहार रहे।

नागमुष्टिका यंत्र पर आधे घंटे तक उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए जल चढ़ावे और मंत्र जप के बाद उस जल में एक एक गिलास भर जल पी ले।

वस्तुतः यह प्रयोग अद्भुत है और चाहे शरीर में कितनी भी फालतू चरबी हो, तो भी इस प्रयोग से समाप्त हो जाती है, कौर का तात्पर्य भोजन करते समय एक बार में जो मुंह में डालते हैं उतने खाद्य पदार्थ को एक कौर कहते हैं।

सर्वकामना सिद्धि प्रयोग

रविवार के दिन प्रातः स्नान कर भोजपत्र पर स्वस्तिक बना ले और बीच में अपना नाम लिख ले फिर इसके ऊपर फलून का टुकड़ा रख दे और मूंगे की माला से पांच माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ नमः मणिभद्रें हुं।

मंत्र जप के बाद वह फलून भोजपत्र में लपेटकर चांदी के ताबीज में भरकर बांह पर बांध दे तो उसकी समस्त मनोकामना पूरी होती है, और जहां भी जाता है, उसे सफलता मिलती है।

वस्तुतः यह प्रयोग आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है, और एक दिन का प्रयोग है।

आकस्मिक धन प्राप्ति या लौटरी प्राप्ति का प्रयोग

एकाक्षी नारियल जो कि लक्ष्मी मंत्र से आपूरित हो उस पर चांदी का बरक लगावे और केशर से निम्न मंत्र लिखे।

मंत्र

ॐ श्रीं क्लीं क्रीं दैवत्यै नमः कुरु कुरु ऋद्धि वृद्धि स्वाहा।

फिर स्फटिक माला से पांच माला मंत्र जप करे और दूसरे किसी नारियल को तोड़कर उसकी गिरी से ही १०८ आहुतियां दे, फिर उस एकाक्षी नारियल को भण्डार की पेटी में रखे तो निश्चय ही धन प्राप्ति होती है, और लौटरी प्राप्त होने का योग बनता हैं।

गड़ा हुआ धन प्राप्त होने का प्रयोग

यदि घर में धन गड़ा हो और उसका पता नहीं चल रहा हो तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, रविवार के दिन प्रातः स्नान कर भोजपत्र पर इस यंत्र को बना ले और इसके मध्य में मूंगा रत्न गौंद से चिपका ले।

फिर स्फटिक माला से २१ माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षर भगवते विश्व रूपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्व काम प्रदाय नमः।

फिर रात्रि को सोते समय तकिये के नीचे वह माला और यंत्र रख दे तो स्वप्न में उस गड़े हुए धन के स्थान का पता चल जाता है, और स्वप्न में संकेत भी मिल जाता है कि इस स्थान को कितना खोदने पर किस प्रकार से वह धन प्राप्त किया जा सकता है।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इससे निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। ●

बीमारियां आपकी : चिकित्सा साबर की

अगर शरीर है तो बीमारी भी हो सकती है पर कई बार उपचार करने के बाद भी बीमारी नियंत्रण में नहीं आती, तब केवल साबर मंत्र ही अंतिम उपाय के लिए रह जाता है, और इससे आपका काम हो जाता है . . . .

मानव का पहला कर्तव्य होता है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ और तन्दुरस्त रखे, उसका सारा प्रयत्न यही होता है। यदि तबियत ठीक है, तो उसे खान-पान रहन-सहन, मौज-शौक सब अच्छे लगते हैं, परंतु बीमारी होने पर चाहे उसके पास करोड़ों रुपये हों तब भी बेकार हो जाते हैं, और उसका आनन्द वह नहीं उठा सकता।

आयुर्वेद के माध्यम से तो असाध्य बीमारियों की चिकित्सा होती ही है, परंतु इस क्षेत्र में साबर साधनाओं के माध्यम से भी बीमारियां दूर हो जाती हैं, और व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है।

उदर रोग

कई कारणों से उदर रोग हो जाते हैं, थोड़े बहुत रूप में बराबर दर्द बना रहता है, पेट में जलन, भोजन न पचना, रह रह कर दर्द उठना पेट में शूल होना, किसी विशेष भाग पर पेट में दर्द बना रहना, आंखों में तकलीफ होना, आंतों में घाव हो जाना, अतिसार आदि रोगों के लिये यह प्रयोग श्रेष्ठतम है, और इस प्रयोग से निश्चित ही रोगी को लाभ होता है।

किसी रविवार के दिन रोगी स्वयं या कोई व्यक्ति स्नान का शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने तेल का दीपक लगावे, फिर ताम्बे के पात्र में **'रोग मुक्ति यंत्र'** रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध हो और उस पर केशर का तिलक करे, तथा हाथ में जल लेकर कहे कि मैं अमुक व्यक्ति के अमुक रोग को दूर करने के लिये यह साबर प्रयोग कर रहा हूं।

फिर हकीक माला से निम्न मंत्र का जप तीन माला करे।

मंत्र

ॐ मुं मुकटेश्वरी देवी आवे उदर रोग मिटावे अमुक को ठीक करे ज़ो न करे तो महावीर की दुहाई शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उस यंत्र पर जो जल चढ़ाया जाय उसमें से तीन चम्मच रोगी को पिला दे, और बाकी जल में कपड़ा भिगोकर रोगी के पेट पर फेर दे, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे।

ग्यारह दिन के बाद वह यंत्र धागे में पिरोकर रोगी के कमर में बांध दे तो निश्चय ही रोगी किसी भी प्रकार के उदर रोग से मुक्त हो जाता है, और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करता है।

२. चर्म रोग और रक्त रोग

यदि किसी भी प्रकार का चर्म रोग हो, त्वचा पर सफेद या लाल दाग लग गये हों, चमड़ी पर चकत्ती होने लग गई हो, या त्वचा बदरंग हो रही हो, अथवा शरीर पर दाद, खाज, खुजली आदि हो या शरीर में रक्त की न्यूनता हो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धिदायक है, और इससे निश्चित रूप से पूर्ण चर्म रोग मिट जाते हैं।

शुक्रवार के दिन नौ पीपल के पत्ते लाकर एक थाली में सजा दे और प्रत्येक पीपल के पत्ते पर नर्मदेश्वर शिवलिंग रख दे, जो मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हों पात्र के बाहर नौ दिये लगा लें और फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप रोगी या कोई व्यक्ति करे।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को त्रिलोचन देवी को अंजनी को महासाबरी को अमुक रोगी को ठीक करे चर्म रोग मिटावे रक्त शुद्ध करे जो न करे तो भगवती चिन्तामणि को त्रिशूल खावे।

प्रत्येक माला की मंत्र जप समाप्ति पर नौ नर्मदेश्वर पर जल चढ़ावे, जब तीन माला मंत्र जप हो जाये तो पीपल के पत्ते तथा नर्मदेश्वर पात्र से अलग रख दे, तथा उस जल में से रोगी को पिला दे, और कुछ उसके सारे शरीर पर लगा दे, ऐसा नौ दिन करे, पीपल के पत्ते रोज बदलने आवश्यक है।

प्रयोग समाप्ति के बाद नर्मदेश्वर घर के किसी शुद्ध स्थान पर स्थापित कर दे तो नौ दिन के भीतर-भीतर रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, और वह अनुकूलता अनुभव करता है।

यह प्रयोग परीक्षित है, और इससे रोगी को विशेष आराम प्राप्त होता है, मंत्र जप समाप्ति के बाद वह रोगी रुद्राक्ष माला गले में धारण किये रहे।

३. पुरुष जननेन्द्रिय सम्बंधी रोग

इसमें पुरुष का नामर्द होना जननेन्द्रिय में शिथिलता रहना, कामोत्तेजना न होना, जल्दी स्खलित हो जाना, स्तम्भन न रहना, वीर्य का पतला या दुर्गन्धयुक्त होना, मूत्राशय में पथरी होना आदि जननेन्द्रिय से सम्बंधित समस्त रोगों के लिये यह प्रयोग पूर्ण प्रभाव युक्त हैं।

किसी भी शुक्रवार के दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दे, प्रत्येक पर "कामदेव हेत्वा" स्थापित करे, उन पर केशर लगावे और पूजन करे, फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ नमो नमो पशुपतये कामदेवाय विहर विहर सर सर नृत्य चल चल वल वल मंडलाय प्रवेशय प्रवेशय फट्।

इसमें नित्य तीन माला मंत्र जप आवश्यक है, और प्रत्येक माला के बाद उन कामदेव हेत्वा पर जल चढ़ावे, मंत्र जप के बाद उस जल में से कुछ भाग पी ले और प्रयोग करे, गुलाब के पुष्पों को किसी पवित्र स्थान पर डाल दे।

ग्यारह दिन प्रयोग करने के बाद वे पांचों कामदेव हेत्वा एक ताबीज में भरकर कमर में बांध दे तो निश्चय ही वह व्यक्ति सम्बंधित बीमारियों से मुक्त हो जाता है, और काम कला में पूर्ण सक्षम होकर सफलता प्राप्त करता है, उसका आगे का जीवन पूरी तरह से आनन्दमय बन जाता है।

४. स्त्री रोग

स्त्रियों को कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जिनमें प्रदर, सफेद पानी आना, कमर में दर्द, सूतिका रोग, हिस्टीरिया, गर्भ स्थिर न रहना, रक्त प्रदर, शरीर में दर्द बना रहना, गर्भाशय में सूजन, गर्भाशय का मुंह संकीर्ण या बन्द होना आदि रोगों के लिये यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

शुक्रवार को स्त्री स्वयं स्नान कर अपने बाल धो ले और गुलाबी आसन पर गुलाबी साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने सात गुलाब के पुष्प रख दे, और प्रत्येक गुलाब के पुष्प पर **"रति गुटिका"** स्थापित करे, इन प्रकार सात 'रति गुटिकाएं' रखें, फिर उस पर केशर का तिलक करे, और हाथ में जल लेकर कहे कि मेरे शरीर के सभी रोग दूर हों।

फिर सामने अगरबत्ती व घी का दीपक लगाकर स्फटिक माला से निम्न मंत्र की तीन मालाएं मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ नमो कंदर्प सर विजलानी सर्व रोग समन करी स्वाहा।

प्रत्येक माला के बाद उन 'रति गुटिकाओं' पर जल चढ़ावे, माला मंत्र जप के बाद गुलाब के पुष्प की पंखुड़ियां खा ले औा पानी पी ले, 'रति गुटिकाएं' अलग रखकर उस जल का कुछ भाग पी ले, तथा कुछ भाग कमर के हिस्से पर लगा दे, इस प्रकार सात दिन करे।

आठवें दिन वे 'रति गुटिकाएं' किसी ताबीज में रखकर वह ताबीज कमर में बांध दे तो समस्त प्रकार के स्त्री रोगों से छुटकारा मिल जाता है, और जब तक वह यंत्र पहना हुआ होता है, तब तक ये रोग पुन: व्याप्त नहीं होते।

५. नेत्र रोग

आंखों का कमजोर होना, आंखें लाल रहना, आंखों में खुजली होना, आंखों की पुतली पर काला या सफेद धब्बा बनना, रतोंधी होना, कम दिखाई पड़ना या किसी भी प्रकार की नेत्रों की बीमारी के लिये यह प्रयोग विशेष अनुकूल है।

किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारंभ किया जाना चाहिए, किसी चांदी या स्टील के प्लेट में केशर से स्वास्तिक बनावे।

फिर स्वस्तिक पर **'दिव्य यंत्र'** स्थापित कर दे और केशर से पूजन करे, फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र जप करते समय घी का दीपक लगाया रखे, सफेद आसन पर सफेद धोती पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठे।

मंत्र

ॐ नमो नमो दिव्याय मरकेतवे पुष्प धन्वे सकल सुरासुर नेत्राय सुख प्रदाय स्वाहा।

इस प्रकार नित्य तीन माला मंत्र जप करे, प्रत्येक माला पूरी होने पर उस यंत्र पर जल चढ़ावे, तीन माला पूरी होने पर वह दिव्य यंत्र अलग कर दे और प्लेट में जो केशर से यंत्र बना है वह हाथ की अंगुली से पानी में घोल दे और वह पानी दोनों नेत्रों पर लगावे और फिर आंख पर पट्टी बांधकर दस मिनट के लिये सो जाय।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे, ग्यारहवें दिन के बाद वह "दिव्य यन्त्र" ताबीज में भरकर गले में धारण कर ले तो नेत्र रोग हमेशा के लिए मिट जाते हैं और उसकी आंखें बराबर स्वस्थ बनी रहती है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और सिद्ध है।

६-बाल रोग

बालको को बचपन में कई प्रकार के रोग हो जाते हैं जिनमें सूखा रोग अर्थात् शरीर सूखता जाना, बालक के पेट में कीड़े पड़ जाना, शरीर में कमजोरी होना दुबलापन, पेट फूल जाना, हाथ पैर कमजोर होना, और अन्य रोगों से सम्बन्धित बीमारियों को दूर करने के लिए यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण है और इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

सोमवार के दिन बच्चे की मां या बच्चे का पिता पात्र में 'शिशु रोग निवारण' यन्त्र रख दे और उस पर एक गुलाब का पुष्प रख कर जल चढ़ाये फिर मूंगे की माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे।

मंत्र

ॐ नमो भगवती वज्र श्रृंखले रोग भक्षतु स्वादतु सर्व उपद्रव रक्षतु नमः।

इस प्रकार नित्य तीन माला जप करे, मंत्र जप के बाद गुलाब का पुष्प बच्चे को खिला दे या पानी में घोलकर पिला दे, इस प्रकार तीन दिन करे, तीन दिन के बाद वह शिशु रोग निवारण यंत्र काले धागे में पिरोकर बालक के गले में बांध दे तो निश्चय ही उस बालक के समस्त रोग दूर हो जाते हैं, और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने लग जाता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और प्रत्येक मां को चाहिए कि ऐसा प्रयोग अपने बालक की शुभता के लिये सम्पन्न करे।

७. खांसी और दमा

चाहे कितना ही पुराना दमा या खांसी हो, और ठीक नहीं हो रही हो तो यह प्रयोग उनके लिये संजीवनी की तरह है।

रविवार के दिन यह प्रयोग प्रारंभ करे, उत्तर

नवीन चतुर्वेदी जिन्होंने इस माह राजराजेश्वरी दीक्षा ली

दिशा की ओर मुंह कर सफेद आसन पर बैठकर सामने किसी पात्र में नागरवेल का एक खाली पत्ता रख दे, फिर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दे जो मात्र अंगूठे के आकार का हो और उसके सामने किसी भी माला से तीन माला मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं द्रां जं जं कामेश्वरी बाण देवत्यै नमः

तीन माला मंत्र जप के बाद वह शंख अलग रख दे और वह पान तथा उस पर जो फिटकरी का पाउडर रखा हुआ है वह रोगी मुंह में रख ले तथा उसकी लार निगलता रहे, बाहर नहीं थूके।

यह नौ दिन का प्रयोग है, दसवें दिन वह दक्षिणावर्ती शंख लोहे के पात्र पर रखकर नीचे आंच देकर जला दे और उसकी राख को शीशी में भरकर फेंक दे, फिर नित्य नागरबेल के पान पर दो चुटकी फिटकरी का पाउडर मुंह में रखे औ उसकी लार निगले, तो कछ ही दिनों में दमा रो।ा हमेशा के लिये मिट जाता है खांसी भी समाप्त हो जाती है।

●

वह मंत्र

जिससे भूत वश में किया जा सकता है

लोग भूतों के अस्तित्व को स्वीकार करें या न करें, पर अधिकतर भारतीय और पाश्चात्य व्यक्ति स्वीकार करते हैं कि भूतों का अस्तित्व निस्सन्देह है

और साबर ग्रंथों में इससे संबंधित मंत्र और साधनाएं भी हैं...

भूत भी सामान्य मनुष्य की तरह ही होते हैं, यह अलग बात है, कि वे योनि में होते हैं, परंतु मनुष्य से ज्यादा वे विश्वासपात्र सिद्ध हुए हैं, नीचे मैं वह गोपनीय मंत्र दे रहा हूं, जिसे सिद्ध करने पर भूत वश में रहता है, और उससे आप मन चाहा काम चौबीसों घंटे करवा सकते हैं।

रविवार को प्रात: काली धोती पहिन कर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे काला आसन हो, फिर सामने पांच सिद्ध हकीक रख दें, पांचों के सामने पांच-पांच काली मिर्च रखें फिर हकीक माला से निम्न मंत्र से सवा लाख मंत्र जप सात दिनों में पूरा करें, जब मंत्र जप पूरा होगा तो आवाज आयेगी कि मैं तुम्हारे वश में हूं, और आप जो भी आज्ञा देंगे, बजाऊंगा, तब जिधर से आवाज आये उस तरफ वे पांचों हकीक तथा काली मिर्च उछाले, ऐसा करने पर भूत जीवन भर वश में रहता है।

मंत्र

ॐ अपर केपर प्रहलाल लावे पाताल बांधे पिण्ड प्राण को बेधे भूत हाजर हो कार्य करे, न करे, तो नरसिंह की आण सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

स्त्री वशीकरण मंत्र

इस मंत्र के द्वारा कठोर से कठोर हृदय रखने वाली स्त्री या प्रेमिका को भी वश में किया जा सकता है।

अपने नीचे मृग का चर्म बिछाकर सामने सात लघु नारियल और सात सुपारी रख दे, फिर मूंगे की माला से ग्यारह माला मंत्र जप के बाद लघु नारियल नदी या तालाब में फेंक दे तथा उन सुपारियों में से किसी एक सुपारी का टुकड़ा मनोवांछित स्त्री या प्रेमिका को खिला दे तो वह निश्चय ही जीवन भर वश में रहती है, और कभी भी छोड़कर नहीं जाती।

मंत्र

अमुक कामिनी आठा भाटा शूल मकाला पावल अंचाला ॐ ठं ठं ठं।

यह प्रयोग सिद्ध है, और आश्चर्यजनक रूप से प्रभावपूर्ण है 'अमुक' की जगह प्रेमिका का नाम बोले।

इस मंत्र से द्यूत में जीता जा सकता है

किसी भी शुक्रवार के दिन शाम को नीचे काला आसन बिछाकर काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा

की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने २१ **कामिनी हकीक** के दाने रख दे, फिर मूंगे की माला से २१ माला मंत्र जप करे।

मंत्र जप के बाद उन हकीक पत्थरों को पोटली में बांध जेब में रख कर जुआ खेलने जावे तो वह बराबर जीतता रहता है।

मंत्र

कखे रखता दमरू पाक वाय जिन नेदनो दाणीय तेब लोखणी पासरु फट्।

यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और इसके माध्यम से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

चोर पकड़ने का मंत्र

यदि चोरी हो जाय तो निम्न प्रयोग को सिद्ध करे, रविवार की रात काला आसन बिछाकर बैठ जाय और सामने मुट्ठी भर काली मिर्च तथा दो **चोरु ताबीज** रख दे, फिर हकीक माला से निम्न मंत्र की ग्यारह मालाएं फेरे।

जब मालाएं पूरी हो जायं तो ताबीज को घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, और काली मिर्च के दो-दो दाने प्रत्येक पुरुष स्त्री को खिलाये जिन पर सन्देह हो, जिसने चोरी नहीं की है, उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा परंतु जिसने भी चोरी की होगी उसके मुंह से खून आना शुरू हो जायेगा और जब तक वह चोरी कबूल नहीं करेगा तब तक उसके मुंह से खून आता रहेगा।

मंत्र

ॐ कामरूपाय पीर चौसठ जोगिनी बहत्तर भैरव चोर पकड़े कड़ाही में डाले खून उबाले चोरी बतावे जो कारज न करे तो हनुमत बीर की आन।

वस्तुतः यह आश्चर्यजनक प्रभावशाली प्रयोग है।

भूत उतारने का मंत्र

शुक्रवार से शुरु कर अगले शुक्रवार तक नित्य ग्यारह माला रात को फेरे निम्न मंत्र सिद्ध करते समय सामने तेल का दीपक जलावे और **हनुमान की चौकी** जो कि ताबीज के आकार की होती है, रखे उस चौकी पर नजर डालता हुआ हकीक माला से मंत्र जपे।

अगले शुक्रवार को जब मंत्र पूरा हो जाय तो चौकी को काले धागे में पिरोकर दाहिनी भुजा पर बांध दे जिससे कि जीवन भर उसकी रक्षा रहेगी और कोई तकलीफ नहीं होगी।

फिर जिसे भूत प्रेत लगा हो तब चिमटे से नीचे लिखे मंत्र का तीन बार उच्चारण करे तो उसका भूत-प्रेत चीखता चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और फिर कभी भी उसे कष्ट नहीं होता।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का पिण्ड प्राण छोड़ देव दानव भूत प्रेत डाकिनी तुरंत छोड़े दूसरी ठौर करे, इसको रक्षा हनुमत बीर करे, जो न करे तो मां अंजनी की दुहाई, सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

धन बढ़ाने का साबर मंत्र

स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने देखें **लील हकीक** रख दें और उस पर नजर डालता हुआ पांच मंत्र जप करे, स्फटिक माला से मंत्र जप हो, मंत्र जप के बाद उस हकीक को अंगूठी में जड़वाकर धारण कर लें तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डालें वह पूरी तरह से सफल हो, बेतहासा धन प्राप्त हो।

मंत्र

ॐ नमो भगवती पद्मा श्रीं ॐ ह्रीं पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन द्रव्य आवे सर्वजन्य वश्य कुरु कुरु नमः।

इसे एक ही दिन में केवल पांच सौ माला मंत्र जप से ही सिद्ध किया जाता है।

❀❀❀

दो आत्माओं का मिलन

साबर मंत्रों के माध्यम से

आज के व्यस्त युग में विवाह में कई बाधाएं आती हैं, और कई कारणों से समय पर विवाह सम्पन्न नहीं हो पाता

ऐसी स्थिति में एक मात्र "साबर प्रयोग" ही सहायक है, और वे प्रयोग हैं....

कलियुग में साबर मंत्र संजीवनी औषधि की तरह है, क्योंकि इनका प्रभाव तुरंत और अचूक होता है, साथ ही साथ इन मंत्रों की पांच विशेषताएं होती हैं जिनकी वजह से ये समाज में लोकप्रिय हैं-

१. ये मंत्र सरल भाषा में और सीधे-साधे शब्दों से युक्त हैं।

२. इन मंत्रों की साधना में किसी प्रकार की जटिल साधना पद्धतियां और विधियां नहीं हैं।

३. इन मंत्रों और साधनाओं को कोई भी साधक कोई भी वर्ग या कोई भी जाति का व्यक्ति कर सकता है।

४. इसके लिये विशेष उपकरण और साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं रहती।

५. इनका प्रभाव निश्चित, तुरंत गहराई के साथ होता है, इसीलिये इन मंत्रों की उपयोगिता बढ़ रही है।

हमारे समाज में विवाह की समस्या सबसे अधिक पेचीदा और श्रम साध्य है, घर में लड़की बड़ी हो जाती है, तो उसके लिये प्रयत्न करने पर भी लड़का नहीं मिल पाता, लड़के की मांग इतनी अधिक होती है, कि गरीब बेटी का बाप उन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता, इस चक्कर में कभी-कभी तो बहुत सुन्दर और योग्य लड़कियां भी रह जाती हैं, बड़ी आयु होने पर भी उनका विवाह नहीं हो पाता और इससे उनके मन में विशेष कुंठा जन्म ले लेती है, जिससे उनका पूरा जीवन नैराश्य में परिवर्तित हो जाता है।

मैंने अपने जीवन में सौ से ज्यादा साबर साधनाओं को सीखा है, और उनको आजमाया है, परंतु चार पांच प्रयोग तो इतने अचूक और महत्वपूर्ण हैं, कि सहज में विश्वास ही नहीं होता, इन साधनाओं को करते-करते ही अनुकूलता मिल जाती है या साधना सम्पन्न करने के बाद शीघ्र ही शादी होने के आसार बन जाते हैं, सहज ही रिश्ता मिल जाता है, मनोवांछित घराना प्राप्त हो जाता है, जैसा चाहते हैं वैसा पति उपलब्ध हो जाता है तथा बिना किसी हलचल या बाधा के विवाह सम्पन्न हो जाता है।

मनोवांछित पति की प्राप्ति के लिये

यदि आयु बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी विवाह नहीं हो रहा हो, या जहां भी विवाह की बात चलाई जाय वहीं पर अड़चनें आती हों तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, इस प्रयोग को वह लड़की स्वयं करें जो विवाह की इच्छुक है इस प्रयोग को

सम्पन्न करने के महिने भर के भीतर भीतर उसकी सगाई या शादी हो जाती है तथा उसे मनोवांछित पति मिल जाता है।

दो आत्माओं का मिलन

यह २१ दिन की साधना है, रविवार से इसका प्रारंभ करना चाहिए, प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने बाल धो ले और उन्हें खुला ही रखे, फिर पूर्व दिशा की ओर मुंह करे सूर्य को प्रणाम कर सुन्दर वस्त्र धारण कर किसी भी प्रकार के आसन पर बैठ जाय और सामने **"कामदेव हेत्वा गुटिका"** रख दे, यह गुटिका मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए, इस गुटिका को किसी पात्र में थाली या प्लेट में रख दें, पहले से इसे जल से स्नान कराकर पौंछकर पुनः स्थापित कर दें और ऊपर केशर का तिलक करे।

इसके बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की तीन मालाएं फेरें।

मंत्र

मखनो हाथी जर्द अम्बारी

उस पर बैठी कमाल खां की सवारी

कमाल खां कमाल खां मुगल पठान

बैठ चबूतरे पढ़े कुरान

हजार काम दुनियां का करे

एक काम मेरा भी करे

न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

मंत्र जप के बाद वह गुटिका किसी एकान्त स्थान में रख दें, इस प्रकार २१ दिन करे, २१ दिन के बाद उस गुटिका को अपने चित्र के साथ लाल कपड़े में लपेट कर अलग स्थान में रख दें तो मंत्र जप समाप्ति के बाद एक महीने के भीतर-भीतर विवाह से संबंधित बाधाएं दूर हो जाती हैं और अच्छे घर और लड़के के साथ सगाई आदि होने का योग बन जाता है, यह मंत्र जप पूरी श्रद्धा के साथ सम्पन्न करे, एक समय भोजन में कुछ भी ले सकते हैं।

विवाह बाधा योग व मंगली योग मिटाने के लिये

यदि लड़की की जन्म कुंडली में विवाह बाधा योग हो जिसकी वजह से विवाह नहीं हो रहा हो, विवाह में अड़चनें आ रहीं हों, या कुण्डली में मंगल दोष हो तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग रामबाण की तरह है और इसका असर तुरंत होता है।

इस प्रयोग से किसी भी प्रकार का मंगल दोष समाप्त हो जाता है और उस बालिका के विवाह की संभावना बढ़ जाती है, इस प्रयोग से विवाह बाधा योग भी दूर हो जाता है, विवाह संबंधित ज्योतिष अनुसार जो भी बाधाएं अड़चनें हों उन्हें दूर करने के लिये रामबाण प्रयोग है और इसको मैंने आजमाया है।

यह प्रयोग रविवार से प्रारंभ किया जाता है, इस प्रयोग को स्वयं लड़की या उसके माता-पिता अथवा कोई पंडित भी सम्पन्न कर सकता है, रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में **"सर्व बाधा निवारण मुद्रिका"** रख दे और उसे दूध से धोकर पौंछकर स्थापित कर दे फिर उस पर केशर का तिलक करे और मूंगे की माला से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करे।

इस प्रकार २१ दिन तक करे, जब २१ वें दिन प्रयोग समाप्त हो जाय तब २२वें दिन वह मुद्रिका उस बालिका के किसी भी हाथ की किसी अंगुली में पहना दे जिससे जीवन में मंगली योग, विवाह बाधा योग और विवाह से संबंधित समस्त दोष दूर हो जाते हैं और निश्चय ही महीने दो महीने के भीतर भीतर उस लड़की की सगाई या शादी सम्पन्न हो जाती है।

यह अंक

यह अंक आपको कैसा लगा, आप इसमें और क्या सुधार चाहते हैं, आप अपनी सम्मति, सुझाव, जिज्ञासा हमें लौटती डाक से अपश्य ही लिख भेजिये, साथ में पासपोर्ट साइज का फोटोग्राफ भी।

हम आपकी रुचि के अनसार पत्रिका को स्वरूप देने का प्रयास करेंगे।

मंत्र

ॐ सकल दोष बांधू मंगल बांधू उपद्रव बांधू

सातों द्वार नवकोट खीलूं श्री गोरखनाथ शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा

यह मंत्र अपने आप में महत्वपूर्ण है और इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद जन्दी से जल्दी उस लड़की का विवाह हो जाता है और बाद में पूरे गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार की कोई अड़चन या परेशानी नहीं आती।

उस बालिका को चाहिए कि वह जीवन भर या विवाह के बाद तीन वर्ष तक उस मुद्रिका को अवश्य ही पहनी रहे।

सुन्दर पत्नी प्राप्ति के लिये

लड़कियों की तरह लड़कों के लिये भी ऐसी समस्याएं आ जाती हैं कि समय पर उनका विवाह नहीं हो पाता या कोई न कोई बाधा रहती है, या तो लड़की पसन्द नहीं आती या मनमाफिक नहीं होती जिसकी वजह से जल्दी विवाह नहीं हो पाता या कोई न कोई बाधा आती रहती है।

यह प्रयोग ऐसे ही व्यक्तियों के लिये है जिनका विवाह जल्दी नहीं हो रहा हो या योग्य पत्नी नहीं मिल रही हो या इस संबंध में ज्योतिष की दृष्टि से कोई बाधा हो अथवा किसी प्रकार की अड़चन हो तो यह प्रयोग तुरंत सिद्धिदायक है और इसका असर गोली की तरह होता है।

यह प्रयोग उस युवक को स्वयं करना चाहिए जो कि विवाह का इच्छुक है, किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारंभ किया जाता है, सुबह उठकर स्नान कर सफेद धोती पहन कर पूर्व दिशा की तरफ मुंह कर बैठ जाय सामने पात्र में "रतिप्रिया गुटिका" को जल से धोकर पौंछकर उस पर केशर का तिलक करे और फिर हकीक माला से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करे रतिप्रिया गुटका घर में रख दें।

मंत्र

ॐ कामरूप कामिनी त्रिभुवन मोहिनी सुन्दरी रति आवे

सात ताला तोड़ सात द्वार खोल हाजर हो मेरो कहियो करे

मेरे घर रहे, मेरो यह कारज न करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

"मैं कुछ ऐसे समर्पित शिष्य चाहता हूँ जो जीवनदानी हो, जो साधनाओं के प्रति समर्पित हो, जो साधनाओं की पूर्णता एवं उच्चता पर पहुंचने की आकांक्षा रखते हो जो समर्पित हों, जो सही अर्थों में शिष्य हों, तो मैं उन्हें अपना सब कुछ सौंप देना चाहता हूँ।"

-गुरुदेव

●

समाचार एवं सूचनाएं

✡ २४ मार्च ९३ से जोधपुर में (२४.३.९३ से ३१.३.९३ तक) नवरात्रि महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है, इसमें प्रत्येक शिष्य साधक एवं पत्रिका पाठक भाग ले सकते हैं, साधकों को चाहिए कि वे २३ मार्च की रात या २४ की प्रात: जोधपुर पहुंच जाएं। शिविर शुल्क मात्र ६६०/- रु. है।

इस वर्ष का यह नवरात्रि महोत्सव अपने आप में भव्य एवं अद्वितीय होगा, इसमें उन गोपनीय साधनाओं का समावेश किया गया है जो कि अभी तक दुर्लभ रही हैं।

✡✡ २१ अप्रैल तो पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस है, जो कि "अहोभाव महोत्सव" के रूप में दिल्ली में मनाया जायेगा साधना स्थल के बारे में अगले अंक में विस्तार से सूचना दी जा रही है।

✡✡✡ *यदि आप शिष्य* हैं-तो जोधपुर से पत्रिका के विस्तार में सहयोग दें।

यदि आप साधक हैं-तो अपनी अनुभूतियां एवं अपना फोटो भेजें, जिससे पत्रिका के अगले अंकों में दे सकें।

यदि आप पाठक हैं-तो पत्रिका के बारे में सम्मति अपने फोटो के साथ भेजें।

यदि आप जागरूक हैं-तो अपने आस-पास घटित घटनाओं को विस्तार से हमें लिख भेजें, जिससे हम उसे पत्रिका में प्रकाशित कर सकें।

✡✡✡✡ उज्जैन का शिवरात्रि शिविर अपने आप में भव्य एवं अद्वितीय रहा, मध्यप्रदेश के साधकों ने जिस प्रकार से पूरे भारतवर्ष से आये गुरु भाइयों का स्नेह अपनत्व एवं सम्मान किया, वह अनुकरणीय है।

✡✡✡✡✡ पूज्य गुरुदेव २१.३.९३ से ३१.३.९३ तक जोधपुर में ही रहेंगे, इस बीच कोई भी साधक आकर गुरुदेव से भेंट कर सकता है।

□□□

नवरात्रि महोत्सव (अहोभाव महोत्सव)

२४.३.९३–३१.३.९३

जोधपुर

बस अब से कुछ ही दिनों बाद जब इस जाड़े की तीक्ष्णता समाप्त हो चुकी होगी और हल्की ठंडी नशीली हवाएं चल रहीं होंगी, रात सपनों की तरह हौले से उतरती होगी तो वही समय होगा "चैत्र नवरात्रि'' का। यह बसंत का काल होगा। बसंत ऋतु का ही नाम नहीं है। जब भी आपके हृदय के अंदर खिले हुए फूलों जैसा आनंद हो, आशाओं इच्छाओं की मद मस्त बयार चले, जीवन झूमता हुआ नर्तन करता हुआ, इठलाता हुआ बन सके तो वही आपके लिये बसंत है। वह बसंत आपके जीवन का वसंत होगा, यह वसंत आपके हृदय में उतर सके इसके लिये ही तो चैत्र नवरात्रि के दिवस मनाये गये हैं। यह दिन जहां एक ओर शक्ति के दिन हैं वहीं शिव स्वरूप पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य के भी। उनकी उपस्थिति उनका साहचर्य ही वसंत है। जैसे वसंत जब आता है तो चुपचाप एक एक कली को विकसित कर जाता है एक नशीला और अल मस्त वातावरण बना जाता है उसी तरह पूज्य गुरुदेव भी मौन रहकर एक-एक हृदय को विकसित कर जाते हैं, हृदयों में जो शीत आ चुकी होती है जो जकड़न आ चुकी होती है उसे साधनाओं से, अपने अमृत वचनों से, अपने हृदय के स्पर्श से एक उष्मा देते हैं और तब वह जगे हुए हृदय आंसुओं के साथ पिघल जाते हैं।

इस धरा पर कहीं और वसंत आता होगा तो मात्र रंग और सुगंध ही बिखेर जाता होगा, किन्तु नवरात्रि के दिनों में जब गुरुधाम में वसंत उतरता है तो एक अनोखी अदा से ही उतरता है। यहां के उतरे वसंत में खिलखिलाहट का अतिरिक्त यौवन होता है। देश के कोने-कोने से ही नहीं वरन् विदेशों से भी आये साधक साधिकाएं जब साधना के पीले वस्त्र पहनकर सम्पूर्ण प्रांगण में यत्र तत्र विचरण करते हैं तो लगता है कि वसंत जीवंत और मुखरित हो उठा है। प्रकृति के वसंत में तो एक कोयल ही कूकती है किन्तु यहां पर सैकड़ों साधिकाओं की मधुर वाणी यत्र तत्र कूकने लग जाती है। पता नहीं कब-कब के बिछड़े साधक भाई बहिन मिलते हैं और आत्मीयता की भावनाओं के प्रवाह में बह उठते हैं। पूरा का पूरा दिन एक अजीब सी खुमारी में निकल जाता है।

यह कोई साधारण उत्सव नहीं वरन् मदनोत्सव होने जा रहा है जो गुरुधाम के बसंत में इस धरा पर उतरेगा। बस आपकी ही प्रतीक्षा रहेगी। आप भी आकर अपने प्राणों की झंकार से इस समारोह की संगीत लहरियों में अपना स्वर जोड़िये, और यौवन को मादक अठखलियों, नृत्य में खो जाइये।

नवरात्रि के नौ दिनों में क्या कुछ नहीं सम्पन्न हो जाता। पूज्य गुरुदेव का सर्वाधिक बल इसी बात पर है कि जीवन को सम्पूर्णता से जीना चाहिए यह कोई संग्राम नहीं है कि पल प्रति पल संघर्ष किया जाय वरन् यह तो एक मधुर लय ही तरह हर पल हर क्षण व्याप्त होना चाहिए। इसी से जहां एक ओर साधना की, मंत्र जप की, तप की गरिमा से वातावरण ओत-प्रोत रहता है वहीं प्रत्येक सांझ अपने साथ नृत्य और संगीत का गुंजन लेकर आती है नृत्य और संगीत जीवन के उल्लास उमंग की ही तो भावाभिव्यक्ति है। साधिकाएं अपने रंग बिरंगे वस्त्रों में जब घूमकर उठकर नृत्य में संलग्न हो जाती हैं तो लगता है कि सम्पूर्ण प्रकृति ही लयबद्ध हो गई है। एक बार फिर लगता है कि कृष्ण का युग इस धरा पर लौट आया हो। फिर वही नशीली बांसुरी की ताल हृदय में बज उठती है और हम सारी विसंगतियों से कट कर जीवन की सरसता में बह उठते हैं, लगता है कि समय रुक गया है। एक अनिवर्चनीय आनंद प्रत्येक हृदय में व्याप्त हो जाता है। प्रत्येक साधक चाहे वह बाल हो, युवा हो अथवा वृद्ध हो अपने-अपने ढंग से इस आनंद से मिली तृप्ति को नाचकर, अश्रु प्रवाह कर, भावविभोर हो व्यक्त करता है। साधक-साधिकाओं के चेहरे पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में उसी तरह दमक उठते हैं जैसे एक चांद की आभा को सैकड़ों हजारों तारे और भी सुंदर बना देते हों।

पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति प्रत्येक साधक को आश्वस्त रखती है, वह निश्चित रूप से जानता है कि वह जिस कामना इच्छा को लेकर आया है वह पूर्ण होगी ही। वह निश्चिंतता से एक-एक क्षण अमृत के घूंट के समान पीता रहता है। इस वर्ष की नवरात्रि में पूज्यपाद गुरुदेव अपने आशीर्वाद को जिन प्रयोगों के माध्यम से साकार करेंगे उनका एक संक्षिप्त विवरण आपको देना चाहूंगा।

प्रथम दिवस घटस्थापन व पूजन का होगा जिसमें पूर्ण विधि विधान एवं वेदों, मंत्रों के उच्चारण के साथ पूजन होगा सभी साधक अपने पात्रों से उसमें जल डालेंगे और पूरी नवरात्रि भर पूज्य गुरुदेव के अमृतमय संस्पर्श को पाने के बाद अमृत हो उठे इस जल को अपने साथ ले जा सकेंगे। पूज्य गुरुदेव ने विचार कर इस वर्ष अपने आत्मीय पुत्र-पुत्रियों को आकस्मिक "लक्ष्मी प्रदायक तारा प्रयोग" पूर्णता से कराने का व शरीर में स्थापन करने का निश्चय कर ही लिया है जिससे वे समाज में विशिष्टतम बन सकें और उनके ज्ञान का प्रसार सुगमता पूर्वक कर सकें। यद्यपि वशीकरण से सम्बंधित प्रयोग पहले भी कराये जा चुके हैं किन्तु इस बार तो सर्वथा नवीन सम्पूर्ण चराचर को वश में करने वाला "वशीकरण प्रयोग" तो अनुपम ही होगा।

यह नवरात्रि के दिन होंगे पूर्ण आनंद युक्त मां जगदम्बा के सुखद ममतामय, पावन स्पर्श की पुलक से भरे दिन। जहां पूज्य गुरुदेव हैं वही मां जगदम्बा हैं। मां जगदम्बा का पूर्ण चिन्तन आपके हृदय में उतर सके आप उनके ध्यान में लीन हो सकें और उनका जाज्वल्यमान दर्शन आपको सुलभ हो सके इसी का तो सारा प्रयास है, इसके लिये पूज्य गुरुदेव आपको "जगदम्बा प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग" सम्पन्न करायेंगे। आपको तो बस आतुर बनना है, कृपाकांक्षी बनना है।

ऊषा की लालिमा छाती है और पक्षी मधुर कलरव से भर उठते हैं आप भी अब पक्षियों के संगीत से भर जाइये।, क्योंकि आपके भी जीवन का प्रभात ही तो आ गया है।

आपके भौतिक जीवन की अनेक कामनाएं होंगी जो आपके प्रयत्नों से नहीं सुलझ पा रही होगीं उन्हें देवी बल से पूर्णता दी जा सके इस हेतु "सम्पूर्ण मनोकामना सिद्धि प्रयोग" का विधान भी रखा गया है। शत्रु की उपस्थिति जीवन में कितनी दुखदायक होती है जो आपके सारे जीवन में विष सा घोल देती है इसी को ध्यान में रखकर पूज्य गुरुदेव ने अपने विशेष आशीर्वाद के रूप में "शत्रु विजय एवं पूर्णता प्राप्ति प्रयोग" भी पहले प्रयोग के साथ जोड़ दिया है जिससे आपको पहले प्रयोग की सफलता निर्विघ्न द्विगुणित होकर मिल सके।

साधकों का पिछले कई शिविरों से अनुरोध चल ही रहा था कि देश काल व परिस्थिति को ध्यान में रखकर पूज्य गुरुदेव स्वयं विचार कर उन्हें कोई ऐसी विशिष्ट सिद्धि प्रदान करें जिससे वे उनके शिष्य के रूप में प्रखरता से कल्याणकारी व समाज उपयोगी कार्यों का सम्पादन कर सकें। पूज्य गुरुदेव ने गहन विचार कर अपने शिष्य को "वीरबैताल सिद्धि" प्रदान करने का निश्चय किया है। यह कोई साधारण विद्या नहीं है। श्री हनुमान इसी को सिद्ध करने के बाद महावीर कहलाये। आद्य शंकराचार्य जी इस विद्या को सिद्ध कर बौद्ध धर्म को निर्मूल कर सके।

यह तो एक झलक है उन प्रयोगों की जिन्हें पूज्य गुरुदेव की कृपा स्वीकृति मिल चुकी है। वे नवरात्रि के अवसर पर आपकी उपस्थिति मात्र से प्रसन्न होकर पता नहीं क्या कुछ लुटा दें। इसकी तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते, क्योंकि वे औघड़दानी शिव के ही स्वरूप हैं। यों भी पूज्य गुरुदेव मौन रहते हुए भी क्या-क्या सूक्ष्म क्रियाएं संपन्न करते है, उनका हम साधारण बुद्धि से भला क्या अनुमान लगा पायेंगे? आपके अज्ञान में आपका वे कितना विष पी जाते हैं इसका तो कोई लेखा-जोखा ही नहीं, तभी तो आप मुरझाए हुए चेहरे भले ही आएं, किन्तु दमकता हुआ मुखमंडल लेकर ही वापिस जाते हैं।

कोई जटिलता नहीं, कोई दबाव नहीं, कोई घुटन नहीं, बस आंखों में सौ-सौ सुनहरे स्वप्न और एक नशा लेकर आ जाना है। इच्छाओं के सौ-सौ फूल मन में खिलने देना है। आगे तो पूज्य गुरुदेव सब संभाल लेने को आतुर ही है।

यह साधारण नौ दिनों की रात्रि नहीं जिसे मात्र माला जपकर अथवा रति जागरण कर बिता दिया जाय, यह तो जीवन में नवरस घोलने के दिन होंगे। आपको अपनी आंखों में सुनहरे रंग लेकर आना होगा, और पूज्य गुरुदेव से मिलकर पूर्णता ले लेनी होगी, इन्हीं दिनों में आपके अंदर का वह अमृत कुण्ड भी पूज्य गुरुदेव खोलेंगे जो अन्य किसी गुरु के बस की बात ही नहीं।

आपको कुण्डलिनी जागरण के उन आयामों के स्पर्श करायेंगे और आनन्द के उस बिन्दु तक ले जायेंगे जो योगियों के लिये भी स्पृहा की वस्तु है।

जीवन में नौ दिन इतना लम्बा समय नहीं है कि आप निकाल न सकें और वह भी अपने प्रिय पूज्य गुरुदेव के लिए, मां भगवती के साहचर्य के लिये और जीवन की सफलता व उच्चता को प्राप्त करने के लिए, आपको यह निमंत्रण पत्र है यद्यपि आत्मीय को निमंत्रण नहीं देना होता। होना तो यह चाहिए कि आपके प्राणों की जो डोर पूज्य गुरुदेव से बंधी है उससे स्वतः ही खिंच कर दौड़े चले आयें, किन्तु आपको फिर भी दस्तक के रूप में यह नेह निमंत्रण, यह बसंत की सुगंध भेज रहा हूं।

सबसे अंतिम दिन वह समारोह होगा जो यद्यपि कष्ट से भरा होगा, वियोग की पीड़ा होगी, अश्रु होंगे और सिसकियां व कातर हृदय होंगे, किन्तु

जीवन के कर्मक्षेत्र में जाना भी एक अनिवार्यता है, एक विवशता है। पूज्य गुरुदेव आपको अपना आशीर्वाद, तपस्या का अंश व सिद्धियों का बल देकर इस अंतिम दिवस को पूर्णता देंगे। आपने नौ दिनों में बीज रूप में कुछ पाया होगा उसका विकास कर सभी की छाया के हेतु बनें, तभी आपका, आपके कुल का गौरव होगा, और आप समस्त विश्व के सामने स्पष्ट कर सकेंगे कि आप किस अद्वितीय अप्रतिम गुरु के शिष्य हैं। यह निश्चित है कि आप इन नौ दिनों को जीवन में कभी भुला नहीं पायेंगे। इस पावन शक्ति पीठ, मधुर साहचर्य की स्मृतियां आपको जीवन भर जहां एक ओर गुदगुदायेंगे वहीं आंसुओं से भी भिगो देंगी।

फार्म नं०-४, नियम-८ देखिए

१. प्रकाशन स्थान-जोधपुर। २. अवधि-मासिक। ३, ४, ५, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक नाम नन्दकिशोर श्रीमाली। क्या भारत का नागरिक है? हां। पता-द्वारा मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर। ६. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी हैं, तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों-डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली, कैलाशचन्द्र श्रीमाली तथा अरविन्द श्रीमाली द्वारा मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

मैं नन्दकिशोर श्रीमाली एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिया गया विवरण सत्य है।

प्रकाशक-नन्दकिशोर श्रीमाली

साबर विशेषांक सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा में रखते हुए पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है।

शीर्षक	पृष्ठ संख्या	सामग्री का नाम	न्यौछावर
साबर उर्वशी मंत्र	१२	साबर उर्वशी यंत्र	१५०
		पीली हकीक माला	११०
	८	हमजाद गोमती चक्र	१००
साबर वशीकरण मंत्र	१८	वशीकरण साबर सिद्ध	१५१
	२०	नुरानी यंत्र	२१०
	२१	क्रीं सिद्ध ताबीज	१२०
कुछ वशीकरण मंत्र	२३	वशीकरण गुटिका	१७५
		वशीकरण माला	३००
	२४	दो हकीक पत्थर	६०
		गोरोचन	२०
		पूर्ण गृहस्थ सुख यंत्र	३२५
		प्रिय आकर्षण गुटिका	१८०
	२५	प्रिया आकर्षण गुटिका	२४०
		हाजिरा पीर चौकी	१९०
	२६	शनि स्लेंग	१६५
		आकर्षण मुद्रिका	१०१
		दो गोमती चक्र	१०२
जैन साहित्य में साबर प्रयोग	२७	गुटिका	१९०
		विजय माला	२७०
		तीन मूंगे के टुकड़े	९०
	२८	आत्मरक्षा गुटिका	२१०
		सफेद आक के गणपति	४१०
	२९	नवग्रह यंत्र	२५१
		विजय यंत्र	३२५
	३०	सरस्वती यंत्र	२१०
		सर्व सौभाग्य यंत्र	१०१
		गर्भ रक्षा यंत्र	३००
		शुक्र गुटिका	१३०
बनजारिन की अनोरवी सिद्धियां	३९	परी सिद्ध यंत्र	१६०
		प्रियंकु माला	३००
	४०	अदृश्य गुटिका	२१०
		हमजाद यंत्र	१९०
		शून्य गुटिका	१२०
		सुलेमान यंत्र	१४१
सौन्दर्य प्राप्ति के प्रयोग	४२	रतिराज गुटका	३००
	४३	सात सौन्दर्य बिहूटी	१४७

	४४	मदकुंभ यंत्र	२९०
		स्फटिक माला	११०
		कामोद्दीप्त यंत्र	१५०
		कामोद्दीप्त गुटिका	१५०
		सौन्दर्य माला	३२०
	४५	दिव्य यंत्र	१५०
		सौन्दर्य यंत्र	१५०
		दो रति गुटिकाएं	१८०
	४६	दो कामदेव गुटिकाएं	२२०
		पारद शिवलिंग	४५०
	४७	इक्कीस लघु नारियल	४४१
		नागमुष्टिक यंत्र	१६०
		फलून	१३०
	४८	एकाक्षी नारियल	३००
		भूगर्भ यंत्र	१२०
बीमारियां आपकी : चिकित्सा साबर की	४९	रोगमुक्ति यंत्र	२४०
	५०	नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५०
		रुद्राक्ष माला	३००
		कामदेव हेत्वा	१११
		रति गुटिका	९०
	५१	दिव्य यंत्र	१५०
		शिशु रोग निवारण यंत्र	२१०
		मूंगा माला	११०
	५२	दक्षिणावर्ती शंख	३००
वह मंत्र	५३	पांच सिद्ध हकीक	१०५
		सात लघु नरियल	१४७
	५४	चोरु ताबीज	९०
		हनुमान चौकी	१२०
		लील हकीक	६०
दो आत्माओं का मिलन	५६	कामदेव हेत्वा गुटिका	१८०
		सर्वबाधा निवारण मुद्रिका	९०
	५७	रति प्रिया गुटिका	१२०

- आप एक पत्र में हमें लिख भेजें, कि आपको क्या सामग्री चाहिए, हम वह सामग्री वी.पी. से सुरक्षित रूप से आपको हाथों में पहुंचा देंगे।

- चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

- ड्रॉफ्ट किसी बैंक का हो, वह "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन-०२९१-३२२०९

प्रकाशक एवं मुद्रक : कैलाश चन्द्र श्रीमाली मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के लिये ताज प्रेस ए०-35/4 माया पुरी नई दिल्ली

लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

एक अद्वितीय पुस्तक

जिसमें जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति की गोपनीय विधियां संग्रहित हैं।

- एक ऐसा ग्रंथ : जो आपके गृहस्थ जीवन की समस्याएं सुलझाने में सहायक हैं।
- एक ऐसा ग्रंथ : जो लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित साधनाओं से परिपूर्ण है।
- एक ऐसा ग्रंथ : जो सरल होते हुए भी महत्वपूर्ण है ऐसी साधनाएं जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से सम्पन्न कर लाभ उठा सकता है।
- एक ऐसा ग्रंथ : जो कर्जा उतारने एवं दरिद्रता मिटाने में पूर्ण रूप से सहायक है।
- एक ऐसा ग्रंथ : जो आपके लिए, आपके परिवार के लिए, और आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए पूर्ण रूप से मार्गदर्शक एवं सहायक है।

दुर्लभ प्रयोगों से परिपूर्ण

लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

एक साधनात्मक श्रेष्ठ ग्रंथ

जिसे पूज्य

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

ने आपके लिए प्रस्तुत किया है

पृष्ठ--९२

मूल्य ३५/- रु.

प्राप्ति स्थान :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी

जोधपुर-३४२००१ (राज.)

टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

एजेंट बन्धु सम्पर्क स्थापित करें।

३५३०५/८१
पोस्टल एल. आर. जे. : ३६६७/८६-८७